संचालन कैसे करें

लेखक :
इकराम राजस्थानी

समर्पण...

मां
लतीफन बेगम, को
जिसने बोलना सिखाया।
वालिद
मास्टर अलाउद्दीन को,
जिनसे ज्ञान हासिल किया।
और
उन तमाम जाने अनजाने
स्वरों को
जिन्होंने मुझमें
शब्दशक्ति, संयोजन,
संचालन का कौशल
पैदा कर,
इस स्थान तक पहुँचाया।

विषय सूची

मैं क्या बोलूँ...

जबसे पैदा हुआ हूँ तबसे शब्द-स्वर और संगीत के वातावरण में ही अपने आपको खड़ा पाया है। बचपन में अपने वालिद मास्टर अलाउद्दीन साहेब के साथ संगीत कार्यक्रमों में भाग लेने लगा। उनकी शक्ति और साहित्य की क्षमता इतनी विलक्षण थी कि मुझे आज तक इस बात पर गर्व होता है। हर शब्द को गहराई से समझना, फिर उसी से संबंधित दूसरे शब्द या कविता शेर, दूसरी भाषाओं के, उनके साथ उपयोग में लाना एक अद्‌भुत कौशल की बात थी उनके अंदर वे हिन्दी, राजस्थानी, उर्दू, और फ़ारसी के जो शेर पढ़ते थे वो सब आज भी मुझे कंठस्थ याद हैं।

बल्कि यूं कहूं कि आज जो मैं इतना सफल और सिद्धहस्त कार्यक्रम संचालक माना जाता हूँ ये सब मैंने उन्हीं से प्राप्त किया है। उनकी खिदमत का सिला ही मुझे ये मिला है।

खुद से चलकर नहीं ये तर्जे सुखन आया है
पांव दाबे है बुजुर्गों के तो फ़न आया है।

मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि ये मेरी माँ की दुआओं का भी असर है जो आज मैं इत मकाम तक पहुँचा हूँ।

ये किताब मेरी जिदंगी के पचास वर्षों का अनुभव है। मैंने कोशिश की है कि उन सब बातों को आपके साथ बाँटूं। मैं जानता हूँ शब्द कौशल की आज बड़ी आवश्यकता है। हर देश में इसकी आवश्यकता है। इसलिए मैंने कोशिश की है कि लोग इस कला को सीखें जो घर, समाज, रेडियो टीवी मंच, फिल्म, और बाजार तक में बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

मैं अपने तमाम दोस्तों का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जिन्होंने मुझे ये पुस्तक लिखने में अपना सहयोग दिया। इनमें रेड़ियो, टीवी, मंच और फिल्मों के सभी दोस्त शामिल हैं।

प्रसारण गौरव श्री गोपालदास का खास तौर से आभारी हूँ जो इस राष्ट्र की जानी मानी हस्ती हैं और मेरा उत्साह बढ़ाते रहते हैं। उन्होंने कहा, पुस्तक का शीर्षक रखो "इकराम का है अंदाज़े बयां" और उनके इस स्नेह के लिए हृदय से आभार। पत्नी जमीला बानो, बेटे शाहिद माजिर, खालिद, फिरोज बेटी-नसीमा

और चूंकि बोलने का मामला है इसलिए कुछ बच्चे भी मुझे प्रेरित करते रहे, अपनी तुतलाती मीठी जुबान से जिनकी बोली दुनियां की सबसे खूबसूरत बोली मानी जाती है उनको भी पुस्तक में अंकित करूँगा, अरमान, आरज़ू, हीना, जुनैद और आमिर सबका मेरी तरफ से शुक्रिया।

ये किताब आपके लिए काम की साबित हो, जो बोलना जानते हैं उनके बोलने में निखार आए, नहीं जानते हैं वो बोलना सीख जाएं और अपनी प्रतिभा के बल पर इस संसार में संचालक कला में अपना नाम कमायें, यश अर्जित करें, व्यवसायिक सफलता हासिल करें ऐसी मैं दुआ करता हूँ और ये गुजारिश भी करता हूँ कि जब कभी कहीं आप कुछ बोले तो मेरा जिक्र भी अवश्य कर दें इससे आपकी सफलता और बढ़ेगी।

इकराम राजस्थानी
डी. 36 – संजय नगर
हा.बो. शास्त्री नगर जयपुर – 16

पुस्तक के बारे में - पुस्तक बोले

आप अगर इजाजत दें तो मैं बोलूँ! जी मैं पुस्तक ही बोल रही हूँ। वही पुस्तक जिसका आप शीर्षक देख रहे हैं, कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर नज़र डाल रहे हैं या फिर पन्ने पलट कर, उसके ऊपर के मोटे शीर्षक पढ़कर अंदर क्या-क्या होगा ये सोच रहे हैं। बिल्कुल ठीक सोचा है आपने,

आदमी पहचाना जाता है कयाफ़ा देखकर
खत का मजमूं भांप लेते हैं लिफाफा देखकर

आपने भी मेरे बारे में अपने मन में कोई न कोई धारणा तो अवश्य ही बना ली होगी। लेकिन यूँ कोरी धारणा बनाने से काम नहीं चलेगा, मेरे अंदर जो लिखा है उसे पढ़ेंगे तो निश्चित रूप से प्रगति की सीढ़ियाँ चढ़ेंगे। मेरे अंदर इस लेखक ने जो लिखा है वो समझ लीजिए, पूरी जिंदगी का निचोड़ है। मेरे ये सारे अध्याय इसलिए भी दिल को छुएंगे, सारे शब्द दिल से निकले हैं और ये तो आप भी जानते हैं-"बात जो दिल से निकलती है असर रखती है।"

आप जरा ये तो बताइये आप क्या करते हैं? मेरा मतलब है आप पेशा क्या करते हैं। टीचर हैं, प्रोफेसर हैं, डाक्टर हैं, हकीम हैं, वैद्य हैं, नेता हैं, अभिनेता हैं, समाज सुधारक हैं या किसी धर्म के प्रचारक हैं आप जो भी हैं- मेरा प्रभाव बड़ा व्यापक है। सब्जी बेचने वाले भी शब्दों का सहारा लेते हैं, तो नेता भी जनता को शब्द जाल में फंसाकर वोट बटोर लेता है, अभिनेता भी शब्दों के कौशल से दर्शकों को हंसाता है रूलाता है तो फिर आप ही क्यों पीछे रहे। शब्दों की सारी धरोहर आपके हाथ में है, इसे ले जाइये अपने घर और फिर करिये साधना सरस्वती की, आप स्वयं ही महसूस करेंगे कि ये कौनसा चमत्कारी-वशीकरण मंत्र आपने सिद्ध कर लिया है। लोग तंत्र विज्ञान-मंत्र विज्ञान की बात करते हैं मैं तो आपको शब्दों के इस महाकुंभ में आमंत्रित कर रही हूँ।

आप चौंकिए मत ये मैं ही बोल रही हूँ- किताब जब बोलती है तो फिर ज्ञान की परत दर परत खोलती है। बस आप ज्यादा सोचिए मत, मैं किताब नहीं हूँ कामियाबी की कुंजी हूँ। यश की धरोहर हूँ। लेकिन मुझे समझेगा वही जो शब्दों का साधक होगा, भावनाओं का उपासक होगा। किताब नहीं मैं शब्दों की वो बागडोर हूँ जिसे अब आप संभालने वाले हैं। शब्दों के सिंहासन पर बैठकर

जब आप कला का कौशल दिखायेंगे तो संसार आपके कदम चूमेगा। अब अधिक नहीं कहूँगी, कुछ आप पर भी छोड़ रही हूँ। मेरे पृष्ठों पर प्रगति के चिन्ह अंकित हैं, मेरे शब्दों में साधना की स्वर लहरी समाई हुई है, मेरा हर अक्षर आपको बुलंदियों का आभास देगा- तो बस मेरा ये बोलना सार्थक कर दीजिए। जो कुछ मुझमें है वो अपने आप में समाहित कर लीजिए। जब आप मेरे लेखक की भावनाओं की साकार प्रतिभा बन जायेंगे तो मुझमें, आपमें, और लेखक में कोई अंतर नहीं रहेगा।

जब इल्म मुझसे लेंगे तो किताब बन जायेंगे,
अल्फ़ाज का सलोना सा इक ख्वाब बन जायेंगे।

एनंकरिंग एक शिल्प

'शब्द' को ब्रह्म माना गया है यानी शब्द से ही ये सारा संसार बनाया गया है और एक दिन शब्द से ही सब कुछ नष्ट हो जायेगा। कहने का मतलब ये है कि शब्द से ही हमारा वजूद है और इसी में सब कुछ समाया गया है।

इन शब्दों को जब कोई जादुई सांचे में ढालकर पेश करता है तो लगता है जैसे किसी ने अंदर तक हमारी रूह को छुआ है और जब कोई चीज हमारी आत्मा तक को झकझोरने की शक्ति रखती है तो वो तो इस पूरी कायनात में सबसे उत्तम उपलब्धि के रूप में समझी जानी चाहिए।

ध्वनि और शब्द दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। दुनियां में बालक जब जन्म लेता है तो उसके रोने की आवाज़ ही उसके अस्तित्व का प्रतीक बन जाती है और आगे जाकर इसी आवाज़ में जब शब्दों का संसार बुना जाता है तो उसमें भावनाओं का सागर हिलोरें मारने लगता है। हर शब्द के अंदर हजारों भाव छिपे होते हैं। और इन्हीं भावों को जब कोई गहराई से उकेरता है तो वो बन जाता है 'शब्द शिल्पी'। शब्दों की ये जादूगरी सदियों से संसार में अपने चमत्कार दिखाती आई है और आज इस युग में शब्दों के इस आसमान पर बहुत से शब्दों के इस आसमान पर बहुत से शब्दों के जादूगर सितारों की तरह चमक रहे हैं। आवाज़ की ये खूबसूरती और अंदाज जब लोगों के सर पर जादू की तरह चढ़कर बोलता है तो लाखों करोड़ों दिल अपने आप धड़कने लगते हैं। बस ये आवाज़ का अंदाज़ ही एक आदमी को दूसरे आदमी से अलग करके किसी ऊँचाई पर पेश करता है।

''तेरी आवाज़ सुनकर, हमने दुनियां छोड़ दी सारी
छिपे हो तुम कहाँ, अब हम तुम्हें आवाज़ देते हैं''

ये अंदाज बयां जिन्नके पास होता है ये सारी दुनियां उनकी दीवानी बन जाती है।

अब सवाल ये है कि ये 'बोलना' क्या है। बोलने को या 'बात' करने को आप इतना आसान न समझें।

बोलिए तो तब, जब बोलने की सुधि होय,
सभा मांही बोले तो विचार कर बोलिए।

सोच समझकर, विचार करके, मनन और मंथन के बाद जो बोला जाता है बस वो ही शब्द शिल्प में शुमार हो जाता है।

बात करना एक ऐसी कला है जो चाहते तो सब हैं मगर आती है किसी-किसी को।

बात करनी मुझे मुशकिल
कभी ऐसी तो न थी
जैसी अब है तेरी महफिल
कभी ऐसी तो न थी।

किसी भी सभा, महफ़िल, मंच पर जब आप अच्छे वक्ताओं को सुनते हैं तो बरबस ही आपका मन उनकी तरफ खिंचने लगता है। जो लोग दस मिनट का समय निकालकर वहाँ पहुँचते हैं तो तीन चार घंटे तक वहाँ से उठने का नाम नहीं लेते। क्या वजह है इसकी? आप स्तब्ध, मंत्र मुग्ध होकर वहां बैठे रहते हैं जैसे चिपक गए हों। ये शब्दों का जादू है, आवाज़ का आकर्षण है। जो लोग इस कला के पारंगत होते हैं उनके साथ ज़माना दौड़ने लगता है। तो ये बात सिद्ध हो रही है शब्दों का शिल्प-हर एक के बसकी बात नहीं है और ये कला संसार का सबसे बड़ा आकर्षण है।

आवाज़ आपके व्यक्तित्व की पहचान होती है। आपके बोलते ही आपका सारा किरदार झलकने लगता है। जबान खोलते ही शरीर के एक-एक हिस्से की खूबसूरती का अहसास होने लगता है।

भले बुरे सब एक से जब लौ बोलत नांय
जान परत हैं काक-पिक-ऋतु बसंत के मांय''

अब आप देख लीजिए आपके मुंह से निकला हुआ शब्द ही आपका असली परिचय होता है।

कौवे और कोयल का फर्क उनके बोलने से ही पता चलता है।

''बेवकूफ आदमी अपनी बेवकूफी को चुप रहकर छुपाता है और बुद्धिमान अपनी प्रतिभा का परिचय बोलकर देते हैं।

इसलिए जब भी बोलें सोच सोचकर समझ समझकर, एक-एक शब्द को तोल -तोल कर बोलें क्योंकि बोली एक अनमोल रत्न है इसे व्यर्थ में मत गंवाइये।

बोली एक अमोल है जो कोई बोले जानि
हिये तराजू तोलके तब मुख बाहर आनि।

जो शब्दों की सामर्थ्य और सार्थकता को पहचान गए बस वो ही लोग संसार

के सबसे सफल व्यक्तियों में गिने जाते हैं। कौनसी बात कब, कहाँ, कैसे और क्यों कही जायेगी ये गुर जिस इंसान ने समझ लिया वो लोगों के दिलों पर राज कर सकता है। बस बात का तरीका आपको आना चाहिए।

ज्यों केले के पात में पात-पात में पात
त्यों गुनि जन की बात में, बात-बात में बात।

बात में से बात निकालकर बात को आगे बढ़ा देना ही बात करने की कला है। बातचीत के बीच-बीच में अच्छी बातों की चाशनी देकर उसे और मीठा बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

जिस बात की बातें होती हैं
उस बात की कोई बात नहीं,
जिस बात की कोई बात नहीं,
उस बात की बातें होती हैं।

शब्दों का ये जादुई संसार रचकर व्यक्ति लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच सकता है। राजनेता हों या संत, इमाम हों या महंत, वकील, डॉक्टर, अध्यापक, इंजिनियर, या जो भी हमे सबको ये बोलने की कला ही आगे लेकर जाती है, सब्जी बेचने वाले से लेकर मार्केटिंग डाइरेक्टर तक इस कला के माहिर होते हैं अच्छा बोलने वाले के चने बिक सकते हैं खराब बोलने वाले के स्वादिष्ट पकवान धरे रह जाते हैं।

कोमल सरस बोलने वाले लोग दुश्मन को भी अपना बना लेते हैं और कठोर बोलने वाले लोग अपने मित्रों को भी अपना शत्रु बना लेते हैं। बोलना तो एक 'वंशीकरण मंत्र' है;

जिसने इसे साध लिया, समझ लीजिए उसने सारा ज़माना अपना बना लिया।

"वशीकरण एक मंत्र है
तज दे वचन कठोर
तुलसी मीठे वचन से
सुख उपजे चहुं-ओर"

ये दुनियाँ आपकी मुट्ठी में आ सकती है बशर्ते कि आपके पास शब्दों का संयोजन और उसका शिल्प है। जिस तरह मूर्तिकार अपनी हथौड़ी और छैनी से एक सुंदर साकार प्रतिमा तैयार करता है आप भी अपनी शब्दों की छैनी से भावों की एक साकार प्रतिमा तैयार करते हैं।

शब्द आपकी शक्ति है, इसका उपयोग अगर आपको आ जाए।

शब्द जादुई छड़ी है, जहाँ घुमा दी जाती है श्रोता और दर्शक जैसे बंध जाते हैं। जैसे एक जादूगर अपने जादू से वही दिखाता है जो वो दिखाना चाहता है। आप भी लफ्जों के फ़न से वही सुना सकते हैं जो आप सुनाना चाहते हैं।

आपका पहला परिचय आपके द्वारा बोले गए शब्द ही देते हैं। बोलने से ही भले बुरे का अंतर का पता चलता है।

**''कागा किसका धन हरे, कोयल किसको देत
तुलसी मीठे वचन से, जग सुपनो कर लेत।''**

शब्दों के सागर में गोते लगाएंगें तो मांग के मोती ढूँढ़ कर लाएंगे जिनसे आप संसार का सारा यश और वैभव खरीद सकते हैं। जो मेहनत और लगन से जुट जाएंगे तो सफलता आपके चरण चूमेगी। आपने सुना है न ''जिन खोजा-तिन पाइयां गहरे पानी पैंठ''।

कौन बन सकता है अच्छा

एंकर तो सब बनना चाहते हैं। सबके मन में आती है कि वो तमाम लोगों में एक स्टार की तरह नज़र आए! जब वो बोले तो सबकी आँखें बस उन्हीं पर टिक जाए। हर व्यक्ति के कानों में बस उसी की वाणी गूंजती रहे। सब उसे मंत्र मुग्ध होकर सुनते रहें लेकिन हम में से कितने लोग ऐसे हैं जो ये अरमान पूरा कर पाते हैं जिनकी ये तमन्ना पूरी हो जाती है, शायद, मुश्किल से पाँच प्रतिशत लोग उस बुलंदी को छू पाते हैं जहाँ से लोग अपनी गर्दन ऊँची किये हुए, उन्हें सुनने को बेताब रहते हैं।

रेडियो हो, चाहे टी.वी. या फिर खुला जनता का स्टेज, अच्छे वक्ता, प्रभावशाली बोलने वाले लाखों करोड़ों लोगों में भी अलग ही दिखाई देते हैं, उनकी आवाज़ दिलो दिमाग पर छा जाती है, उनके शब्दों का कमाल पूरे समाज में दिखाई देता है, उनके बोलने का जादू, लोगों के सर पर चढ़कर बोलता है। उन्हें सुनने के लिए लोग टी.वी. पर अपनी आँखें गड़ाए बैठे रहते हैं, रेडियो पर कान चिपकाए रहते हैं और स्टेज पर उन्हें सुनने मीलों दूर से दौड़े चले आते हैं। रेडियो पर अमीन सयानी की आवाज़ जब गूँजती है तो लोग सारे काम काज छोड़कर रेडियोसेट्स के करीब आकर बैठ जाते हैं। अमिताभ बच्चन जब कंपियरिंग करते हैं तो जैसे दर्शक दिल की सांसें थाम कर उन्हें सुनते हैं। शेखर-सुमन हंसाते-हंसाते लोट-पोट कर देता है, हरीश भियानी- जैसे समय की टक -टक जानकर महाभारत वापस करते हैं तो, तबस्सुम की अपनी एक अदा है अपना एक अंदाज़ है। दिल चाहता है इन लोगों को बस सुनते जाएँ, सुनते जाए ऐसा क्यों होता है? ये सब एंकर हमें अच्छे क्यों लगते हैं? इनके बोलने की अदाएं हमें क्यों भाती हैं? आप भी कभी-कभी सोचते होंगे, काश! हम भी ऐसा ही बोल पाते! हम भी देश विदेश में बोलने के बल पर हमारी पहचान कर पाते। हमारे बोलने का बोलबाला भी इसी तरह होता, जैसा इन मशहूर कलाकारों का हो रहा है। तो जनाब, दुनियां में कोई चीज़ मुश्किल नहीं है। आप भी इसी तरह का कमाल अपने अंदर पैदा कर सकते हैं। ऐसा कमाल का एंकर बनने के लिए उसमें बहुत सी खूबियां होनी चाहिए। सबसे पहले तो किसी भी एंकर को अपने शब्द कोश पर ध्यान देना

चाहिए। उसके पास शब्दों का अथाह भंडार होना चाहिए। अगर बोलते समय उसे सोचना पड़े तो निश्चित रूप से ये उसके शब्दों के अभाव की तरफ हमारा ध्यान खींचवाते हैं। अगर शब्द अपार है तो फिर वह धाराप्रवाह बोलेगा जो किसी भी एंकर या कार्यक्रम संचालक की सबसे बड़ी विशेषता है।

अब प्रश्न ये है कि शब्द भंडार को कैसे बढ़ाएं, तो इसके लिए आपको पढ़ने की प्रवृत्ति पर बल देना होगा। आप जितनी पुस्तकें पढेंगे, उतना ही आपका ज्ञान बढ़ता जाएगा। आजकल पढ़ने का शौक कुछ कम हो गया है लेकिन एंकर के लिए ये सबसे पहली शर्त है कि वो जितना हो सके, पढ़े। जब आप पढ़ेंगे तो कार्यक्रम प्रस्तुत करते समय स्वत: ही आपके मस्तिष्क में वो भाव आने लगेंगे, जो आपको कहने हैं- आपने जो कुछ पढ़ा है वो अपने दिमाग के कंप्यूटर में कैद कर लिया है। अब जब भी आवश्यकता होगी वो ही विन्डो खोल लीजिए, जिसकी आपको जरूरत है। फिर देखिए आपकी हर बात में से एक नई बात कैसे निकलकर आती है और किसी तरह आप दर्शकों, श्रोताओं को चकित, मोहित और मंत्र मुग्ध करते हैं-फिर ये दोहा अपने आप ही सत्य सिद्ध होगा-

''ज्ञानी के मुख से झरे, सदा ज्ञान की बात,
हर इक पांखरी फूल, खुशबू की सौगात।''

फिर लोग आपको सुनने के लिए भी बेकरार होगे-आप जो बोलेंगे उसे पीछे की पंक्ति में बैठे कई युवक युवतियाँ अपनी नोट बुक में नोट करेंगे। और हो सकता है जब आपके इर्द-गिर्द भी आपके आटोग्राफ लेने वालों की भीड़ जमा हो जाए। आपकी सफलता के उस शिखर पर पहुँच जाए जहाँ पहुँचने का स्वप्न हर युवक-युवती में होता है। फिर शायद आपके लिए भी ये कहा जाए-

नहीं अहले सुखन की लब कुशाई, फैज़ से खाली,
सदफ़ का दहन खुलता है तो बस मोती निकलते हैं

बस जरूरत है आपके अंदर एक बेहतरीन लगन और जुनून की हद तक शौक की। फिर आपको इस क्षेत्र में आने से दुनियां की कोई ताकत नहीं रोक सकती। हम आपको कुछ बातें बताते हैं जिन्हें अगर आप गंभीरता से जीवन में अपनातें हो तो फिर आप एक अच्छे वक्ता, प्रभावशाली एंकर, अनोखे कंपियर और कामियाब अनांउंसर हो सकते हैं।

एक आलराउंडर एंकर वो होता है जो कार्यक्रम में अपने शब्दों के चौके छक्के लगाकर उसे अपनी तरफ से बेहद रोचक बना देता है। एंकर, किसी भी कार्यक्रम में एक कप्तान की भूमिका अदा करता है, चाहे वो रेडियो प्रोग्राम हो,

टी.वी. का कोई प्रोग्राम हो या फिर मंच पर, संगीत सभा, बैरायटी प्रोग्राम, कवि सम्मेलन, मुशायरा कुछ भी हो।

जिस तरह एक कप्तान, जहाज या ऐरोप्लेन को अपनी मंजिल तक पहुँचाता है उसी तरह एक एंकर भी बहुत खूबी के साथ प्रोग्राम को उसकी कामियाबी तक पहुँचा देता है। कई बार बहुत अच्छे कार्यक्रम एक खराब एंकर के कारण फ्लॉप हो जाते हैं।

कलाकारों, कवियों शायरों पर मंच पर तो जूते अंडे तक की बारिश हो जाती है लेकिन इसके विपरीत कई बार बहुत खराब प्रोग्राम भी अच्छे एंकर की वजह से कामियाबी की मंजिल तक पहुँच जाते हैं। श्रोताओं, दर्शकों और कलाकारों के बीच एंकर एक सेतुबंध का कार्य करता है। अगर पुल मजबूत है तो उस पर से बड़ी से बड़ी गाड़ियाँ भी गुजर जाएंगी तो उसका बाल भी बांका नहीं होगा, और अगर पुल ही बेकार और कमजोर है तो कार्यक्रम की गाड़ी कभी भी धड़धड़ाकर गिर जायेगी। एंकर का काम बहुत जिम्मेदारी का काम होता है। उसे कार्यक्रम को अपनी प्रतिभा और शब्द शिल्प के जरिए इस तरह आगे लेकर जाना होता है कि सुनने या देखने वालों को समय बीतने का अहसास तक नहीं होता है और लोग उसकी चटखारेदार जबान और सहज सरल शब्दों के जादू में ऐसे खो जाते हैं कि इन्हें कार्यक्रम के समाप्त होने तक का पता नहीं चल पाता है।

दर्शकों और श्रोताओं को बांधे रखने के लिए आपका चेहरा भी महत्त्वपूर्ण रोल अदा करता है। आपने सुना होगा, चेहरा दिल की किताब होता है। यानी एक एंकर का चेहरा सदा मधुर मुस्कान लिए होना चाहिए। जब भी आप बोले। मुस्कुराते हुए रहे। आपके चेहरे पर अगर तनाव की रेखाएं होंगी तो दर्शक या श्रोता आपकी बात को इतनी तन्मयता से नहीं सुनेंगे।

लेकिन हाँ, इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि आप कहीं बात-बात पर अधिक तो नहीं मुस्कुरा रहे हैं। यानी मुस्कान को भी संयमित संतुलित रखना है। अधिकता हर चीज की बुरी है इसलिए मुस्कुराहट भी एक सीमा तक रखें वरना मुस्कुराहट भी मुसीबत बन सकती है।

बोलते समय आपको थोड़ा सोबर यानी गंभीर भी रहना है आपके बोलने से एक सौम्य भाव भी उजागर होना चाहिए यानी मुस्कान के साथ-साथ सौम्यता का दामन भी नहीं छोड़ना चाहिए। कहने का मतलब ये कि बोलने वाले के मुंह से फूल से झरने लगते हैं जब वो अपने आत्मविश्वास के साथ एंकरिंग करता है।

एक सबसे बड़ी खूबी तो एंकर में होनी चाहिए, वो है उसका अपना आत्मविश्वास। उसे अपने आप पर बेहद यकीन होना चाहिए। रेडियो में माइक

के सामने, टी.वी. पर कैमरे के फोकस के सामने, या हजारों लाखों की भीड़ के सामने अगर आपके चेहरे पर घबराहट का पसीना है, अगर दिल की धड़कने बेकाबू हैं, अगर पैर लड़खड़ा रहे हैं तो फिर आप एक अच्छे और कामियाब संचालक नहीं हो सकते। आपके चेहरे पर मुस्कान, दिल में दृढ़ इरादा, लेकर जब आप अपना कार्यक्रम शुरू करेगे तो शब्द अपने आप ही आप जबान पर आकर बयान होने लगेंगे, अगर आप जरा भी हिचकिचा गए तो समझिए कार्यक्रम की गाड़ी के वहीं पर ब्रेक लग जाएगा इसलिए याद रखिए।

जो हिचकिचा के रह गया, वो रह गया
इधर जिसने लगाई ऐड़ वो खंदक के पार था।

चलते-चलते आपको ये भी बता दें कि आत्म विश्वास पैदा होता है आपके इल्म से, आपके ज्ञान से और आपके अभ्यास से।

अगर आप बोलने का अभ्यास करते रहेंगे तो शब्दों पर धार लगती रहेगी।

जैसे गाने वाला रियाज करता है, पहलवान कसरत करता है उसी तरह एंकर को भी अपनी बोलने की कला का प्रयास करते रहना चाहिए। अगर आप अभ्यास करेंगे तो आपके आत्म विश्वास में वृद्धि होगी- वो दोहा तो आपने सुना ही होगा

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान,
रसरी आवत जात तें सिल पर होत निसान।

इसलिए एंकरिंग की कला को सदा अपने अभ्यास में रखना चाहिए। जहाँ भी मौका मिले इसका इस्तेमाल करना चाहिए। वरना तो वही होगा जो कहा गया है-

सुरसति के भंडार की बड़ी अपूरब बात,
ज्यों खरचे, त्यों-त्यों बढ़े, बिन खरचे घट जात।

इसलिए जितना हो सके शब्दों को खर्च करते रहना चाहिए-वरना तो फिर सब कुछ भूल जाएंगे और उसके साथ ही खत्म हो जाएगा मन से आत्मविश्वास।

एक अच्छे एंकर का व्यक्तित्व भी प्रभावशाली होना चाहिए और प्रभावशाली होता है व्यक्ति अपने गुणों से, अपनी प्रतिभा से।

पहली बात तो ये है कि रेड़ियो पर तो खैर आवाज़ का मामला है लेकिन टी.वी. और स्टेज पर उसे अपनी वेशभूषा पर पूरा ध्यान रखना चाहिए। लिबास ऐसा हो जो उसे सूट करता हो, उसकी खूबसूरती में चार चांद लगाता हो, रंग विशेष का भी ध्यान रखे, मौसम के ऐतबार से कपड़ों का चयन किया जाना चाहिए। आपकी वेशभूषा, आपके व्यक्तित्व का प्रथम दर्पण होता है। सबसे पहले लोगों

की नज़र आपके लिबास और चाल ढाल पर ही पड़ेगी जब तक आप बोलना शुरू नहीं करते हैं।

आपने अंग्रेजी में कहावत सुनी होगी 'फर्स्ट इंप्रेशन इज़ द लास्ट इंप्रेशन'। इसलिए जब आप मंच पर पहली एंट्री लें तो इतने प्रभावशाली ढंग से लें कि लोग आपको बस देखते ही रह जाएं। ध्यान रखे कि किसी विशेष प्रकार की चाल से आप उपहास का केंद्र बिन्दु न बन जाएं। इसलिए अपने प्रथम प्रभाव को बेहद आकर्षक बनाने का प्रयास करें। इसके बाद बारी आती है, आपके शब्द शिल्प की आपकी आवाज़ का जादू बिखेरने की। सबसे पहले श्रोताओं, दर्शकों का बहुत नफीस और अच्छे अंदाज के साथ अभिवादन कीजिए, जैसे दर्शक श्रोता हो वैसी ही शुरूआत करें, नमस्ते, नमस्कार, हैलो, हाय, सलाम, रामराम, सतश्रीअकाल कुछ भी परिस्थिति के अनुसार कहें।

इतना दिमाग तो आप में होना ही चाहिए कि आप समयानुसार संबोधन करें। अगर गलत संबोधन करेंगे तो फिर दर्शक श्रोता आपको वहीं से उखाड़ना शुरू करेंगे। इसलिए इस बात का पूरा ध्यान रखिए। आप कार्यक्रम का आरंभ, कोई शेर, कविता, या किसी उद्धरण से भी कर सकते हैं मिसाल के तौर पर, अगर आप भक्ति संगीत सभा का आरंभ कर रहे हैं तो कह सकते हैं-

रिद्धि, सिद्धि के देवता, काटो सर्व कलेश,
सर्व प्रथम सुमिरन करे, गौरी पुत्र गणेश।

या मान लीजिए, शादी के अवसर, महिला संगीत को आरंभ आप करते हैं तो कहिए-

सुख सपनों की मधुर मनोहर झड़ियां आई हैं
घड़ियां, गिन गिनकर खुशियों की घड़ियां आई हैं।

मान लीजिए कहीं शास्त्रीय संगीत सभा का आयोजन हो रहा है जिसमें, राग, स्वर, लय की बात हो रही है तो आप आगाज यूँ कर सकते हैं-

तनमद, धन मद, राजमद, विद्यामद है हद्द।
जब उपजत है रागमद तो सभी मद्द है रद्द।

ये हमने कुछ उदाहरण देकर आपको समझाने की कोशिश की है। आप स्वयं भी ऐसा ही कुछ सोच सकते हैं, अपना स्वयं का कुछ बना सकते हैं और फिर कह सकते हैं।

ये हम पहले ही बता चुके हैं कि आप का आरंभ अत्यंत प्रभावशाली होना चाहिए। क्योंकि श्रोता या दर्शक आपके प्रथम प्रभाव को देखकर ही अंत तक

आपके साथ चलेंगे अन्यथा फिर जब आप बोलने आएंगे तो आप पर ध्यान नहीं देंगे, अपने घर परिवार और व्यापार की बातें करने लगेंगे। कुछ लोग आपको हूट भी करेंगे। कुछ बोर हो कर वापस चले जाएंगे, इसलिए एंकर को इन सारी बातों का ध्यान रखना है कि श्रोता या दर्शक कब क्या चाहता है और कैसे उसे बांधे रखा जा सकता है।

एक बात का ध्यान एंकर को और रखना चाहिए उसे बहुत ही सोफ्ट बोलना चाहिए। उसके बोलने के अंदाज में कही कोई कठोरता नहीं होनी चाहिए। शब्दों को जितना कोमलता के साथ इस्तेमाल करेंगे वो उतने ही ज्यादा, लोगों के दिलों को छुएंगे। इसके अलावा एंकर को ये भी ध्यान रखना चाहिए कि वो जिस विषय पर बोल रहा है वो इतना अधिक लंबा और बोरिंग न हो कि लोग उबासियाँ लेने लगे। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बस उतना ही बोले जितना बोलने की जरूरत है। अपनी वाणी पर काबू रखना भी एंकर को आना चाहिए। वैसे भी जो बात हम संक्षेप में कह सकते हैं उसके लिए पूरा निबंध लिखकर पढ़ने की आवश्यकता नहीं है।

एंकर को मृदुभाषी होना चाहिए। उसका बोलना इतना मीठा होना चाहिए कि लोगों को लगे जैसे शब्दों की मिसरी हमारे कानों में घोल रहा है।

एक और बात की तरफ एंकर का ध्यान दिलाना चाहूँगा–उसे हमेशा अपने उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिए। अगर एंकर का उच्चारण अशुद्ध है तो वह एक अच्छा अनाउंसर, कपियर, कमैंटेटर या समाचार वाचक बन ही नहीं सकता है। उच्चारण दोष एंकर के लिए वैसा ही है जैसे एक सजी सजाई दुल्हन, सोलह सिंगार से संवरी हुई, बोलते ही तुतलाने लगे तो उसकी सारी खूबसूरती और सिंगार सब कुछ बेकार हो जाते हैं। ठीक उसी प्रकार अगर एंकर का उच्चारण या तलफ्फुज़ ठीक नहीं है तो फिर वो अच्छे एंकरों की श्रेणी में नहीं आ सकता।

मिसाल के तौर पर एक सज्जन बोले- कल रात बहुत 'ओश' गिरी।

मैंने पूछा- 'ओश' क्या?

तो कहने लगे 'सबनम जी सबनम।'

मैंने माथा ठोक लिया। यानी हिन्दी और उर्दू दोनों का मामला गड़बड़।

संचालन की विविध विधाएँ
(अनाउंसमेंट, कंपेयरिंग, न्यूज़रीडिंग, कमैंट्री)

आपने कभी कोई अनांउसमैंट किया है? आपका जवाब होगा-हाँ। दुनियाँ में हर आदमी कुछ न कुछ अनाउंसमेंट तो करता ही है। आपने अक्सर फिल्मों में देखा होगा, हीरोइन का पिता एक बहुत ही शानदार पार्टी में, जहाँ संगीत की स्वर लहरियाँ बिखर रही हैं, लोग थिरक रहे हैं, झूम रहे हैं नाच रहे हैं। वहीं अचानक एक अनाउंसमेंट माइक पर गूँजता है, हीरोइन का पिता आकर कहता है "लेडीज़ एंड जैंटलमेन, मे आई हेव योर अटैंशन प्लीज़। खामोशी छा जाती है ओर वो कहता है-मैं आज अपनी बेटी सोनिया की सगाई होनहार नौजवान संजय के साथ करने का ऐलान करता हूँ। तालियों की गड़गड़ाहट माहौल में खुशी का रंग भर देती है।

दोस्तों, अनाउंसमेंट भी एक कला है। रेडियो से अक्सर आपने सुना होगा "ये आकशवाणी का दिल्ली केन्द्र है" या फिर जो भी केन्द्र आपने ट्यून किया है वहाँ की उद्घोषणाएँ आपको सुनाई देंगी। अनाउंसर की बहुत ही सधी हुई, मीठी, आवाज़ हमारे कानों में सुख एवं आन्दद की अनुभूति कराती है। अब आप सोच रहे होंगे, ये अनाउंसमेंट कैसे तैयार किये जाते हैं। चलिए हम बताते हैं आपको। अनाउंसमेंट एक ऐसी विधा है जिसमें सीधे सरल ढंग से आप कोई बात कहते हैं और आगे होने वाले कार्यक्रम की सूचना देते हैं। यानी इसमें आपको आवाज को कहीं भी इधर-उधर नहीं करना है बस प्लेन ढंग अनाउंसमेंट माइक पर करना होता है। चाहे रेड़ियो हो, टी.वी. हो या स्टेज। अनाउंसमेंट की विधा, सब जगह एक सी होती है। मिसाल के तौर पर आपको कहना है ये आकाशवाणी का फलां केन्द्र है। अब हम आपको गजलें सुनवा रहे हैं। फ़नकार हैं भूपेंद्र और मीताली सबसे पहले इनकी आवाज़ में सुनिये, इकराम राजस्थानी की गजल। गजल का मतला है।

ऐ मेरे दोस्त, मेरे प्यार की क़िस्मत लिख दे
मेरी तनहाई, किसी रोज़ उसे खत लिख दे।

इस उदाहरण से आपको ये बात अच्छी तरह समझ में आ गई होगी कि अनाउंसमेंट बिल्कुल सीधे सरल ढंग से किये जाते हैं कभी-कभी उसमें परिवर्तन

भी किया जाता है ताकि वो हमेशा एक सी ही बात सुनकर श्रोता बोर न हो जायें।

हम कहेंगे-

"ये आकाशवाणी का जयपुर केन्द्र है।"

"हम आकाशवाणी के जयपुर केन्द्र से बोल रहे हैं।"

"ये कार्यक्रम आपकी सेवा में आकशवाणी के जयपुर केन्द्र से प्रसारित किये जा रहे हैं।"

"ये जयपुर है।" आदि-आदि।

लेकिन उद्घोषणाएं करते समय भी आपको कई बातों पर ध्यान देना बहुत जरूरी है।

सबसे पहले तो आप माइक से अपनी दूरी मात्र 9 इंच रखें। कई लोग माइक के बिल्कुल ठीक सामने ही झुक कर अनाउंसमेंट करते हैं जो गलत है। उनकी अदा से लगता है जैसे माइक को अपने मुंह में ही रख लेंगे। इसलिए हमेशा लगभग 9 इंच से लेकर एक फुट की दूरी पर अपना मुंह रखकर माइक पर अनाउंसमेट करें।

दूसरी प्रमुख बात ये है कि अनाउंसमेंट करते समय आप हिले डुलें बिल्कुल नहीं। अगर बार-बार आप इधर-उधर होंगे तो सेट पर आपकी आवाज का लेवल अलग-अलग सुनाई देगा। कभी बहुत जोर से, कभी बहुत धीरे जो सुनने वालों को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए अनाउंसमेंट करते समय बिल्कुल हिलेडुले नहीं, अवाज़ को कम या ज्यादा अपने पिच पर ही करिए ताकि जिस हद तक ओर जिस तरह आप वो अनाउंसमेंट दर्शकों तक पहुँचाना चाहते हैं आप पहुँचा सकें और आपकी आवाज साफ और स्पष्ट सुनाई दे।

अनाउंसमेंट करने से पहले थोड़ा सुस्ता लें, आराम करलें। कभी भी फूली सांस से या हाँफते हुए उद्घोषणाएं नहीं करनी चाहिए। सुनने वालों को आपकी आवाज में एक सुकून और स्थिरता दिखाई और सुनाई देनी चाहिए आपकी आवाज सुनकर लोग अनाउंसर बनने का खवाब संजोते हैं इसलिए आप इतने अच्छे ढंग से अनाउंसमेंट करने की कोशिश करें कि आप आने वाली पीढ़ी के युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बन जाएं।

अनाउंस एक ऐसा शब्द है जिसे जनसधारण में सबसे ज्यादा बोला, सुना जाता है।

एक अनाउंसर को संगीत-नाटक-भाषा और साहित्य का भी बहुत अच्छा ज्ञान होना चाहिए, ताकि वो उस कार्यक्रम की आत्मा को समझ सके और उसी के अनुसार अपनी उद्घोषणाएँ तैयार कर सके।

अनाउंसमेंट बहुत सीधी सरल भाषा में होने चाहिए। जहाँ तक हो सके बोल चाल की भाषा और शब्दावली का इस्तेमाल करना चाहिए।

आवाज़ के उतार-चढ़ाव का विशेष ध्यान रखना चाहिए। एक ही पिच पर कभी भी अनाउंसमेंट नहीं करना चाहिए।

अनाउंसमेंट खास तौर से लिखकर किये जाते हैं ताकि कार्यक्रम के सारे बिंदुओं का समावेश उनमें किया जा सके। उद्घोषणाएं बनाते समय ध्यान रखिए कि वाक्य छोटे हो अगर लंबे-लंबे वाक्य होंगे तो बोलने में भी दिक्कत आएगी और सामने वाले लोगों को समझने में भी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। हमेशा याद रखिए- अगर अपना कहा, हम खुद ही खुद समझे तो क्या समझे? मज़ा तो तब है जब कि हम कहें और दूसरा समझे।

अनाउंसर के लिए उसकी आवाज़ बिल्कुल साफ होनी चाहिए। शब्दों को शुद्धता के साथ बिल्कुल सधे हुए उच्चारण के साथ बोलने की क्षमता अनाउंसर में होनी चाहिए।

शब्दों का प्रयोग दोहराइये मत हमेशा कोई नया शब्द उपयोग में लाने का प्रयास करें। एक बात और, अगर कोई शब्द जिसका उच्चारण आपको नहीं आता है या जिसके बारे में आप आश्वस्त नहीं हैं उसे छोड़ दीजिए। उसके स्थान पर आपका चिर परिचित शब्द काम में लेंगे तो आपको बहुत सुविधा होगी।

अनाउंसर के लिए एक बात समझना बेहद जरूरी है कि उसे इस बात का पूरा ज्ञान होना चाहिए कि वाक्य को किस तरह पढ़ा जाएगा। कहाँ अंतराल (Pause) देना होगा। कहाँ जाकर उस पर अधिक जोर देना पड़ेगा।

अंतिम वाक्य को समाप्त करने के समय सावधान रहें कि वाक्य का अंतिम शब्द तक बहुत साफ और शुद्ध ढंग से उच्चरित किया गया है।

वाक्यों को समाप्त करने में जल्दबाजी बिल्कुल मत दिखाइये।

वाक्य विन्यास में भी कई सावधानियाँ रखनी चाहिए। मिसाल के तौर पर एक अनाउंसमेंट आपको बताते हैं। आप खुद सोचिए कौनसा गलत है और कौनसा सही **"अब हम आपको गीत सुनवाते हैं फिल्म "आया सावन झूमके" का।"**

अभी आप एक गीत सुन रहे थे, फिल्म थी- आया सावन झूमके। अब आपको अंदाजा हो गया होगा कि अनाउंसमेंट करते समय कभी के का साथ नहीं लगते हैं। यानी पहला अनाउंसमेंट सुनने में बहुत अजीब लगेगा। ठीक भी नहीं लगेगा और दूसरा अनाउंसमेंट बिल्कुल ठीक मालूम होगा।

❖ ❖ ❖

कंपियरिंग : संचालन

अब हम आपको बतायेंगे कि अनाउंसमेंट और कंपियरिंग में मूलरूप से क्या अंतर है। अगर वैसे देखें तो दोनों में कोई खास फर्क मालूम नहीं होता है लेकिन अगर गौर से देखें तो दोनों में जमीन आसमान का अंतर है।

जब कोई आपसे कहे कि इस विषय पर उद्घोषणा करिये कि-महिला जगत् कार्यक्रम में आज बहनें सुनेंगी एक परिचर्चा जिसका विषय है ''फैशन की मारी : नारी बेचारी''। इसमें भाग लेंगी - रीता नाग, शैफाली चौधरी, करिश्मा दत्त और सईदा रफ़ीक।

अनांउसर कहेगा : ''हम आकशवाणी के जयपुर केंद्र से बोल रहे हैं महिला जगत कार्यक्रम में आज बहनें एक परिचर्चा सुनेंगी विषय है ''फैशन की मारी : नारी बेचारी'' भाग ले रही हैं रीता नाग, शैफाली चौधरी, करिश्मा दत्त और सईदा रफ़ीक।''

अब अगर आपसे कहा जाये कि कंपियरिंग करके इस परिचर्चा को आरंभ कराइये तो आप शुरू करेंगे-

नमस्ते बहनों, आपका अपना प्रोग्राम महिला जगत लेकर हम आपकी खिदमत में हाज़िर हैं। इस प्रोग्राम के जरिये हम आपको, आस-पास इधर-उधर यहाँ-वहाँ की जानकारी देते रहते हैं और जब बात समाज के परिवेश की हो रही हो तो हमारा ध्यान आज के दौर में फैलती फैशन पर जरूर जायेगा। हर पल फैशन बदल रहा है और उससे सबसे अधिक प्रभावित होती है आज की नारियाँ। बहनों अगर आप स्वयं फैशन करती हैं तो फिर आप इसके बारे में बखूबी जानती हैं और अगर आपकी कॉलेज जाने वाली बेटी इस फैशन को अपना रही है तो आप उसके हाव-भाव देख दंग जरूर होती होंगी। आज की स्त्री फैशन की पुजारिन हो गई है।

अरे लीजिए मैं आपको फैशन पर इतनी बड़ी-बड़ी बातें बता रही हूँ, मैं तो बताना ही भूल गई थी कि आज बहनें इसी ज्वलंत सवाल पर एक परिचर्चा सुनने जा रही हैं और इसमें भाग लेने के लिए हमारे साथ आज समाज के विभिन्न तबको और व्यवसायों से जुड़ी विषय की जानकार बहनें मौजूद हैं जो इस विषय

पर अपने अपने ख्यालात पेश करेंगी। आज की परिचर्चा का शीर्षक भी बहुत मजेदार है फैशन की मारी : नारी बेचारी और इस परिचर्चा में हिस्सा ले रही हैं ग्रहिणी रीता नाग, पेशे से वकील शैफाली चौधरी, कामियाब डॉक्टर करिश्मा दत्त और कॉलेज की प्रोफेसर सईदा रफ़ीक। तो हम हो जाते हैं अब खामोश और आपको सुनवाते हैं ये परिचर्चा।

तो आपको लगा कि अनाउंसमेंट और कंपियरिंग में कितना बड़ा फर्क है। चलिए अब आपको बता दें कि कंपियर बनने के लिए क्या गुण होने चाहिए।

एक अच्छा कंपियर वो होता है जो विषय को समझकर उस पर उसी से विधिवत बात करने की क्षमता रखता हो। उसके पास शब्दों की कमी तो बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। अगर बातचीत के बीच-बीच में कहावतों और मुहावरों का प्रयोग करे तो रोचकता में चार चांद लग सकते हैं।

अच्छा कंपियर वो होता है जो शब्दों को साफ और शुद्ध उच्चरित करे। कंपियरिंग करते समय अपनी बोलने की रफ्तार को बहुत संयत रखना चाहिए। अगर तेज रफ्तार में बोलेंगे तो शब्द स्पष्ट नहीं सुनाई देंगे और अगर शब्द ही साफ नहीं बोले जायेंगे, तो सामने वाला आपकी बात को क्या खाक समझेगा।

वाक्य निहायत छोटे बनाइये और उनमें भी सरलता के साथ पेश करने की कोशिश करिए। कंपियरिंग करते समय खिचड़ी भाषा का इस्तेमाल मत करिये। याद रखिए कंपियरिंगं की कला सबके बस की बात नहीं है।

अक्सर जो संगीत के कार्यक्रम, मंच, आदि पर होते हैं उनमें आप कंपियरिंग ही सुनते हैं। वो कंपियरिंग इतनी शानदार होनी चाहिए कि आपको दर्शक श्रोता पहचानें और आपकी बात सुनने को आतुर रहें।

मुझे एक भक्ति संगीत के विशाल कार्यक्रम की याद आ रही है जिसमें मैं कंपियरिंग कर रहा था। सुप्रसिद्ध भजन गायक अनूप जलोटा, उस भक्ति संध्या के मुख्य कलाकार थे। मैंने उसका संचालन इतने प्रभावशाली ढंग से किया कि अनूप जी ने बाजा छोड़कर हजारों की संख्या में भरे जयपुर के रवींद्रमंच ओपन थियेटर में कहा कि "श्रोताओं, भजन गाना अलग चीज़ है लेकिन उसे इस तरह पेश करना बड़ी बात है। मैरा मन करता है कि मैं गायक नहीं गाकर पाँच मिनट तक इकराम जी को सुनता रहूँ।" सारा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। कई दर्शकों ने उठकर मुझे मालाओं से लाद दिया। उस समय मुझे महसूस हुआ कि शब्द कितना शक्तिशाली है।

अब आप ये जानना चाहेंगे, ऐसा प्रभाव कैसे हो सकता है।

मैं कहूँगा, इसके लिए भी आपको साधना की आवश्यकता है। जिस तरह साधू, संत, फकीर ध्यान में मगन हो जाते हैं आपको भी शब्दों के इस अथाह सागर में डुबकी लगानी होगी। कहने का तात्पर्य ये है कि आपके साथ शब्दों के मोतियों का अपार खजाना होना चाहिए। आपके पास हर विषय पर कहने के लिए इतना कुछ होना चाहिए कि मुख्य कलाकार से आप अलग दिखाई दें।

एक अच्छा कंपियर वो होता है जिसके पास तुरंत कुछ नया गढ़ने की क्षमता हो। इसे अंग्रेजी में PRESENCE OF MIND कहते हैं यानी आपकी त्वरित बुद्धि द्वारा आपको ये फैसला करना होता है कि इस समय क्या करना अच्छा होगा। मैं एक वेरायटी रंगारंग कार्यक्रम का संचालन कर रहा था- लोग झूम रहे थे, गज़लों का कोई प्रोग्राम चल रहा था, अचानक दर्शकों में से कोई खूबसूरत महिला अपनी फरमाइश की चिट देने मेरी तरफ आई। उनकी गोद में उनका प्यारा सा पालतू कुत्ते का PET था। मैंने फौरन कहा-

**''ज़ाख़ की चौंच में अंगूर खुदा की कुदरत
हूर की गोद में लंगूर खुदा की कुदरत।''**

इतना कहना था कि लोग हंसते हंसते लोट पोट हो गए। उन्होंने कहकहों से आसमान सर पर उठा लिया। वो मोहतरमा तो शर्म से पानी-पानी हो गई।

अब इससे ये मालूम हुआ कि आपने सही वक्त पर सही बात कह दी और वो असर कर गई। इसका अर्थ ये हुआ कि कंपियर की याददाश्त, स्मरण शक्ति भी बहुत अच्छी होनी चाहिए। स्टेज पर कोई भी बात कभी भी हो सकती है। अगर आप उपयुक्त ढंग से बात नहीं कर पाते तो ये आपकी असफलता है। आप कुछ कहने की कोशिश कर रहे हैं और बात याद ही नहीं आ रही है, इतनी देर में तो पब्लिक हट कर देगी, हो सकता है एक दो पत्थर भी आप पर आ जाए। जनता के पास इतनी फुर्सत नहीं होती है कि वो आपकी बात याद आने तक आपका इंतजार करेगी। यानी समय पर अगर बात आप नहीं कह सकते तो समझिए सब कुछ बेकार। कंपियर वो जो सही वक्त पर सही बात कहता है।

अब ये तो बताने की जरूरत ही नहीं रही कि कंपियर को बहुत पढ़ना चाहिए। हर बात को दिमाग में कैद रखना चाहिए और समय आते ही ठीक उसी तरह बात को बाहर निकालना चाहिए जैसे सही समय पर तरकश से तीर निकलता है। कंपियर के पास भी शब्दों के तीर ही तो होते हैं जिनसे वो सुनने वालों का कलेजा बड़े ही प्यार के साथ छलनी करता रहता है और श्रोता उसकी बातों के जादू में बंधे हुए उसके साथ रस में सराबोर होते रहते हैं। उसे हर रस में बात करना आना चाहिए।

उदयपुर के लोक कलामंडल में जैन साध्वी मणि प्रभा जी का विहार हो रहा था। वो अपना चातुर्मास समाप्त कर वहाँ से प्रस्थान कर रही थी। उस कार्यक्रम का संचालन करने के लिए मुझे आमंत्रित किया था। मैंने कहा-

तात मिले पुनि मात मिले, सुत भ्रात मिले
ऐते सुख दाई।
राज मिले, गजबाज मिले, सब साज मिले
मन इंछित पाई।
लोकमिले विधिलोक मिले, देव लोक मिले
बैकुंठ पठाई।
सब कुछ ही मिल जाये, जगत में, संत समागम,
दुर्लभ भाई।

संतों की महत्ता के बाद, मैंने कहा कि आज साध्वी जी अपने भक्तों को, प्रियजनों को छोड़कर जा रही हैं। वे इस विदाई के क्षण को सहन नहीं कर पा रहे हैं। लेकिन साध्वी जी कभी हमसे दूर जा ही नहीं सकती। तमाम भक्त जन उनसे आज अपनी आस्था और विश्वास के साथ कह रहे हैं-

बांह छुड़ाके जात हो, निबल जान के मोंहि
हिरदे से जब, जाइहों, तो सबल जानि हो तोहि।

मैंने उस समय अपनी आंखों से देखा, वहाँ मौजूद हर पुरुष, स्त्री, बालक वृद्ध, सबकी आंखों में आँसू झिलमिला रहे थे।

जब मैंने साध्वी श्री जी का परिचय देकर उन्हें आशीर्वाद देने के लिए माइक पर आमंत्रित किया तो जो कुछ उन्होंने कहा, वो शब्द आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं- उन्होंने कहा था, देवियों और सज्जनों, मैं बहुत देर से बैठी हुई इन सज्जन को जो मंच का संचालन कर रहे है, सुन रही हूँ। मैं इन्हें नहीं जानती हूँ। जीवन में पहली बार आज इन्हें सुना है। मुझे साध्वी जीवन में आए 32 साल हो गए हैं लेकिन आज इन सज्जन को सुनने के बाद मुझे लगता है जैसे इनके शब्द मुझे अपनी ओर खींच रहे हैं। साध्वी जी की ये बात सुनकर सारा हॉल स्तब्ध रह गया। हर व्यक्ति मुझे आदर की दृष्टि से निहार रहा था। मुझे लगा जैसे मेरे शब्द मेरी साधना हैं जो आज प्रखरित है।

इसका तात्पर्य ये हुआ कि एक कंपियर या मंच संचालक को हर विषय में पारंगत होना चाहिए।

कंपियर की ये भी एक विशेषता होती है कि वो शब्दों का चयन किस प्रकार

करता है और फिर छोटे से छोटे शब्द से किस तरह एक बड़े से बड़ा काम लेता है।

मुम्बई के किसान पुरस्कार समारोह में मलाड में अस्जी कंपनी के कार्यक्रम में मुझे मेरे मित्र पी.एस. मुर्डिया और किरन भाई पटेल ने बुलाया था। समारोह के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक एम.एस. स्वामीनाथन थे। मैंने कृषि और किसान को लेकर बहुत सी बातें कहीं। हरित क्रान्ति का दीप किस तरह जलाया, ये बताया और कहा कि श्री स्वामीनाथन इस समय हमारे देश में एक जीवंत किंवदंती हैं। जब स्वामी नाथ मंच पर आए तो कहा कि आज के कार्यक्रम संचालक शब्दों के जादूगर हैं। ये हैं वाणी और शब्द की उपलब्धि ये उदाहरण आपके साथ मैं इसलिए बाँटने की कोशिश कर रहा हूँ कि आपको ये महसूस हो कि शब्दों की साधना कैसे की जाती है और वो किस तरह आप को शिखर तक लेकर जाते हैं।

ये तो तय है कि एक अच्छा कंपियर वो माना जाता है जो सभी प्रकार के कार्यक्रमों का संचालन बखूबी कर ले। अमूमन ऐसा होता है, कुछ लोग केवल भक्ति संगीत का कार्यक्रम करते हैं। कुछ कव्वालियों का। कुछ केवल कवि सम्मेलन और कुछ सिर्फ मुशायरा। कुछ लोग कांफ्रेंस और सेमीनार के ही पारंगत होते हैं इसलिए हमारा कहना ये है कि आपको हर प्रकार के कार्यक्रम के लिए तैयार रहना चाहिए। हाँ, इसके लिए आपको तैयारी की बहुत आवश्यकता पड़ सकती है और वो होनी भी चाहिए। बगैर किसी तैयारी के तो आप किसी भी कार्यक्रम का संचालन नहीं कर सकते हैं। इसके लिए आपको चाहिए, जिस तरह का कार्यक्रम हो उसके स्वरूप को समझें, उससे सबंधित साहित्य यदि याद है तो उसके बिंदु किसी कागज पर नोट कर लें ताकि उसका दोहरान हो जाए। उससे सबंधित यदि और भी कोई जानकारी हो तो उसे भी अपने पास रख लें।

विषय से अलग हटकर भी कुछ सामग्री हमेशा अपने पास रख लें क्या पता किस वक्त किस सामग्री की जरूरत पड़ जाये। जहाँ तक हो सके कंपियरिंग कभी लिखकर नहीं करनी चाहिए। हाँ उसके मुख्य बिंदु जरूर लिखकर रख लेने चाहिए। एक बात का ध्यान और रखियेगा। जहाँ तक हो सके, जो बात एक बार कह दी गई हो उसे दुबारा कहने का प्रयास मत करिये वरना तो फिर दुबारा कहने पर वो बात उतना असर नहीं डाल पाएगी और आपके श्रोता दर्शक भी आपसे नाराज़ हो जाएंगे जो आप बिल्कुल भी नहीं चाहेंगे।

मैं अपनी कुछ मिसालें आपके सामने इसलिए रखता चला आ रहा हूँ ताकि आपको ये लगे कि मैंने किस जगह से अपना सफर तय करके अपने इस फन

को किस मकाम तक पहुँचाया है। शायद ये सुनकर आपको अंदाजा हो सके कि संचालन का क्या मकाम है।

सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता निर्देशक श्री के.सी. बोकाड़िया मेरे मित्र भी हैं और मेहरबान भी। उन्होंने अपनी फिल्मों में मेरे गीत भी लिए हैं जो काफी लोकप्रिय हुए हैं। जयपुर में अपनी 'कैसेट कंपनी के उद्घाटन अवसर पर उन्होंने फिल्मी हस्तियों का मेला लगा दिया था। हीरो हीरोइन, निर्माता, निर्देशक संगीतकार गीतकार सभी मौजूद थे और उसी समारोह में मौजूद थे, सुप्रसिद्ध अनाउंसर अमीन स्यानी मेरा संचालन देखकर उन्होंने कहा था, "इकराम साहेब, सही मायने में रेडियो आप जैसे लोगों का है, बोलना क्या होता है ये कोई आपसे सीखे। हम सिर्फ अनाउंसमेंट लिखते हैं और फिर उसे पढ़ते हैं।" ये थी एक शब्द शिल्पी की सराहना जो मुझे आज भी नया बल देती है। एक बिल्कुल ही अलग ढंग का अंतर्राष्ट्रीय समारोह होता है उदयपुर के राजमहलों में। महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन वार्षिक पुरस्कार समारोह जिसे वहाँ के महाराणा श्री जी अरविंद सिंह जी मेवाड़ करते हैं और उसमें राष्ट्र के हर क्षेत्र की प्रतिभाओं को सम्मानित करते हैं। मुझे ये गौरव है कि मैंने इस समारोह का 1988 से लगातार 12 वर्ष तक संचालन किया और अपने शब्दों के घोष से इसे बुलंदी तक पहुँचाया। मुझे एक क्षण याद आ रहा है सुप्रसिद्ध फिल्मी नायक और आज की सियाती हस्ती सुनीलदत्त आए थे मैंने मेवाड़ की महिमा पर कहा–

"हारित ऋषि का फिर से कोई जाप पैदा हो,
स्वतंत्रता की राष्ट्र में फिर छाप पैदा हो,
मेवाड़ की माटी ये मनाती है मनौती,
हर युग में मेरी कोख से प्रताप पैदा हो।"

जब सुनील दत्त माइक पर आए तो बोले, "मुझे समझ में नहीं आ रहा हैं, इकराम साहब जैसी हस्ती के सामने में क्या बोलूँ। हम तो फिल्मी कलाकार हैं, जो डायलोग लिखा होता है बस वो ही पढ़ते हैं। ये तो लिखते ही नहीं बस बोलते हैं।" मुझे आज तक ये शब्द याद हैं, एक महान कलाकार ही शब्दों के इस सामर्थ्य को स्वीकार कर सकता है।

मुझे ये कहते हुए अत्यंत हर्ष होता है कि लोग मुझे वाणीपुत्र कहते हैं और कहते हैं कि मेरे मुँह पर सदा सरस्वती बिराजती है। मुझे भी ये लगता है कि जिस तरह साधू, मुनि महात्मा, योगी और तपस्वियों को सिद्धि प्राप्त होती है शायद मुझे भी वाक् सिद्धि प्राप्त हो गई। मैं जहाँ भी बोलने खड़ा होता हूँ। मुझे तैयारी

नहीं करनी पड़ती है, सोचकर उसे कागज पर लिखने की आवश्यकता नहीं होती है। शब्द स्वत: मेरी जबान पर आकर मुखरित होने लगते हैं और वे अपने भ्रम तक जादू बिखेरने लगते हैं। इसका श्रेय तो मैं सबसे अधिक अपने पिता श्री और मेरे प्रथम गुरु मास्टर अलाउद्दीन साहेब को देना चाहूँगा जिन्होंने मुझे साहित्य-भाषा संगीत और संस्कृति से परिचित कराया और उनके साथ बैठकर ही ये सारा ज्ञान प्राप्त किया। वे कलाकार थे, गायक थे, शिक्षक थे। उनके साहित्य में मैंने जीवन के हर पहलू को समझा है और उसी ज्ञान की धरोहर को मैंने मन मस्तिष्क में संजोया है जिसे आप तक पहुँचा रहा हूँ।

''जला के रख दिया, मैंने दिया हवाओं पर,
मुझे यकीन है, मां-बाप की दुआओं पर।''

मैंने अपनी इस शब्द यात्रा में लाखों कार्यक्रमों का संचालन किया है। कोई भी प्रकार का समारोह हो, मैंने उसे बखूबी अंजाम दिया है। भक्ति संध्या हो, कव्वाली समारोह हो, मुशायरा, कवि सम्मेलन हो, कार्फ्रेंस हो, सेमीनार हो, युवा समारोह हो, साहित्य गोष्टी हो, सब प्रकार के कार्यक्रमों में मैंने शब्दों के जादू को बिखेरने का प्रयास किया है।

देश की जिन महान हास्तियों को मैंने अपने संचालन से प्रभावित किया अभिभूत किया, आनंदित किया, उनमें कई नाम मेरे सामने आज भी मिलते है। डॉ. राही मासूम रज़ा, शबाना आजमी, मेनका गांधी, महेंद्र कपूर, प्रसिद्ध कव्वाल असलम साबरी, प्रसिद्ध गायक शेखर सेन, फिल्म कलाकार गोविंदा, मीनाक्षी शेषाद्रि, चंद्रू आत्मा, गायिका राजकुमारी, प्रसिद्ध पत्रकार सईद नकवी, प्रसिद्ध गायक डागर बंधु, नृत्यांगना, राधा रैड्डी, राजा रैड्डी, शोभना नारायण, अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय गिटार वादक पंडित विश्व मोहन भट्ट, और भी न जाने कितने समाज सेवी, राजनेता कलाकार हैं जो ये कहते हैं कि मैंने शब्द शिल्प से अपना जीवन संवारा है और उसे एक निश्चित स्थान मंच पर और समाज में दिया है।

न्यूजरीडिंग : समाचार वाचन

संचालन की अनेकों विधाओं में समाचार वाचन की भी एक अनोखी शैली होती है। खास तौर से आकाशवाणी और दूरदर्शन में इनकी सबसे अधिक महत्ता होती है। आकाशवाणी और दूरदर्शन ये तो तीन जो उद्देश्य बताए गए हैं उनके अंदर सूचना सबसे पहला है। अर्थात् आकाशवाणी का मतलब समाचार है। बल्कि यूँ कहे कि जनसाधारण में तो समाचार और आकाशवाणी एक दूसरे के पर्याय ही बन गए हैं। आज भी लोगों के कानों में गूंजता रहता है ''ये आकाशवाणी है, अब आप देवकी नंदन पांडे से समाचार सुनिये।'' या, ये आकाशवाणी है, अब आप विनोद कश्यप से समाचार सुनिए। इन समाचार वाचकों को लोगों ने चाहे देखा नहीं हो, लेकिन उनके व्यक्तित्व का नक्शा उनके दिलो दिमाग पर अंकित हो गया है। उनकी मधुर रनकदार, रौबीली आवाज़ को लोग लाखों में पहचानते हैं। आज भी लाखों लोग उनके जैसा बनने का स्पप्न देखते हैं। तो ये कोई बुरी बात नहीं है। सपने अवश्य देखने चाहिए। सपने हमारे भविष्य की छवि हमें दिखाते हैं और कुछ कर गुजरने का हौसला हमारे अंदर पैदा करते हैं किसी ने कहा भी है। ''संसार में सबसे निर्धन व्यक्ति वो है जिसके पास कोई सपना नहीं है।'' इसलिए आप भी ख्वाब जरूर देखें। अब सोचिए, स्वयं महसूस कीजिए कि एक अच्छा समाचार वाचक (News Reader) कौन बन सकता है। आइये हम बताते हैं, ऐसा स्वरूप फिर आप भी अपने आप में तलाश करिये और अगर वैसा नहीं है तो उसे प्राप्त करने की कोशिश करिए। अपने आपको उस सांचे में डालकर अपने ख्वाब को हकीकत में बदलिए। मेरा ख्याल है, समाचार वाचक बनने के लिए भी सबसे पहली खूबी तो है, उसकी खूबसूरत आवाज। जैसे अनाउंस, कपियर के लिए आवाज अच्छी होनी चाहिए वैसे ही समाचार वाचक के लिए भी ये सबसे जरूरी बात है।

अब आवाज़ का मामला ऐसा है कि ये तो कुदरत की देन है। कोई भी व्यक्ति देवकी नंदन पांडे, विनोद कश्यप, अमीन सयानी, सलमा सुलतान, इकराम राजस्थानी तो नहीं बन सकते लेकिन उनको मॉडल मानकर उनके जैसा बनने की कोशिश तो की जा सकती है। हाँ एक बात जरूर है अगर आवाज कहीं थोड़ी

कमजोर है तो उसे रियाज़ से भारी बनाई जा सकती है। इस बात का जिक्र हम कहीं ओर करेगे। अभी सिर्फ आपको ये ध्यान रखना चाहिए कि समाचार वाचक की आवाज़ अच्छी और खूबसूरत होनी चाहिए।

इसके अलावा और विधाओं की तरह समाचार वाचक का उच्चारण भी बहुत साफ सुथरा और शुद्ध होना चाहिए। उसे इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि उसके मुंह से जो शब्द निकले, वो बिल्कुल साफ और शुद्ध निकले, ताकि सुनने वालों को अच्छी तरह समझ में आ जाए। और जब बात उच्चारण की निकली है तो ये भी बताते चलें कि समाचार वाचक को हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू सभी भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए ताकि वो सभी भाषाओं का उच्चारण शुद्ध रूप से कर सके।

एक बात की तरफ आपका ध्यान और आकर्षित करना चाहूँगा। 'समाचार वाचक' जैसा कि इसके नाम से ही पता चलता है समाचारों का वाचन करता है यानी उन्हें पढ़ता है। इसका मतलब ये हुआ कि आपका पढ़ने का अभ्यास भी इसमें बहुत काम आएगा। अर्थात् कहाँ रूकना है, कहाँ दबाव डालना है, कहाँ पूर्ण विराम देना है, इस बात का पता हमें भलीभांति आना चाहिए। कहाँ पर कितना रूकना है, इस बात का भी हमें पूरा ध्यान रखना चाहिए। एक समाचार के बाद दूसरा समाचार पढ़ने के लिए कितना समय लेना चाहिए, यानी 3 से 5 सैंकड के बाद आपको दूसरा समाचार आरंभ करना चाहिए। अगर बहुत लंबा अंतराल (Pause) दे दिया गया तो श्रोता या दर्शक समझेंगे कि समाचार समाप्त हो गए।

आवाज़ का उतार-चढ़ाव भी इसमें आवश्यक होना चाहिए। एक ही अंदाज में एक ही पिच में अगर आपने सारे समाचार पढ़ दिये तो सब कुछ सपाट हो जाएगा और समाचारों में एकरसता या नीरसता आ जाएगी।

अब आपको एक खास बात ओर बता देते हैं। समाचार पढ़ते समय बीच-बीच में खासना नहीं चाहिए। दूरदर्शन पर यदि समाचार पढ़ रहे हैं तो चेहरे के हाव भाव बिल्कुल ठीक रखने चाहिए। अगर चेहरे की मुद्राएं बिगाड़कर समाचार पढ़ेंगे तो हास्यास्पद स्थिति पैदा हो सकती है।

समाचार पढ़ते समय बीच-बीच में रूककर सांस नहीं लेना चाहिए। प्रयास कीजिए, एक समाचार पूरा होने के बाद ही सांस ले, अथवा उचित स्थान पर रूककर सांस लेना चाहिए। प्रयास करना चाहिए कि समाचारो की भाषा सरल सहज हो, जो जनसाधारण की समझ में भी आराम से आ जाए। समाचारो का रूप छोटा रखें, लंबे-लंबे समाचार न बनाएं। समाचार पढ़ते समय समाचार वाचक

को ये नहीं भूलना चाहिए कि वो केवल समाचार पढ़कर श्रोताओं, दर्शकों को सुना रहा है। उसे समाचारों के साथ भावुक होने की आवश्यकता नहीं है यानी समाचार को संयत ढंग से उसकी भाषा के अनुसार प्रस्तुत करे।

अब एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बिन्दु की तरफ आपको ले चलते हैं। आप समझते हैं समाचार वरन संकलित किये जाते हैं और उन्हें सुना दिये जाते हैं। समाचार वाचक का बस ये ही काम है। दरअसल ऐसा नहीं है। एक समाचार वाचक को, न्यूज ऐजेन्सी की खबरों को इकट्ठा करना होता है, फिर उन्हें कई बार अंग्रेजी से हिन्दी, उर्दू या क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवादित करना होता है और फिर उन्हें अपने हिसाब से सजा संवार कर बुलेटिन सजाना पड़ता है। इसका मतलब ये हुआ कि समाचार वाचक को सभी भाषाओं का ज्ञान होना अनिवार्य है, और फिर उसे संबंधित भाषा में अनुवाद करना भी आना चाहिए। इतने सारे पड़ावों से गुजर कर समाचार वाचक की आवाज़ श्रोताओं और दर्शकों तक पहुँचती है। तब कहीं जाकर वो लोगों के दिलों तक अपनी बात पहुँचाने के काबिल बनता है। बी.बी.सी. के संवाददाता मार्क हुली से मैं मिला था उन्होंने भी ये ही कहा कि समाचार वाचक एक सफल स्तंम्भ होता है सूचना तंत्र का।

अब प्रश्न यह है कि आप जब समाचार स्वयं बैठकर लिखते हैं तो फिर आपके अंदर एक अच्छा, लेखक और पत्रकार भी होना चाहिए। आपमें समाचार की पूरी समझ होनी चाहिए। आपके दिमाग में ये स्पष्ट होना चाहिए कि ये समाचार कितना, किस हद तक, किस रूप में श्रोताओं, दर्शकों तक पहुँचना चाहिए। यानी आप में समाचार को लिखने की भी जबर्दस्त क्षमता होनी चाहिए। आपका दिमाग हर वक्त इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि ऐन वक्त पर भी कोई भी समाचार आपको दिया जा सकता है और प्रसारण के मध्य भी आपको उसे पढ़ना पड़ सकता है अपने तैयार बुलेटिन के बीच में कई बार समाचार वाचकों से आपने सुना होगा ''अभी अभी समाचार मिला है ...'' इसका ये ही तात्पर्य है।

प्रसिद्ध समाचार वाचक देवकी नंदन पांडे के पास स्टूडियो में समाचार आया, जो समाचार संपादक ने भेजा था। केरल के एक गाँव में शराब पीने से 200 व्यक्ति मरे। पांडे जी ने पढ़ते समय ही उसे ठीक कर लिया, पढ़ा ''केरल के एक गाँव में जहरीली शराब पीने से 200 व्यक्ति मरे।'' इसे कहते हैं त्वरित बुद्धि का उपयोग।

एक उदाहरण और देता हूँ एक समाचार पढ़ा गया दूरदर्शन पर-''तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता नहीं रही'' इसमें जो कहना चाहते थे, वो भाव बिल्कुल

उल्टा हो गया है। होना चाहिए था ''तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता मुख्यमंत्री पद पर नहीं रही''।

अब आप ही अनुमान लगाइये, समाचार वाचक बनने के लिए किन गुणों की आवश्यकता होती है, हमने बहुत संक्षेप में कुछ बातों की तरफ आपका ध्यान खींचा है। अब आप सोचिए, आप में कितने गुण हैं और कितने अपने आप में पैदा करने हैं।

ये तय है कि इस युग में समाचार वाचक की अपनी महत्ता और पहचान होती है। आप भी इस पहचान को बना सकते हैं, बस आवश्यकता इस बात की है कि आपको कोई सही दिशा दिखाने वाला व्यक्ति मिल जाये जो आपको अपनी ज्ञान की बैसाखी के सहारे प्रगति के पथ पर अग्रसर करा दे।

इसलिए जल्दी कीजिए, बनाइये अपना कैरियर, बन जाइये एक समाचार वाचक, इससे पहले कि आप स्वयं 'समाचार' न बन जायें।

कमैंट्री : विवरण : आंखिन देखी

अब आइये आकाशवाणी दूरदर्शन मंच की सबसे पुरानी विधा कमैंट्री की बात करे। आपने अक्सर कमैंट्री सुनी होगी। हर बात कमैंट्री होती है, हो सकती है। कुछ लोग मुहल्ले के नल की कमैंट्री करते हैं तो कुछ गली के नुक्कड पर हो रहे स्थानीय क्रिकेट मैचों की। पान की थड़ी पर खड़े लोग आस-पास की कमैंट्री करते रहते हैं - औरतें अक्सर अपनी पड़ौसन के हाल चाल की कमैंट्री करती रहती है। मतलब ये कि कमैंट्री करना इन्सान की फितरत है। उसकी आदत में ये शामिल होता है कि वो बात-बात पर कमैंट्री करे।

आपने अक्सर रेडियो-दूरदर्शन से कमैंट्री सुनी हैं। पन्द्रह अगस्त हो, गणतन्त्र दिवस हो, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री का शपथ ग्रहण समारोह हो, किसी महान नेता के दिवंगत होने पर उसकी अंतिम यात्रा हो, हॉकी, क्रिकेट, फुटबाल या कोई भी खेल हो सबकी कमैंट्री की जाती है। अर्थात जो दर्शक वहाँ घटनास्थल पर मौजूद न हो उनके लिए वहाँ की सारी घटना का आंखों देखा हाल प्रसारित कर हम उन्हें शब्दचित्र के जरिये वो पूरा दृश्य रेडियो में सुना देते हैं और टी. वी. पर दिखा भी देते हैं।

अब जरा अतीत के पन्ने पलटें या थोड़ा पीछे चलकर देखें तो मालूम चलेगा कि ये कमैंट्री कैसे शुरू हुई और सबसे पहले आँखों देखा हाल किसने किसको सुनाया था। मेरा ख्याल है सबसे पहले आँखों देखा हाल, महाभारतकाल में आरंभ हुआ था। जब दृष्टिहीन धृतराष्ट्र ने संजय से कहा कि तुम मुझे महाभारत युद्ध के हर क्षण का हाल सुनाते रहो ताकि मैं अपने कानों से सुनकर इस पूरे युद्ध की घटनाओं- को महसूस कर सकूँ। और सबसे पहली कमैंट्री -संजय ने धृतराष्ट्र को सुनाकर इस विद्या को हमारे सामने पेश किया। बस वहीं से यह कमैंट्री चल पड़ी। तब से लेकर आज तक ये विद्या विभिन्न पड़ावों से गुजरती आज के इस दौर तक आ पहुँची। कमैंट्री ने लोकप्रियता के शिखर को छुआ है। कमैंट्री एक ऐसी विधा बन गईं जो जनसाधारण तक पहुँचने में सबसे अधिक कामयाब मानी जाती है। एक आम दर्शक और श्रोता भी कमैंट्री सुनकर अभिभूत और रोमांचित हुए बिना नहीं रह सकता।

स्वतंत्र भारत में सबसे पहले कमैंट्री 15 अगस्त के दिन की गई थी। उस

कमैंट्री को सुनकर सारा राष्ट्र आश्चर्य चकित होकर आनंद की लहर में डूब गया था। उस कमैंट्री ने आजाद भारत का चित्र प्रस्तुत करके हमें नया स्वप्न दिया था। इसके पश्चात 30 जनवरी, 1948 को जब महात्मा गांधी का महाप्रयाण हुआ था तो उस महापुरुष की महाप्रयाण यात्रा का आँखों देखा हाल प्रसारित हुआ था।

कहते हैं कि उस कमैंट्री को सुनकर सारा राष्ट्र सुबकियों में डूब गया और हर देशवासी की आँखें गम के अश्कों में डूब गई थी। उस कमैंट्री ने सिद्ध किया था कि किस प्रकार शब्दों के माध्यम से, हृदय को झिंझोड़ा जा सकता है। सुनते हैं कि उस कमैंट्री को सुनकर, तत्कालीन प्रधानमंत्री पंड़ित जवाहर लाल नेहरू, बल्लभ भाई पटेल और अन्य नेतागण दूर नगरों में थे, की आँखें रोते-रोते त्रस्त हो गई थी। ये था कमैंट्री का कमाल।

धीरे-धीरे अपनी यात्रा तय करती ये कमैंट्री की विधा अनेकों आयामों से गुजरती रही। भारत के पहले अंतरिक्ष वैज्ञानिक राकेश शर्मा जब अंतरिक्ष में गए तो उनका भी आँखों देखा हाल प्रसारित किया गया था।

सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक सामारोह के अतिरिक्त खेलकूद की कमैंट्री ने भी अपना एक अलग स्थान बनाया है।

क्या आप कुछ प्रसिद्ध कमैंट्री करने वालों को जानते हैं, उन्होंने अपना एक स्थान बनाया, कीर्तिमान स्थापित किया। मुझे याद है जब अरविंद मेहरा जैसे लोग इस क्षेत्र में अपना जोर दिखाया करते थे। मैंने भी अनेकों बार, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस पर कमैंट्री की है, जो मेरे लिए एक गौरव की बात है और मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि उस मुकाम पर पहुँचना जिसे कमैंट्री का शिखर बिंदु कहा जाता है। मुझे आज भी मेरे अनेकों कमैंटेटर साथी याद हैं जब हम सभी कमैंटेटर ने उस महान क्षण को शब्दचित्र बनाकर पूरे विश्व के लिए प्रस्तुत किया था। ब्रिगेडियर चितरंजन साहब, जसदेव सिंह, वीर सक्सैना, अश्वनी त्यागी, दीपक बोहरा, सुनील टंडन, कोमलजीव सिंह, लक्ष्मीशंकर वाजपेई आदि अनेकों शामिल थे जो इस क्षेत्र में मेरे हमराही रहे हैं। मुझे ये कहते हुए गर्व है कि इकराम राजस्थानी ने एक कमैंटेटर के रूप में अपना मुकाम बनाया जिसे पूरा देश जानता पहचानता है।

जयपुर के 250 साल होने पर जो सजीव आँखों देखा हाल किया गया जो मेरे लिए यादगार क्षण है।

हल्दीघाटी की जयंती पर जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्द्रकुमार गुजराल उदयपुर आए तो उसकी कमैंट्री के लिए मुझे खास तौर से आंमत्रित किया गया था। मैं वो लम्हा आजतक नहीं भूला हूँ। एक कमैंट्री के साथ जुड़ी घटना और-

मैं पन्द्रह अगस्त पर लालकिले की प्राचीर से कमैंट्री कर रहा था। दर्शकों में मेरे सामने प्रधानमंत्री, मंत्री परिषद् के सभी सदस्य मौजूद थे। मुझे कमैंटेटर बॉक्स में से अचानक बाहर बुलाया गया। एक सुरक्षाकर्मी ने कहा कोई बाहर आपकी प्रतीक्षा में है। मुझे आश्चर्य हुआ मैं बाहर आया तो तत्कालीन सूचना प्रसारण मंत्री बंसत सांठे अपने हाथ में छोटा सा ट्रांजिस्टर लिए खड़े थे। मैं उन्हें देखकर भौंचक्का हो गया। उन्होंने मुझसे मेरा नाम पूछा और पूछा कि मैं कहाँ से आया हूँ। मैंने सब बता दिया। उन्होंने मुझे शाबासी दी ओर कहा, मैं बहुत देर से तुम्हें ट्रांजिस्टर पर सुन रहा हूँ, बहुत अच्छी कमैंट्री करते हों, मैंने सोचा स्वयं चलकर तुम्हें मुबारकबाद दूँ। मैं गद्-गद् हो गया। खुशी से फुला नहीं समाया। मुझे महसूस हुआ कि शब्द कितने सामर्थ्यवाद होते हैं, बहुत से शब्द व्यक्ति के फलने पर असर कर सकते हैं।

खेलकूद की कमैंट्री करने वालों ने भी अपना स्थान अलग बनाया है, जसदेव सिंह, मुरली मनोहर मंजुल, सुशील दोषी, नरोत्तम पुरी वगैरह ने अपनी एक पहचान हमारे सामने पेश की है।

अब आप सोचिए, आप भी तो कमैंट्री करते होंगे क्या आप भी प्रताप शर्मा, हरीश भिमानी, इकराम राजस्थानी बनने की सोचते हैं। तो फिर फौरन नोट करिए चंद बातें जो आपको, एक अच्छा कमैंटेटर बना सकती है और आप एक सितारे की तरह उभर सकते हैं।

ये तो आपको मालूम चल ही गया कि कमैंट्री सभी विषयों, समारोहों, घटनाओं, पर ही की जा सकती है। इसके लिए आपके पास इन सब बातों का विशाल ज्ञान होना चाहिए। एक अच्छा कमैंटेटर बनने के लिए आपके पास शब्दों का अच्छा शिल्प होना भी अनिवार्य है। लफज तो सबके पास होते हैं, बस उन्हें पेश करने का तरीका आना चाहिए।

आपको इसके लिए कल्पनाशील भी बनना पड़ेगा। ये शक्ति आपमें अवश्य होनी चाहिए। अब शब्दों की अदायगी पर भी गौर करना होगा, आपकी डिलीवरी न धीरे होनी चाहिए न ही बहुत तेज। समझ में आने वाला अंदाज होना चाहिए।

कमैंट्री से पहले थोड़ा होमवर्क अवश्य होना चाहिए और हो सके तो सिर्फ कुछ महत्वपूर्ण बिंदु नोट कर लेने चाहिए। कमैंट्री कभी भी लिखकर नहीं बोलनी चाहिए क्योंकि ये आँखों देखा हाल है, जो आप देख रहे हैं उसी को शब्दों में ढालकर लोगों को सुनाते हैं। अगर लिखा हुआ आलेख पढ़ने के लिए नीचे झुक जायेंगे तब तक तो सारा दृश्य ही सामने से गुजर जाएगा ओर दूसरा परीदृश्य आ जाएगा।

कमैंटेटर को बहुत, सजग, सावधान, सतर्क रहने की आवश्यकता है।

अगर दो लोग साथ कमैंट्री करते हैं तो कभी एक दूसरे की बात को काटना नहीं चाहिए। ओवरलेपिंग से बचिए। वाक्य छोटे सरल, सहज और सुंदर बनाये। उच्चारण की शुद्धता पर विशेष ध्यान दें। सदा नवीन शैली अपनाने की कोशिश करें। अपने बोलने में विविधता पैदा करें। नई-नई बातें नये-नये अंदाज में प्रस्तुत करें, जिस विषय की कमैंट्री कर रहे हो उसकी पूरी जानकारी आपके पास होनी चाहिए।

कमैंट्री में कभी भी किसी की बहुत अधिक प्रशंसा ना करें क्योंकि वह चापलूसी लगने लगेगी। आपके और श्रोता दर्शकों के बीच एक आत्मीयता सदा बनाए रखने का प्रयास करिये। कभी भी अपने बारे में अधिक न बोले, आत्म प्रशंसा से बचें।

ये कुछ सुझाव हमने आपको दिये हैं, जिन्हें अपनाकर आप भी अपना नाम अच्छे कमैंटेटर्स की श्रेणी में अंकित करा सकते हैं। बस एक ही बात का ध्यान रखे कि आपकी लगन, आपका परिश्रम, आपका शौक और आपकी गुरु के प्रति श्रद्धा ही प्रगति के पथ पर आपको ले जायेगी। इन बातों को अपनाकर देखिए, फिर देखते हैं कौन रोक सकता है आपको कमैंट्रेटर बनने से।

कार्यक्रम संचालन : भाव और उच्चारण

ये पाठ अलग से देने की आवश्यकता हम महसूस करते हैं। प्रत्येक-एंकर, कंपियर, न्यूजरीडर कमेंटेटर के लिए ये ज्ञान एक राम बाण है। जिसने भाव पर ध्यान नहीं दिया वो कभी भी एक कामयाब सूत्रधार नहीं बन सकता। भाषा के माध्यम से ही आप श्रोता-दर्शकों के साथ जुड़ते हैं। अगर आपका भाषा पर कमांड नहीं तो फिर आप कुछ नहीं कर पायेंगे। हमने पहले भी बताया है कि आप जब किसी कार्यक्रम का संचालन करे तो अपनी भाषा बहुत सीधी, सरल ओर रोचक रखिए। बोल-चाल की भाषा इस्तेमाल करें। श्रोता/दर्शक को यह लगना चाहिए कि आप कार्यक्रम का संचालन नहीं कर रहें हैं बल्कि उनके साथ वार्तालाप कर रहे हैं।

अगर अपना कहा, खुद ही खुद समझे तो क्या समझे मतलब तो तब है जब कि हम कहें और दूसरा समझे यानी आपको अपना पांडित्य प्रदर्शन नहीं करना है बल्कि आपकी बात को श्रोता/दर्शकों तक पहुँचाना है। उदाहरण के लिए अगर आप एक बात यूँ शुरू करते हैं- शुद्ध जल का जीवन में अत्यंत- महत्त्वपूर्ण स्थान है। बस इतना सुनते ही रेड़ियो और दूरदर्शन में तो ज़ो स्विच ऑफ करने की सुविधा है लोग उसका इस्तेमाल कर लेंगे और अगर मंच पर आपके सामने दर्शक तो वो आपकी बात पर ध्यान ही नहीं देगें। तो फिर क्या तरीका है, आप कह सकते हैं - "भैया, क्या आप पानी पी रहें है? जरा देख लीजिए, गिलास का पानी साफ तो है?" सुनकर लोगों के कान खड़े होंगे, तो आपकी तरफ आकर्षित होंगे आपकी बात को सुनना चाहेंगे। यानी बात आपने पानी की ही की है मगर सरल ढंग से। इस भाव को Spoken Word यानी बोल चाल की भाषा कहते हैं।

जब आप इस तरह बात करेंगे तो लोग अपने आप ही आप से जुड़ जाएंगे। बीच-बीच में कुछ अच्छे शेर, सरल कविताएँ शामिल कर लीजिए ये भी आपके संचालन में चार चाँद लगा सकते हैं। मिसाल के तौर पर बात करने की शुरूआत आप कर सकते हैं इस शे़र से "बात करनी भी न आती थी तुम्हें, ये हमारे सामने की बात है।"

भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है आपके संचालन की कला में। आप जितनी ज्यादा रोचक, सरल भाषा का उपयोग करेंगे आंपके कार्यक्रम की खूबसूरती बढ़ती

जाएगी। आपको बीच-बीच में अपनी तरफ से इस बात का पुट देकर चलना चाहिए कि कार्यक्रम का निखार बढ़ता ही चला जाए। अगर उर्दू की बात हो तो कहिए-

तेरे शानों पे गेसू बोलते हैं
इसी को लोग जादु बोलते हैं
अभी तहजीब का नोहा न लिखना
अभी कुछ लोग उर्दू बोलते हैं

हिन्दी भाषा में कहना हो तो कहिए :-

भारत के भाल पर लिखा आभास है, हिन्दी
जन जन के मन में जागता विश्वास है, हिन्दी
वन्दन करें नमन करें और आरती करें
अपने स्वतंत्र राष्ट्र का इतिहास है, हिन्दी

भाषा पर जिन लोगों ने कमांड हासिल कर लिया, वे संसार के महान वक्ताओं में गिने जाते हैं। जो लोग सही भाषा का सही वक्त पर इस्तेमाल करते हैं, उनके शब्दों का जादू लोगों के सिर पर चढ़ कर बोलता है। बोलने की कला -एक साधारण व्यक्ति को भी असाधारण लोगों की पंसद में लाकर खड़ाकर देती है।

आपको सुनकर हैरत होगी, एक अद्भुत बात के रूप में पहचान रखने वाले मैगस्थनीज आवाज पहले लड़कियों की तरह थी, वो हकलाता भी था और तुतलाता भी था। लेकिन उसने समुद्र की गर्जना के साथ अपना स्वर मिलाकर जो अभ्यास किया, तो वो जोशीली आवाज का धनी हो गया। हिटलर ने अपने शब्दों में अग्नि बाणों से जर्मन वासियों के दिलों में आग लगा दी ।

चर्चिल ने अपनी भाषा ओर कौशल के कारण ब्रिटेन के लोगों को झकझोर दिया। लाला लाजपतराय के भाषणों के अंदर गजब का उत्साह और जोश था, सुभाष चंद्र बॉस ने भारतवासियों में स्वतंत्रता का शंखनाद फूंक दिया और डा. राधाकृष्णन ने अपनी भाषा के बल पर सभी को मोहित कर लिया। कहने का मतलब यह है कि भाषा की महत्ता से कोई इनकार नहीं कर सकता है। भाषा के अनुसार ही आपके भाव भी उसमें सम्मिलित होते हैं। भाषा-विचार का दर्पण है। जिसमें सारा दृश्य सुंदर स्वप्न की तरह दिखता है। आपकी भाषा सीधे दिल को छूने वाली होने चाहिए।

''देखना तकरीर की लज्जत कि उसने जा कहा,
मैंने ये जाना कि, गोया, ये भी मेरे दिल में है।''

यानी आप भाषा ऐसी बोलिए जिसमें सामने वाले को अपने दिल की धड़कन सुनाई देने लगें।

''उसने कुछ भी न कहा हो जैसे,
मेरे ही दिल की सदा हो जैसे।''

बस जिसने ये फन सीख लिया और ये बात अपने संचालन में उतार ली वो एक कामियाब -वक्ता, संचालक, उद्घोषक हो सकता है। भाषा पर आपका अधिकार ही श्रोताओं और दर्शकों पर आपका अधिकार स्थापित करेगा। इसलिए जितना हो सके, भाषा को सजाने संवारने की कोशिश कीजिए आपका प्रोग्राम उन लफजों के साथ खुद ब खुद संवरता चला जाएगा। उच्चारण या तलल्फुज आपके संचालन की जान होता है। यानी कार्यक्रम की सारी आत्मा उसी में समाई रहती है। जिस तरह संगीत में बेसुरा चल सकता है, बेताल, नहीं चल सकता , उसी तरह इस कला में भी आपके पास ज्ञान अगर कम है तो चल जायेगा मगर यदि आपका उच्चारण खराब है तो फिर आप इस क्षेत्र में चल नहीं पायेंगे। इसलिए बार-बार इस बात पर जोर दिया जा रहा है, आपको प्रत्येक भाषा के उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिए ''तलल्फुज'' खराब है तो सब कुछ खराब है। इसलिए आप भाषा के विशेषज्ञों से उच्चारण को सीखने का प्रयास करते रहिए। बार-बार उसे दोहराइये ओर उसे ठीक करने की कोशिश करिये। मैं आपको इसका एक उदाहरण पेश करके समझाता हूं, एक साहब मेरे पास आए और बोले-इकराम साब कल सादी लालजी की सादी मे इतनी खराब थी.कि सराबोर हो गये। वो साहब उर्दू भी जानते थे, मैंने उन्हें समझाते हुए कहा, भाई साहब कहीं पर 'शीन' लगाया होता अर्थात 'श' का प्रयोग किया होता।

वो थोडा झेंप गए फिर बोले -कोई बात नहीं अबके शही'' । मैंने अपना माथा पीट लिया।

आजकल बहुत से लोग हिन्दी शब्दों के नीचे भी बिन्दी यानी नुक्ता लगाकर उसे उर्दू शब्द की तरह बोलने का प्रयास करते हैं, कहते हैं-

''वाह क्या लाज़वाब चाय है''

''आप जयपुर जा रहे हैं ?

और जहाँ नुक्ता लगाना है वहाँ वो छोड़ देते हैं मिसाल के तौर पर

''जिन्दगी सांज बने, साज ना बनने पाये'' या फिर कहेंगे

वाह जगजीतजी सिंह जी क्या गजल गाते हैं।''

अब आप सोचिए क्या ऐसा भ्रष्ट उच्चारण लेकर हम कामियाब सूत्रधार बन सकते हैं?

एक बार एक उर्दू के जानकार मेरे पास आए और बोले- यार ये ज़लील ''कृतघ्न'' शब्द जे से बनता है या जीम से ?

मैंने मुस्कुराते हुए कहा, ''भैया जलील तो, न 'जे' से बनता है न ही 'जीम़' से, वो तो जन्म से बनता है। वो साहेब समझ गए और हंसते हुए वापस लौट गए।

कहने का अर्थ यह है कि आपका उच्चारण बचपन से जैसा आपने सीखा है, जीवन भर वैसा ही रहता है। आप गलत उच्चारण का इतना अधिक अभ्यास कर चुके होते हैं, कि फिर उसे सुधारना एक मुश्किल काम हो जाता है। लेकिन हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। ऐसी भी कोई बात नहीं है कि आपका उच्चारण ठीक ही न हो सके । कोशिश करें इंसान तो क्या काम है मुश्किल। इसलिए आपको भी उच्चारण ठीक करने की दिशा में हमेशा प्रयत्नशील रहना चाहिए। इसके लिए हम आपको कुछ सुझाव देते हैं जो आपकी मदद क़रेंगे। उच्चारण को ठीक करने के लिए सबसे पहला गुर तो यह है, कि आप उन लोगों को अधिक से अधिक सुने, जिनका उच्चारण सही है। रेडियो और दूरदर्शन पर अच्छे बोलने वाले लोगों को ध्यान से सुनिए और उन जैसा उच्चारण बनाने की कोशिश करते रहिए।

आपको प्रत्येक भाषा को सीखने का प्रयास करना चाहिए ताकि आप उसके शब्दों को भली-भांति याद कर सकें, समझ सकें। जो शब्द आपको बोलना नहीं आए उसे अपने संचालन में से हटा दीजिए और उसके स्थान पर सरल शब्द का प्रयोग कर लें।

विषय विशेषज्ञों और भाषाविदों से समय-समय पर परामर्श करते रहें और उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करते रहिए।

याद रखिए कोई भी व्यक्ति अपने आप में संपूर्ण नहीं है। आपको किसी भी शब्द के उच्चारण के बारे में किसी भी जानकार से पूछने में कभी हिचक नहीं होनी चाहिए इससे आपका ज्ञान बढ़ेगा। अकेले में बैठकर उन शब्दों के उच्चारण की प्रेक्टिस करिए जो आप को कठिन मालूम होते हैं।

उच्चारण में शुद्धता का ध्यान रखिए। बोलते समय शब्दों की क्लेरियटी पर भी गौर करना चाहिए।

अच्छा सूत्रधार बनने के लिए भाषा और उच्चारण तो तरकश है जहाँ से आप शब्दों के तीर चलाएंगे और अगर एक बार तीर गलत पड़ जाता है तो फिर आप मुश्किल से निशाने तक पहुँचते हैं। इसलिए भाषा के धनुष पर भावों के प्रत्यंचा तानकर शब्द बाण चलाने के लिए आपको इन सब बिंदुओं पर विचार करना पड़ेगा। कोशिश करिये कि आपकी भाषा की खूबसूरती और लफ्जों का अंदाज लोगों के लिए उदाहरण बन जाये और आप सूत्रधार के रूप में एक जिंदा मिसाल हो जायें।

❖ ❖ ❖

विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम : संचालन के सूत्र

आपने सुना होगा जैसा देश वैसा भेश, या फिर जस दूल्हा – तस बनी बारात वगैरह। मतलब ये कि जिस प्रकार की परिस्थिति हो, जैसा कार्यक्रम हो, संचालक को उसमें तुरंत अपने आपको ढाल लेना चाहिए। ये ही आपके संयोजन की सबसे विशेष बात होती है। आप जानते हैं वाणी, मस्तिष्क का दर्पण है। आपके बोलते ही आपके शब्दों की गंध अपने आप ही वातावरण में फैल जाती है। वो ही आपका परिचय होता है श्रोताओं और दर्शकों से। फारसी के अंदर एक कहावत कही जाती है-

मुश्क आनस्त कि खुद बगोयद
न कि अत्तार बगोयद।

अर्थात् इत्र की खुशबू खुद बोलती है उसका गुणगान इत्र बेचने वाला नहीं करता है ठीक उसी प्रकार अच्छे संचालक के शब्दों के कमाल स्वत: ही उसका तआरूफ लोगों से करा देंगे उसे अपने बारे में स्वयं कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं है। आइये अब कुछ उन कार्यक्रमों के बारे में विचार करें जिनका संचालन करने के लिए हमें एक बहुत सुलझे हुए, समझदार संचालक की आवश्यकता होती है जिसके गुणों के बारे में हम आपको बताते चुके हैं।

सबसे अधिक जो कार्यक्रम होते हैं वो होते हैं संगीत के क्षेत्र में, क्योंकि समाज में संगीत का बोलबाला सदियों से रहा है और आज भी लोग संगीत के कार्यक्रमों में ही सबसे अधिक रूचि लेते हैं। एक अच्छे संचालक को संगीत के सुर ताल का ज्ञान भी अगर हो तो वो सोने में सुहागा हो जाता है। संगीत के विभिन्न रागों की जानकारी ताल का ज्ञान, थोड़ा सा संगीत का इतिहास आदि सब कुछ मालूम हो तो संगीत के कार्यक्रमों का संचालन आराम से किया जा सकता है। एक साहेब रेड़ियो में नौकरी करते थे। तबला वादन प्रसारित हो रहा था, उनके निदेशक ने फोन करके पूछा, ये इतना जोर से क्यों बज रहा है। वो साहब सजीव प्रसारण मैं ही अंदर स्टूडियो में गए और थोड़ी देर बाद वापस आकर अपने निदेशक को बताया, सर, वास्तव में बहुत शोर हो रहा था, मैंने ठीक कर दिया है। दरअसल ये कलाकार दोनों तबले एक साथ बजा रहा था। मैंने एक उठाकर अलग रख दिया है। आप समझ गए होंगे संगीत वाद्य यंत्रों की जानकारी भी कितनी जरूरी है।

चलिए अब आपको ये बताते हैं कि संगीत के क्षेत्र में कितने प्रकार के कार्यक्रम होते हैं और उनका संचालन किया जाता है-

1. शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में -

गायन संगीत समारोह

वादन संगीत समारोह

संगीत सम्मेलन

शास्त्रीय सम्मेलन

शास्त्रीय नृत्यों के कार्यक्रम

उपशास्त्रीय संगीत (ठुमरी-दादरा, चैती, कजरी)

इसी प्रकार सुगम संगीत में

गज़लों के कार्यक्रम

कव्वाली के प्रोग्राम

भजन संध्याएं

गीत कंसर्ट

लोक संगीत में भी विभिन्न कार्यक्रम होते हैं-

लोक गीतों के कार्यक्रम

लोक वाद्यों के कार्यक्रम

लोक भजनों के कार्यक्रम

लोक नृत्यों के कार्यक्रम

लोक नाट्यों के कार्यक्रम

अब आप स्वयं सोचिए हम किस प्रकार संगीत के क्षेत्र में आयोजित इन सभी कार्यक्रमों का सफल संचालन कर सकते हैं।

संगीत के बाद जिस क्षेत्र में सबसे अधिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं वो हैं साहित्यिक क्षेत्र। कहा भी जाता है-

अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है
मुर्दा है वो देश, जहाँ साहित्य नहीं है।

आइये साहित्य के क्षेत्र में आयोजित्त कार्यक्रमों की चर्चा करें जहाँ अनेकों सिद्ध -हस्त संचालक अपना जौहर दिखा रहे है और यक्ष धन अर्जित कर रहे हैं-

1. कवि सम्मेलनों का संचालन

2. मुशायरों का संचालन
3. कवि गोष्ठियों का संचालन
4. नशिस्तों का संचालन (उर्दू गोष्ठियां)
5. विचार गोष्ठियाँ
6. परिचर्चाएँ
7. परिसंवाद
8. सेमीनार
9. कार्यशालाएँ
10. पुस्तक चर्चाएँ
11. लोकार्पण समारोह

साहित्य के ये वे क्षेत्र हैं जहाँ सेचालक की भूमिका बहुत मुखरित होकर सामने आती है। इन दिनों समाज में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रहती है। आए दिन इस प्रकार के कार्यक्रम होते रहते हैं और उनके लिए लोगों को एक बेहतरीन कंपियर की तलाश हमेशा रहती है। आइये देखें, इस क्षेत्र में किस तरह के कार्यक्रम होते हैं-

1. सभी प्रकार के संगीत कार्यक्रम
2. शादी विवाहों में महिला संगीत
3. विविध, रंगारंग कार्यक्रम
4. फिल्मी सितारों के प्रोग्राम
5. झलकियाँ
6. नाटक
7. संगीत आपेरा या संगीत वैल
8. फैशन शो

यानी कि हमारे सामने संचालन और संयोजन के इतने अवसर हैं सांस्कृतिक क्षेत्र में बस इसके लिए अपने आपको तैयार करके एक सफल सिद्ध संचालक के रूप में अपने आपको प्रमाणित करने की आवश्यकता है फिर देखिए लोग आपके आगे पीछे कैसे डोलते हैं और आपको हर कार्यक्रम हेतु अनुबंधित करने के लिए कैसे लालायित होते हैं।

इन दिनों संचालन और संयोजन के लिए शैक्षिक क्षेत्र में अनेकों द्वार खुले हैं। कल भी अनेकों अवसर आपके लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं।

1. अंताक्षरी कार्यक्रम विद्यालयों और मंचों पर खूब हो रहे हैं।
2. पुरस्कार समारोह
3. समाज समारोह
4. स्वागत समारोह
5. विदाई समारोह
6. सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम
7. स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय स्तर पर संगीत-नृत्य के कार्यक्रम।
8. युवा समारोह

आपको इन सब बिंदुओं पर अपनी तैयारी करनी चाहिए। शिक्षा के इस क्षेत्र में आप अपने आपको आजमा सकते हैं आपको इन सारे विषयों पर कविताएँ, चुटकुले, शेर आदि खूब याद होने चाहिए। लोग तालियों से आपका स्वागत करेंगे जब आप कहें-

इस दिये की लौ में इक सूरज को ढाला जाएगा
देख लेना, दूर तक इसका उजाला जाएगा।

आज का दौर बहुत कामर्शियल, व्यवसायिक हो गया है। हर आदमी इस दौड़ में आगे निकलना चाहता है। ये प्रतिस्पर्धा का युग है, आगे बढ़ने के लिए सभी व्याकुल हैं अपनी-अपनी व्यवसायिकता को लोग विज्ञापन करके जनता तक पहुँचाने के लिए दौड़ रहे हैं। इसके लिए अनेक प्रकार के व्यवसायिक कार्यक्रम भी समय -समय पर किये जाते हैं जहाँ पर Master of Ceremony की धूम रहती है।

व्यवसायिक कार्यक्रमों पर नजर डालते हैं -

1. रोड शोज़ - विज्ञापन हेतु
2. मेले आयोजित किये जाते हैं
3. उत्सव मनाये जाते हैं
4. कांफ्रेंस भी आयोजित होती हैं।
5. मीटिंग्स में भी संचालन होता है
6. अनेक प्रकार की कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं।
7. खेलकूद संबंधी कार्यक्रम

इन सब अवसरों पर भी आपको हमेशा नजर रखनी चाहिए और उन लोगों

से संपर्क रखना चाहिए जो इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करते रहते हैं ताकि आपके संचालन और संयोजन को उचित अवसर मिलता रहे।

एक और क्षेत्र हम आपको बताते हैं जहाँ आपको एक विशेष प्रकार के संचालक के रूप में पहचान मिल सकती है। ये क्षेत्र है धर्म का क्षेत्र। आजकल इस फील्ड में भी अनेकों प्रकार के संयोजन की संभावनाएँ बहुत बढ़ गई है। आप देखिए वहाँ भी अच्छे वक्ता ही अपना कमाल दिखा रहे हैं। आजकल जो संत सबसे अधिक लोकप्रिय हैं वो बहुत अच्छे बोलने वाले हैं अपने शब्दों की डोर में लोगों को बाँधने की क्षमता उनमें है। वो लोग अपने कार्यक्रमों का संचालन स्वयं बहुत प्रभावशाली ढंग से कर रहे हैं फिर भी क्षेत्र तो है जहाँ आपकी आवाज भी गूंज सकती है-

1. संत सभाएँ
2. यज्ञ समारोह
3. धर्म गोष्ठियाँ
4. चिंतन कार्य शालाएँ
5. धार्मिक यात्राएँ
6. जुलूस
7. धर्म सभाएँ

अब तय आपको करना है कि आप इस क्षेत्र में कैसे ओर किस तरह सफल हो सकते हैं।

एक क्षेत्र की चर्चा किये बगैर ये सारा लेख अधूरा ही रहेगा। वो ही राजनीति या सियासत का क्षेत्र। अच्छे वक्ताओं ने खुद ही इस क्षेत्र में अपना झंडा फहराया है। जो लोग अच्छा बोल सकते हैं राजनीति में उनके लिए बड़ी गुंजाइश है। कहने का तात्पर्य है कि शब्द की सत्ता के बगैर राजनेता भी अपनी राजसत्ता को इतनी आसानी से प्राप्त नहीं कर सकता। राजनेताओं को भी इस बोलने की कला के प्रशिक्षण की बहुत आवश्यकता है। इसमें भी कुछ क्षेत्र है जहाँ आप शब्द शिल्प दिखा सकते हैं-

1. चुनाव सभाएँ
2. प्रशिक्षण शिविर
3. जनसभाएँ

और भी अवसर इस क्षेत्र में तो आते ही रहते हैं बस सही चुनाव आपको करना है कि आप किस अवसर के लिए एक अच्छे संचालक की भूमिका निभा सकते हैं।

इन सारे क्षेत्रों में शब्दों का कमाल दिखाया जाता है। जहाँ जिस तरह के अल्फाज हमें चाहिए बस उनका सही वक्त पर उपयोग कर लीजिए फिर आपके वारे न्यारे है। आप जितनी दौलत चाहें कमा सकते हैं बशर्ते कि आपको सही अवसर पर सही बात सही ढंग से बोलना आए। लोग कहते हैं जहाँ सरस्वती का वास होता है वहाँ लक्ष्मी निवास नहीं करती है। लेकिन ऐसा नहीं है शब्दों की साधना से लक्ष्मी भी खूब अर्जित की जा सकती है। महाभारत का एक दृष्टांत है-

युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से पूछा, "लक्ष्मी कहाँ निवास करती है?"

भीष्म पितामह ने जवाब दिया, "वाक् पटु, सक्रिय और सचेत व्यक्ति के यहाँ लक्ष्मी निवास करती है"।

तो फिर आप भी वाक्पटु बनने के लिए तैयार रहिए, कोशिश करते रहिए, पढ़ते रहिए, समझते रहिए और शब्दों की साधना करते रहिये। ये ही शब्द आपको शिखर पर ले जाएंगे। और लोग आपको पूजने लगेंगे हाँ थोड़ा वक्त लगेगा मगर कोई बात नहीं-

ये तो सच है कि जरा वक्त लगा देते हैं लोग
फ़न को मनवा दो तो फिर सर पे बिठा लेते हैं लोग।

संचालन में हास परिहास की भूमिका

ये विषय प्रत्येक संचालन करने वाले व्यक्ति के लिए बहुत ही काम का है। आज का दौर कितने तनावों से भरा है, हालांकि किसी न किसी गम में मुक्तिल होता है। कोई पल ऐसा नहीं है जब आदमी को अपनी तकलीफ़ों से निजात मिल जाए। सुबह ही फिक्र को चौखट पे खड़े पाया था, शाम के वक्त, मैं जब लौट के घर आया था। ये ही हाल कमोबेश दुनियां में हर इंसान का है। वो चाहकर भी इस चिंता और तनाव से मुक्त नहीं रह पाता है। चाहे हम लाख मुस्कुराने की कोशिश करें लेकिन अंदर गम का समंदर छलांगें मारा करता है। लोग इस स्थिति को छिपाने की नाकाम कोशिश करते रहते हैं। कई बार हम आदमी की सूरत देखकर उसकी वास्तविक स्थिति का अंदाजा ही नहीं लगा सकते हैं।

कुछ लोग ज़माने में ऐसे भी तो होते हैं
महफिल में तो हंसते हैं, तनहाई में रोते है।

आप ही सोचिए, जो कार्यक्रम हम आयोजित करते हैं तो उसमें भी यदि गंभीर वातावरण हमेशा रहेगा तो आदमी का तो जीना ही दूभर हो जाएगा। इसलिए मेरी ऐसी मान्यता है कि आपको संचालन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि कार्यक्रम के दौरान वातावरण बिल्कुल भी बोझिल न बनने पाये। जहाँ भी आपको लगे कुछ गंभीर सी स्थिति कार्यक्रम की हो रही है तो उसी समय आपको कोई ऐसी बात, कहावत, चुटकुला, लतीफा या कविता कह देनी चाहिए कि माहौल में फिर से नई ताज़गी पैदा हो जाए। और ऐसा करने से आपको ये भी फाय़दा होगा कि आप एक बेहतरीन संचालक के रूप में अपने आपको श्रोताओं दर्शकों के बीच स्थापित कर पाने में सफल होंगे। वरना तो आप जानते ही हैं आजकल हालात हर तरफ कितने नाजुक हैं-

हर चेहरे पे मायूसियों की धुंध छा गई
अब कौन करे हास की परिहास की बातें।

हम ये कहते हैं कि कंपियर को अपनी बातचीत के बीच हास परिहास का पुट देते रहना चाहिए।

लेकिन एक बात का ध्यान रखिए, हास परिहास की बात करते समय आपका

स्तर इतना नीचा भी नहीं उतरना चाहिए कि लोगों को आपको बीच में रोकना पड़े।

रेड़ियो और दूरदर्शन पर तो खैर आपको प्रोग्राम के प्रोड्यूसर रोकेंगे मगर मंच पर श्रोता तो इस बात के लिए आपकी हालत खराब कर सकते हैं। इसलिए मंच पर बोलते समय अधिक सजग, सावधान और सतर्क रहने की आवश्यकता है। आपके पास हास परिहास का भी बहुत ही स्तरीय मसाला होना चाहिए। जिसे सुनकर लोग मुस्कुरायें। हंसे और कहकहे लगाये। इसकी बड़ी महत्ता है-

या तो दीवाना हंसे या वो जिसे तौफ़ीक दे
वरना इस दुनियां में आकर मुस्कुरा सकता है कौन?

अब जरूरत यह है कि ये सब बातें आप कहाँ से जुटायेंगे, कैसे करेंगे ये सारा माल इकट्ठा। तो जनाब इसके लिए आपको मेहनत करनी पड़ेगी, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़नी पडेंगी, शायरों कवियों का कलाम और कविताएँ याद करनी पड़ेंगी या फिर ये भी हो सकता है कि एक संचालक यदि स्वयं बहुत अच्छा कवि, गीतकार, साहित्यकार या शायर है तो वो इन सब चीजों का इस्तेमाल बहुत ही खूबी के साथ अपने संचालन के बीच-बीच में कर सकेगा। अच्छे शब्दों का चयन, फिर उनका कुशलता से संयोजन और फिर हास परिहास की चाशनी में लिपटा हुआ वातावरण भला किसके मन को आकर्षित न कर लेगा। कई बार मंच पर बिगड़ती हुई स्थिति को इन्हीं करतबों से संभाला जाता है।

एक वक्त कवि सम्मेलन उखड़ने लगा, श्रोता ने जूता फेंका। कवि ने जूता उठाया और पढ़ा-

जिसने ये जूता फैंका, उसको मेरा सलाम जाए
वो दूसरा जूता भी फेंक दे तो जोड़ा पहनने के काम आए।

पांडाल कहकहों से गूँज उठा। कवि सम्मेलन जम गया।

मैं एक जगह दशहरे मेले के सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन कर रहा था। श्रोता दर्शक बड़े खतरनाक मूड में थे। कलाकार को उखाड़-उखाड़ कर फैंक रहे थे। पत्थर भी आए तो बेचारे कलाकार दुबक गए। ऐसी स्थिति में संचालक का दायित्व और बढ़ जाता है। मैं माइक पर गया। व्याकुल श्रोताओं ने अभी भी वो ही हाल बना रखता था। मैंने जाकर जैसे ही माइक संभाला, श्रोताओं में से एक स्वर उभरा। "अबे तू कहाँ से आया है?"

मैंने थोड़ा Pause दिया। कुछ अंतराल के बाद बोला- "जहाँ से सारी दुनियाँ आई है। तुम कहाँ से आए हो?"

इतना सुनना था कि दस हजार दर्शकों से भरा पांडाल तालियों की गड़गड़ाहट

से गूँज गया। लोगों के कह कहे रोके नहीं रूक रहे थे। मेरा एक वाक्य जादू का काम कर गया। और फिर वो कार्यक्रम लगातार चार घंटे चला आखिर तक दर्शक उठने का नाम नहीं ले रहे थे।

आप अपने कार्यक्रम की शुरूआत भी किसी कविता या लतीफे से कर सकते हैं। हास्य या व्यंग्य विनोद की बात करते समय एक बात का विशेष ध्यान रखे कि वो बात किसी व्यक्ति पर कोई व्यक्तिगत व्यंग्य न हो। कोई भी बात किसी भी व्यक्ति को ठेस पहुँचाने वाली न हो। आपका उद्देश्य सिर्फ ये होना चाहिए कि आपका कार्यक्रम कैसे अधिक से अधिक रोचक, सरस और सफल बन सकता है।

क्योंकि हास परिहास की बात जहाँ आपके प्रोग्राम को गंभीरता से बचाती है कई बार आपकी कही हुई बात यदि किसी को बुरी लग गई तो उसके गंभीर परिणाम भी हो सकते हैं। मुझे एक घटना याद आ रही है। मैं अपने एक मित्र के साथ फरीदाबाद एक रंगारंग कार्यक्रम के लिए गया हुआ था। होली का मस्ती भरा माहौल था। लोग अपनी-अपनी तरंग में इस कार्यक्रम का मजा ले रहे थे। वहाँ एक स्थानीय कलाकार को गाने का अनुरोध भी आया। उन्होंने ग़ज़लें पेश की। उनके जाने के बाद मैंने एक लतीफा मौके के इतबार से गजलों पर सुनाया। लतीफा कुछ यूं था। एक साहेब ने पुकार के पूछा, साहब ये गाने वाले लोग अक्सर अपनी आँखें बंद क्यूं कर लेते हैं? मैंने कहा, बड़ी सीधी बात है, भैया, उनसे सुनने वालों का दुख देखा नहीं जाता है। जनता हंसते-हंसते लोट पोट हो गई- मगर इतनी ही देर में नशे में धुत एक साहेब लड़खड़ाते हुए आप मुझसे खफा होकर कहने लगे। आपने मेरे उस्ताद का मजाक मुड़ाया, मैं ये सहन नहीं कर सकता। मुझे फिर अहसास हुआ कि अभी अभी जो सज्जन गा रहे थे वो वास्तव में आंखें बंद करके ही गा रहे थे और ये नशे में धुत उनके शागिर्द को बड़ा नागवार गुजरा कि उनके गुरुजी की शान में कोई गुस्ताखी करे। मैंने उनसे सॉरी कहा और जानता के बीच जाकर ये बात ज्यों की त्यों बता दी तो लोगों के हंसी के मारे पेट में बल पड़ गए। अब इस बात से ये तो पता चल ही गया कि एक कुशल संचालक में Pressence of Mind यानी प्रत्युत्पन्न मति होनी चाहिए जो हाथोंहाथ हालात को संभाल सके।

हास परिहास की बात तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी स्वीकार की है। उनका कहना है "हंसी मन की गांठों को आसानी से खोल देती है मेरे मन की ही नहीं तुम्हारे मन की भी" अगर आप अपने श्रोताओं के बीच हंसी का फव्वारा छोड़ने में कामयाब हो गए तो ये श्रोताओं और दर्शकों की तरफ से आपको सबसे अनमोल उपहार होगा।

हंसी की बात को कहने का अंदाज भी अलग ही होता है। कार्लाइव ने कहा है कि सच्चा हास परिहास दिमाग से नहीं दिल से उपजता है। महान से महान व्यक्ति ने इसके महत्त्व को स्वीकार किया है। गांधी जी ने तो यहाँ तक भी कह दिया था कि "अगर मुझमे हास्य विनोद का भाव न होता तो मैंने बहुत पहले ही आत्महत्या कर ली होती" कहने का मतलब ये हुआ कि हास परिहास का सही समय पर सही तरह से उपयोग एक सिद्धहस्त प्रवक्ता करता रहता है और गंभीर से गंभीर वातावरण में भी हंसी की फुलझडियां छोड़ता रहता है इन सब बातों से एक महत्त्वपूर्ण बात और निकलकर आई कि एक कामियाब संचालक वक्ता या प्रवक्ता को हाजिर जवाब जरूर होना चाहिए। आपको प्रत्येक बात का तपाक से जवाब देना आना चाहिए। ये ही आपकी सबसे बड़ी कामियाबी है और जवाब भी इतना सटीक होना चाहिए कि सामने वाला व्यक्ति उसको सहलाता ही रह जाये।

जर्मनी के मशहूर नेता बिस्मार्क ने इंगलैंड के यहूदी प्रधानमंत्री डिजरैली से कहा "जर्मनी ने अफ्रीका में एक नया देश खरीदा है, वहाँ यहूदियों और सुअरों को रहने की इजाजत नहीं होगी।"

डिजरैली ने फ़ौरन जवाब दिया, "सौभाग्य से हम दोनों तो यही हैं"

इस प्रकार के जुमले कार्यक्रमों के दौरान अक्सर श्रोता या दर्शक दागते रहते हैं आपको इसके लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। कभी-कभी परिस्थितियाँ ऐसी बन जाती हैं स्वयं हास परिहास उत्पन्न हो जाता है। मैं एक कार्यक्रम का संचालन कर रहा था, इसी बीच दर्शकों में एक नया फैशनेबल जोड़ा आया। पुरुष ने एक बैग पीछे लटका रखा था और नवयुवती पर्स हिलाती आगे-आगे थी। दोनों दर्शकों के आगे जो सोफे थे वहाँ तक आ गए। ग़ज़ल गाकर कलाकार उठे थे- "मेरे हमसफर मेर हम नवां" मैंने उस जोड़े की तरफ़ देखकर कहा अभी फ़नकार हमसफर की बात कर रहे थे और अभी-अभी मेरे सामने एक मोहतरमा अपने हमसफर के साथ तशरीफ लाई हैं। मगर इनकी नज़र ये शेर करता हूँ खास तौर से हमारे पुरुष दोस्त की तरफ से-

हम सफ़र बनने की हमने, आरजू उनसे जो की
मुस्कुराकर झट से मेरे सर पे बिस्तर रख दिया।

बस ये कहना था, कि सारा माहौल हंसी के फव्वारों में भीग गया। इसलिए ध्यान रखिए-हास परिहास के मोतियों से संचालन को सजाते रहिए। आप भी हंसते मुस्कुराते रहिए और श्रोताओं दर्शकों को भी गुदगुदाते रहिए। जिस संचालक में ये फन है वो यकीनन एक कामियाब वक्ता है। हमें हास परिहास को अपने जीवन में सदा रखना है और प्रत्येक कार्यक्रम में खुशियों की बौछारें बिखेरते रहना है।

❖ ❖ ❖

स्वरतंत्र : और मधुर वाणी का मूलमंत्र

आवाज़ की दुनियां अलग ही होती है। ये शब्दों के जादू का चमत्कारिक संसार होता है। जब आवाज़ की तरंगें वायुमण्डल में तैरती हैं तो अपने आप ही वो लोगों के दिल दिमाग को झंकृत करती हैं। आपने तरह-तरह की अवाज़ें सुनी हैं।

कहा भी गया है-

ये चमन यूं ही रहेगा और हजारों जानवर,
अपनी-अपनी बोलियाँ, सब बोलकर उड़ जायेंगे।

तरह-तरह की आवाज़ें हम आए दिन सुनते हैं जानवरों की आवाजें भी सुनते हैं। उन्हें भी पहचानते हैं। लेकिन इंसानों की आवाजों पर भी यदि हम गौर करें तो उसमें भी हमें तरह-तरह की आवाजें सुनने को मिलती है। कभी बहुत महीन अवाज़ किसी की बहुत मोटी किसी की कर्कश। किसी की तीखी, किसी की मधुर-कोमल और सुहावनी। कई पुरुषों की आवाज़ें ऐसी जैसे महिला बोल रही हो तो और कई महिलाएँ पुरुष स्वर की तरह आवाज निकालती आपको दिख जायेंगी। कुछ बहुत कच्ची और बच्चों जैसी आवाजें और कुछ बहुत ही परिपक्व और कानों को मधुर लगने वाली आवाजें। कभी सोचा है आपने सब व्यक्तियों की आवाजें अलग अलग क्यों है। क्यों है आपस में इतना अंतर। आदमी को उसकी आवाज़ से ही पहचान लिया जाता है चाहे वो हमारे सामने हो या न हो। फोन पर या रेडियो पर जानकार व्यक्ति का स्वर आप तुरंत पहचान लेते हैं।

आइये ज़रा संक्षेप में इस बात पर भी चर्चा करें कि ये स्वरतंत्र जो हमारे अंदर गले में बोल रहा है ये क्या है, क्या जादू है जो आवाज़ बनकर हमारे गले से बाहर निकलकर आ रहा है। वैसे तो सारा विषय डाक्टरों का और जीव वैज्ञानिकों का है लेकिन चूँकि बोलने वाला व्यक्ति या कंपियर अपनी गले की कला से ही सब कुछ हासिल कर रहा है तो उसे, स्वरतंत्र की भी थोड़ी बहुत बुनियादी जानकारी होनी चाहिए। वैसे तो ये अध्यात्म का विषय भी है और कबीर जैसे महान संतों ने आपसे सैकड़ों बरस पहले भी कहा है-

''साधो, कांई आवेरे
कांई जाय
बोले है जींकी खबर नहीं''

अब वो तो जीव का रहस्य ढूँढ़ने की बात कर रहे हैं कि हमारे अंदर क्या बोल रहा है। मगर हम तो बोली और वाणी तक इस विषय पर सीमित रहेंगे।

मैंने स्वरतंत्र के बारे में अपने अनेक जानकार डॉक्टर मित्रों से चर्चा की जो नाक कान गले के विशेषज्ञों में शुमार किये जाते हैं। आइये आप लोगों को भी थोड़ी सी जानकारी इस तंत्र की दे दी जाये।

जब भी हम मुंह से कोई स्वर निकालते हैं तो उस पर सांस का असर अवश्य पड़ता है। एक गाने वाला व्यक्ति अपने रियाज़ से सांस की प्रक्रिया को अपने काबू में कर लेता है जिससे उसके ध्वनि के गुणों में बेहद निखार आ जाता है।

डॉक्टर जयप्रकाश भारतीय ने एक पुस्तक लिखी है 'योगासन', उसमें भी ये ही बताया गया है कि प्राणायाम से श्वांस की प्रक्रिया को नियंत्रण में रखा जा सकता है। कहने का तात्पर्य ये है कि योगासन द्वारा भी हम अपनी वाणी में निखार ला सकते हैं।

हमें तो मोटे तौर पर ये समझ लेना चाहिए कि मुंह से ध्वनि कैसे पैदा होती है तो हमें पूरी श्वांस प्रक्रिया समझ में आ सकती है।

आइये संक्षेप में इसे समझने का प्रयास करें। आदमी की गर्दन के सामने एक गाँठ सी होती है, जिसे साधारण बोलचाल में कंठ, टैटुआ कहते हैं। इसी के पीछे हमारा स्वरतंत्र होता है- इसमें दो होंठ होते हैं जो खुलते और बंद होते हैं। जब इनके बीच में से श्वांस या हवा निकलती है उससे ध्वनि निकलती है और स्वर बनते हैं। स्वरतंत्र कुदरत की देन है लेकिन उसे प्रयास द्वारा किसी हद तक ठीक किया जा सकता है।

जब कभी हमारे मस्तिष्क में कोई तनाव होता है तो स्वरतंत्र भी असह्य हो जाता है।

तनाव को कम करने के लिए हमें लंबी-लंबी सांसे लेनी चाहिए कभी-कभी हमें लगता है कि गला भारी हो जाता है या गला बैठ जाता है ऐसी स्थिति में हमारा बोलना बहुत नामुमकिन हो जाता है। इसलिए हमें हमेशा अपने गले का ध्यान रखना चाहिए। पूरी सावधानी खान-पान आदि में बरतनी चाहिए। ठण्डी चीजों से बचना चाहिए। धूम्रपान आदि के सेवन से बचना चाहिए। अगर आपको पान का शौक है तो उसमें सुपारी का पूरा ध्यान रखें। अधिक सुपारी से आपकी आवाज़ भारी हो जाएगी और जबान थोड़ी सक्त हो जाएगी ऐसी स्थिति में आप कई शब्दों का उच्चारण बिल्कुल साफ और शुद्ध नहीं कर पायेंगे जो एक संचालक या वक्ता का सबसे बड़ा दोष माना जाता है।

इसके अतिरिक्त आपको अपनी सांसों पर पूरा नियंत्रण रखना चाहिए। इससे ध्वनि में उतार-चढ़ाव पैदा होता है। लंबे-लंबे वाक्य बोलते समय बीच में विराम लें। मध्य पट से यदि आप श्वांस लेंगे तो फिर आपका हाँफना भी बंद हो जायेगा। बोलने में ठहराव और स्थिरता आयेगी और यदि ऐसा कर लेंगे तो फिर आपको वाणी के उतार-चढ़ाव में कभी किसी भी प्रकार की कठिनाई महसूस नहीं होगी और आपके संचालन में चार चांद लग जायेंगे।

ये तय है कि हर व्यक्ति की आवाज का अपना एक खास और अलग अंदाज होता है। इसमें बहुत अधिक परिवर्तन तो नहीं किया जा सकता है लेकिन कुछ वाणी दोष या ऐब मिटाने का प्रयास जरूर किया जा सकता है।

कुछ लोगों को आपने सुना होगा उनके बोलने में नाक की आवाज़ भी शामिल होती है यानी वो गिनगिने होते हैं। कुछ व्यक्तियों की आवाज़ बहुत ही भर्राई हुई (Husky Voice) होती है लेकिन इन दोषों के कारण घबराने की कोई जरूरत नहीं है। अपनी सांस के नियंत्रण, रियाज से, अभ्यास से इन दोषों को काफी हद तक दूर किया जा सकता है। साधना और निरंतर अभ्यास से प्रत्येक चीज संभव है- आप भी स्वरतंत्र के इस रहस्य को समझते तो अपनी वाणी में मधुरतंत्र भर सकते हैं और श्रोताओं दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर सकते हैं।

एक बात आपको और बता देते हैं इससे पहले कि लोग आपके संचालन के संबंध में अपनी राय बताएं और आपके बारे में कोई निर्णय लें, आप स्वयं इसके बारे में सोचिए। आप स्वयं महसूस कीजिए आप कैसा बोल रहे हैं, कैसा उच्चारण कर रहे हैं आपकी आवाज़ सुनने में कैसी लग रही है। आपको मालूम है हर व्यक्ति अपना स्वयं का निर्णायक सबसे बेहतर होता है। बशर्ते कि आप अपने आपको श्रोताओं और दर्शकों के आइने में रखकर सोचें। आपको अपने बारे में थोड़ा क्रूर होना पड़ेगा। अपने से मोह को त्यागकर एक निष्पक्ष निर्णायक की तरह अपने आपको जाँचना पड़ेगा। इसके लिए आप आइने के सामने खड़े होकर अपने हाव-भाव, भंगिमाएँ, चेहरे की मुद्राएँ, वेशभूषा को देख सकते हैं और टेपरिकार्डर में अपनी आवाज़ को टेप करके बार-बार उसे सुनकर अपने दोषों से मुक्ति पा सकते हैं।

अब आपको बुनियादी रूप में ये समझ में आ गया है कि स्वरतंत्र से जो ध्वनि निकलती है वही स्वरों के सांचों में ढलकर, शब्द बन जाती है और उन्हीं शब्दों के सही संयोजन से हम एक शब्द शिल्पी के रूप में लोगों के सामने अपने आपको प्रस्तुत करते हैं जिससे हमें मान, सम्मान, यश, कीर्ति और वैभव सभी

कुछ प्राप्त हो सकता है। कहने का मतलब है कि शब्दों से संचालन को भी ठिकाना मिलता है और यश काया में सदियों जीवित रहने का अवसर भी प्राप्त होता है।

अगर हमें यश कमाना है, लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचना है तो शब्दों की सत्ता को पहचानना होगा। इन्हीं शब्दों के संयोजन से सारा संसार स्वप्नमयी दिखाई देता है। अल्फाज हमें बोलने का वो अंदाज देते हैं जो हमें लाखों करोड़ों लोगों से भिन्न करते हैं। इसलिए अपने स्वरतंत्र को संभालकर रखिए वरना शब्दों को ढूंढते रह जाओगे।

अब चलते-चलते एक दो छोटी-छोटी बातें आपको और समझा दें। जब ये बात समझ में आ गई तो स्वरतंत्र को थोड़ा-सा तैयार रखने की भी आवश्यकता है।

एक संचालक, सूत्रधार, वक्ता का गला हमेशा तैयार रहना चाहिए। क्योंकि जब आप युद्ध क्षेत्र में उतरेंगे तो तीर यहीं से छोड़े जाएंगे, शब्दों की गोलियाँ यही से दागी जाएगी-इसलिए गले को हमेशा साफ रखने का प्रयास करिये। हमेशा सुबह शाम गुनगुने पानी में नमक डालकर इससे गरारे करते रहिए ताकि गला बिल्कुल साफ रहे। जैसे गाने वाला व्यक्ति अपने गले को बचाता है वैसे ही आपको भी इसे गरमी, सरदी, से बचाकर रखना होगा।

अगर हो सके तो गवैये की तरह गले को साफ रखने के लिए खास स्वर में रोजाना 10-15 मिनट तक ऑ ओऽ का रियाज़ करते रहना चाहिए। गले को साफ रखने के लिए आप मिसरी और काली मिर्च का प्रयोग भी कर सकते हैं लेकिन अधिक मात्रा में नहीं। बस कभी-कभी इनका सेवन करें।

तो अब आपको ये बात भलीभांति समझ में आ गई कि गला ठीक है तो आप शब्दों का जादू बिखेर सकते हैं और आवाज़ को अपने प्रयासों से मधुर भी बना सकते हैं।

मधुर वाणी हमारे जीवन का दर्पण है। व्यक्तित्त्व का आभूषण है। जो मीठे बोलते हैं वे संसार में सबके दिलों पर राज करते हैं तो फिर आप इस गुण को अपनाकर इस दुनियां में मधुर शब्दों की बौछारें बिखेरने को तैयार रहें। याद रखिए आपके शब्द ही आपकी पहचान हैं। शब्दों का करिश्मा सदा संसार में रहा है। आज भी कायम है और ये शब्दों का चमत्कार आने वाले प्रत्येक युग में इसी प्रकार रहेगा।

संचालन शिल्प के सोपान

साक्षात्कार, परिचर्चा, परिसंवाद, विचार गोष्ठियाँ

आकाशवाणी और दूरदर्शन के कार्यक्रमों के संचालन की जब बात आती है तो हमारे सामने अनेकों विधाएँ उभरकर सामने आती हैं जिनके संचालन का भार हम पर डाला जाता है। इसके लिए आवश्यक है कि हम हर विधा की बारीकियों से परिचित हों। तो आइये थोड़ा उन विधाओं पर भी चर्चा कर लें। आपने अक्सर रेडियो या टी.वी पर भेंटवार्ताएँ सुनी होंगी। यानी किसी खास व्यक्ति से मुलाकात वो व्यक्ति अपने क्षेत्र की एक जानी पहचानी शखसियत होता है। उनसे आपको बातचीत करनी है तो हम कहेंगे कि किस तरह से उनसे साक्षात्कार लें। जैसे कोई व्यक्ति नौकरी के लिए इंटरव्यू देने जाता है तो उसे कितनी तैयारी करनी पड़ती है ठीक उसी प्रकार इंटरव्यू लेने वाले व्यक्ति को भी इसकी तैयारी करनी पड़ती है बल्कि यूँ कहना चाहिए कि उसे ये तैयारी करनी चाहिए। जब आप रेड़ियो या दूरदर्शन पर किसी व्यक्ति का साक्षात्कार लेंगे तो जाहिर है वो व्यक्ति जो आएगा अपने क्षेत्र की तो एक बड़ी ही हस्ती होगा जिसको आपने आमंत्रित किया है। आप किस तरह उसके जीवन, उपलब्धियाँ और सफलता की गाथा को लोगों तक पहुँचाएंगे?

साक्षात्कार करना कोई मामूली काम नहीं है। ये कोई कला से कम नहीं है। ये ही तो आपका फ़न है कि आप किस तरह उस व्यक्ति के अंदर छिपी प्रतिभा को प्रकट कराते हैं और किस तरह उसकी सारी जिंदगी के पहलुओं को पेश करते हैं। इसके लिए हमें थोड़ा होमवर्क जरूर करना चाहिए। मिसाल के तौर पर सबसे पहले तो हमें ये मालूम होना चाहिए कि जिस व्यक्ति का हम साक्षात्कार ले रहे हैं वो किस क्षेत्र का है। मसलन वो कवि है, शायर है, गायक है, राजनेता है, उद्योगपति है, समाजसेवी है, धर्मगुरु है, प्रोफेसर है, अध्यापक है वकील है, वैज्ञानिक है, फिल्म कलाकार है या थियेटर आर्टिस्ट, कार्टूनिस्ट है कमेंटेटर है, जानेमाने खिलाड़ी है, उच्च अधिकारी है, शिक्षाविद है, उद्योगपति है। यानी सबसे पहले तो हमें उस व्यक्ति के क्षेत्र का ज्ञान होना चाहिए। उसी के मुताबिक फिर कुछ प्रश्न तैयार करने चाहिए।

साक्षात्कार की भी सबसे अहम बात ये है कि आपकी शुरूआत बहुत ही प्रभावशाली होनी चाहिए। शुरू करते समय आपको उस व्यक्ति का परिचय देना होता

है। वो इतना आकर्षक होना चाहिए कि सुनने वाला आपका पूरा साक्षात्कार सुनने को मजबूर हो जाए। आपने सुना ही होगा 'Well begin is Half done' यानी शुरू आत अच्छी तो फिर आपकी हर बात अच्छी। शुरूआत को प्रभावी बनाने के लिए आप कोई अच्छा सा वाक्य चुने या फिर किसी कविता या शेर से आरंभ करें। अगर किसी संघर्षशील व्यक्ति का परिचय आप शुरू करेंगे तो आप कह सकते हैं।

हम अक्सर पत्थरों को तोड़कर पानी पीते हैं
बूंद भर अहसान मुझ पर समंदर का नहीं है।

''आज हम ऐसे ही जुझारू व्यक्ति से आपका परिचय करा रहे हैं जिनका जीवन हमें कठिनाइयों से लड़ना सिखाता है और हौंसले के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।'' ये आपके साक्षात्कार की शुरूआत हो सकती है।

इसी प्रकार मान लीजिए किसी युवा खिलाड़ी का साक्षात्कार आरंभ करना है जिसने खेल जगत में नये कीर्तिमान बनाये हैं और जिसने हमारे राज्य और देश का नाम रौशन किया है उसके लिए हम कह सकते हैं-

जो चट्टानों को चटका दे, रवानी उसको कहते हैं
जो दिल पर नक्श हो जाए, कहानी उसको कहते हैं
नहीं मालूम है तुमको, करिश्मा कौन होता है
पलट दे जमाने को जवानी उसको कहते हैं।

''आज हम आपकी मुलाकात ऐसे ही नौजवान खिलाड़ी से कराते हैं जिन्होंने राष्ट्र के गौरव को बढ़ाया है और उपलब्धियों के नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं'' अच्छा आरंभ हो जाने के बाद साक्षात्कार को आगे बढ़ाने के लिए हमें संबंधित व्यक्ति के लिए कुछ प्रश्न तैयार रखने चाहिए। प्रश्न बनाते समय इस बात का ध्यान रखें कि सवाल अधिक लंबे न हो, टू दी पाइंट बात हो। सवालों की भाषा बहुत ही सरल होनी चाहिए। सवाल अधिक उलझे हुए नहीं होने चाहिए। सवालों में उस व्यक्ति से संबंधित सभी बातें आ जानी चाहिए। जीवन, उपलब्धियाँ, शिक्षा भविष्य की योजनाएँ कोई और स्वप्न आदि-आदि।

साक्षात्कार करते समय आपको उस व्यक्ति से संबंधित क्षेत्र की तकनीकी जानकारी भी होनी चाहिए वरना तो आपके सवाल बहुत ही हास्यास्पद लगने लगेंगे। मिसाल के तौर पर मिस्टर 'जी' आकाशवाणी के एक बड़े अधिकारी थे वे एक बार एक प्रसिद्ध धाविका से साक्षात्कार लेने स्टूडियो में बैठे। उनका ज्ञान शायद खेलकूद में कम था और शब्दों की संयोजना भी ठीक से नहीं जानते थे पहला प्रश्न उन्होंने किया-

'तुम कबसे भाग रही हो?'

'बेचारी धाविका प्रश्न सुनते ही अचकचा गई, घबरा भी गई-इससे पहले कि वो संभलकर इस प्रश्न का उत्तर देती उन्होंने दूसरा प्रश्न दाग दिया-'अच्छा, ये बताओ, तुम सबसे पहले किसके साथ भागी थीं?'

हम जो रिकोर्डिंग कर रहे थे, हंसते-हंसते लोटपोट हो गए और बेचारी धाविका का तो हाल ही बेहद बुरा था। बड़ी मुश्किल से तैयारी करने के बाद वो साक्षात्कार रिकार्ड किया जा सका।

तो मतलब ये हुआ कि प्रश्नों का गठन तो अच्छा होना ही चाहिए साथ ही साथ आपको भाषा का ज्ञान होना चाहिए-शब्द विन्यास और वाक्य विन्यास का भी पूरा तजुर्बा होना चाहिए।

इसके अलावा साक्षात्कार में ये भी ध्यान रखना चाहिए कि आप प्रश्नकर्ता हैं, अपनी ओर से ज्ञान बघारने की आवश्यकता नहीं है। आपको अधिक से अधिक उस व्यक्ति को बोलने का अवसर देना चाहिए जिसका साक्षात्कार आप कर रहे हैं- आपका दायित्व ये है कि आप कार्यक्रम की सरसता और रोचकता बनाये रखें।

इसके अतिरिक्त ये भी ख्याल रखना है कि जब व्यक्ति बोल रहा हो तो उसे बीच में टोकना नहीं चाहिए, अनावश्यक दखलंदाजी नहीं करनी चाहिए। यदि उसे रोकना भी है तो उचित स्थान पर जहाँ उसका वाक्य समाप्त होता हो वहाँ शालीनता के साथ कहें ''माफ कीजिए, हम समय सीमा में बंधे हैं इसलिए कृपया हमारा अगला सवाल ये हैं'' कहकर साक्षात्कार को आगे बढ़ाया जा सकता है। साक्षात्कार करते समय ये भी महत्त्वपूर्ण है कि जो व्यक्ति साक्षात्कार दे रहा है उसके साथ आपका कोई वैचारिक टकराव नहीं होना चाहिए और माहौल ऐसा भी नहीं हो जाना चाहिए जिससे उस व्यक्ति को ये लगे कि आप उसे दबाने का प्रयास कर रहे हैं। साक्षात्कार करते समय या तो दो माइक होने चाहिए और उनको भी बहुत संतुलित ढंग से व्यवस्थित किया जाना चाहिए ताकि आपकी आवाज़ की सबसे अच्छी क्वालिटी को रिकार्ड किया जा सके। यदि कारणवश एक ही माइक पर बोलना पड़े तो उसे एक बार ही व्यवस्थित कर लेना चाहिए बार-बार उसे छेड़ना नहीं चाहिए वरना आपकी आवाज़ का संतुलन ठीक नहीं रहेगा। एक माइक होने पर आराम से बारी-बारी से उस पर बोलिए कहीं ऐसा न लगे कि माइक के लिए छीना झपटी हो रही है। प्रश्नों के साथ-साथ कुछ पूरक प्रश्नों की भी तैयारी रखनी चाहिए। कोशिश कीजिए, कम से कम शब्दों में, कम से कम समय में आप उस व्यक्ति के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल कर

सकें। प्रश्न करते समय कोई ऐसा व्यक्तिगत सवाल न करें जो सामने वाले व्यक्ति को नागवार गुजरे। साक्षात्कार लेते समय बीच में खांसे नहीं, और अपनी सांसों पर नियंत्रण रखें।

साक्षात्कार के समय आप जिस व्यक्ति का साक्षात्कार कर रहे हैं उसका कोई संस्मरण कोई घटना भी सुन सकते हैं लेकिन वो संक्षेप में होनी चाहिए। साक्षात्कार की कला हर व्यक्ति में नहीं होती है। ये प्रतिभा विरले ही लोगों में होती है। जो इस कौशल को जानते हैं वे महान से महान व्यक्ति का साक्षात्कार कर सकते हैं। आप कुछ उदाहरण अपने सामने रखिए। जावेद अख़तर और अटल बिहारी वाजपेयी या सईद नक़वी और बेनज़ीर भुट्टो के साक्षात्कार लोगों को अब भी याद हैं।

राजदीप सरदेसाई, एम.जे अकबर, प्रणवराय, बरखादत्त, विनोद दुआ, प्रभु चावला, नासिरा; आदि अनेक लोग हैं जो इस क्षेत्र में अपना एक अलग स्थान रखते हैं।

साक्षात्कार का अंत भी बहुत अच्छा होना चाहिए। हमें साक्षात्कार उस बात पर समाप्त करना चाहिए जहाँ दर्शक या श्रोता उस व्यक्ति के जीवन की उपलब्धियों को अपने मन से स्वीकार कर स्वयं में एक उत्साह और प्रेरणा महसूस करता हो, बस वही सफल साक्षात्कार है।

साक्षात्कार की कला के पश्चात संक्षेप में कुछ और विधाओं का जिक्र करना भी हम जरूरी मानते हैं। आपने अक्सर परिचर्चा या परिसंवाद या विचार गोष्ठियाँ सुनी होंगी। इनका संचालन भी बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

साक्षात्कार की कला में और इन विधाओं में मूल अंतर ये है कि साक्षात्कार में जहाँ केवल दो व्यक्तियों के बीच बातचीत होती है वहीं परिचर्चा या गोष्ठी में दो से अधिक लोग होते हैं। इन सब विधाओं में संचालक को पारंगत होना चाहिए। परिचर्चा में किसी एक विषय पर चर्चा करने के लिए उस विषय के विद्वान भाग लेते हैं तो साफ जाहिर है कि संचालक या मॉडरेटर को भी उस विषय का विद्वान होना जरूरी होता है वरना वो इतने महारथी लोगों के बीच किस तरह संचालन कर सकता है।

गोष्ठियों, परिचर्चाओं के संचालन के लिए हमें ध्यान रखना हौता है कि समय को संबंधित लोगों के बीच बाँट दिया जाए और फिर उसी के अनुरूप उस परिचर्चा में लोगों से विचार-विमर्श कराना चाहिए। संचालक का दायित्व ये है कि वो प्रतिभागियों को विषय से हटने नहीं दे और अगर वो ऐसा करें तो फिर से उचित स्थान पर रोककर फिर से दिशा निश्चित करें।

इन विधाओं का संचालन करते समय ओवरलेपिंग बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। जहाँ तक हो सके ऐसे कार्यक्रमों में सीधे साफ सरल वाक्यों का उपयोग करें और विषय को अधिक उलझाने का प्रयास न करें।

परिचर्चाओं और गोष्ठियों के संचालन में शालीनता और गंभीरता का भी पूरा -पूरा ध्यान रखें। जहाँ अधिक लोग हों वहाँ पर सबको समान रूप से बोलने का अवसर दें अपने विचार वक्ताओं पर थोपने का प्रयास न करें। आपके संचालन से सौम्यता और शालीनता झलकनी चाहिए। ऐसा महसूस नहीं होना चाहिए कि प्रतिभागी आपस में उलझ रहे हैं, लड़ झगड़ रहे हैं। अपने स्थान से बार-बार हिलना डुलना भी नहीं चाहिए। माइक का बार-बार इधर-उधर नहीं सरकाना चाहिए। परिचर्चाओं और गोष्ठियों में आलेख नहीं लिखे जाते हैं, केवल कुछ बिंदु कागज पर नोट कर लेने चाहिए और चर्चा के दौरान उन्हीं पर विस्तार से बोलना चाहिए। कागज की फड़फड़ से भी बचना चाहिए। बीच में खांसना, खंखारना नहीं चाहिए। परिसंवाद को एक विषय पर विभिन्न लोगों द्वारा उनके विचार लिखित में भी आमंत्रित किये जाते हैं। इन विभिन्न विचारों को एक सूत्र में पिरोकर उन्हें रोचक ढंग से प्रस्तुत करना भी संचालन विधा का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। विषय की जानकारी के साथ, जो विचार आए हैं। उनकी मुख्य बात उठाकर उसे अपनी कंपियरिंग में जोड़कर उस प्रोग्राम को तैयार किया जाता है। इसमें भी आरंभ और अंत अत्यंत प्रभावशाली होते हैं। विषय का परिचय ही तो मुख्य बात है। बस वो ही आपको करना है।

तो निष्कर्ष में निकला कि संचालन के विभिन्न सोपानों में शब्द शिल्प, शब्द संयोजन, शब्द कौशल, वाक्‌शक्ति और वाक्‌चातुर्य की ही भूमिका सबसे अधिक रहती है। एक सफल सूत्रधार इस भूमिका को बहुत ही प्रभाशाली ढंग से निभाता है और लोग उसकी आवाज के दीवाने बन जाते हैं और कहते हैं।

''अपनी आवाज में दुनियाँ को डुबो दूँ लेकिन
तुमसे मिलती हुई आवाज़ कहाँ से लाऊँ''

क्या करें : क्या न करें ?

ये बड़ा अहम प्रश्न है। एक एन्कर या सूत्रधार को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। अगर ये बात हमारे समझ में आ जाती है फिर आपके इस कैरियर में आपकी सफलता सौ फीसदी तय है। हमारे यहाँ जो लोग इस क्षेत्र में आते हैं या आना चाहते हैं उन्हें ये अक्सर मालूम नहीं रहता है कि उन्हें कब क्या, कैसे करना है। आइये कुछ इन्हीं बिंदुओं पर चिंतन मनन करें ताकि इस विषय को और संचालन के इस शिल्प को हम गहराई के साथ समझ सकें।

आइये पहले ये जान लें कि यदि हम आकाशवाणी के कार्यक्रमों का संचालन कर रहे हैं तो हमें किस तरह उस विषय के अंदर बैठना है। पहले तो हमें ये मालूम होना चाहिए कि आकाशवाणी पर विभिन्न आयु वर्ग के श्रोताओं के लिए कार्यक्रम होते हैं, हमें उन्हीं के अनुरूप अपना प्रस्तुतिकरण, शब्दावली और शब्दों का संचालन करना है ताकि वे लोग अपने बारे में प्रसारित कार्यक्रमों का अधिक से अधिक आनन्द ले सकें और उनका ज्ञान भी बढ़ सके। मिसाल के तौर पर आपको नन्हें-मुन्ने बच्चों के लिए कार्यक्रम संचालन करना है तो आपको उनके साथ आत्मीय संबंध बनाकर कार्यक्रम को पेश करना है। इसीलिए बच्चों के कार्यक्रमों में अक्सर जो संचालन करते हैं उन्हें 'भैया-दीदी' बनाकर प्रस्तुत किया जाता है कभी-कभी दादी या नानी भी उन्हें कुछ सुनाती है तो बच्चों की उसमें रोचकता बढ़ती है। बच्चों के कार्यक्रम में आप मुहावरों और कहावतों का प्रयोग अधिक से अधिक करेंगे तो वे इसमें अधिक रुचि लेंगे आपको हमेशा उनके साथ जुड़कर अपने कार्यक्रम को आगे बढ़ाना चाहिए।

इसी प्रकार विद्यालयों और विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयी छात्रों के कार्यक्रम भी आकशवाणी द्वारा प्रसारित किये जाते हैं। ऐसे कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने के लिए आपके पास ज्ञान का विशाल भंडार चाहिए। ही साथ जिस विषय पर आप कार्यक्रम का संचालन कर रहे हैं उस विषय पर भी आपका पूर्ण अधिकार होना चाहिए। आपको शिक्षा क्षेत्र की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। आधुनिकतम तकनीक जो शिक्षा जगत में आ रही है उनकी जानकारी भी बहुत आवश्यक है।

इसी तरह ग्रामीण श्रोताओं के लिए प्रोग्राम आपको प्रस्तुत करना है उसमें

भी बहुत अधिक अपने मन के साथ प्रस्तुत करने की बात ध्यान में रखनी चाहिए। इन कार्यक्रमों में आपको क्षेत्रीय बोली का आवश्यक ध्यान रखना चाहिए। भाषा इतनी सरस और सरल होनी चाहिए कि श्रोता आपको सुनने के लिए बेताब रहे और उसे आपके कार्यक्रम के प्रसारण का इंतजार रहे। किसान भाइयों के लिए या ग्रामीण महिलाओं के लिए कार्यक्रमों में लोकोक्तियों का प्रयोग करें और अगर वो उनकी आंचलिक भाषा में हो तो फिर क्या कहना। मिसाल के तौर पर खेती, गृहस्थी कार्यक्रम में अगर आप कहें 'आभर राच्यो, मेंह माच्यो' तो वे समझ जायेंगे बरसात के बारे में कहा जा रहा है।

इसी प्रकार कहावतों का प्रयोग करें जैसे-

भूखां भावे बोर, तिसाया काकड़ी
हार्‌या को बिसराम तमाखू बापड़ी।

ये बात आप करेंगे उन्हें लगेगा जैसे कोई उन्हीं का साथी उनसे बात कर रहा है। आप कहेंगे-

गेलो भलो न कोस को, बेटी भली न एक
कर्जो भलो न बापको, साहेब राखे टेक।

इसी तरह ग्रामीण परिवेश की बात करते समय जब आप कहते हैं-

चालबो सड़क को, चाहे फेर ही हो
बैठबो भायां को चाहे बैर ही हो
छाया तो पेड़ की चाहे कैर ही हो
धीणो तो भैंस को चाहे सेर ही हो
रोटी तो मां की चाहे जैहर ही हो।

तो लगता है जैसे चौपाल पर बैठकर आप कोई ज्ञान सभा कर रहे हैं। आप नीति की बातें भी समझाते हैं-

डूबैला भाई तीन जणा
पूँजी थोड़ी, बिणज घणा,
ताकत थोड़ी क्रोध घणा,
आमद थोड़ी, खरच घणा।

कहने का मतलब ये है कि आंचलिक शब्दों, कहावतों, मुहावरों का प्रयोग, आपके संचालन में आत्मीयता पैदा करते हैं और उससे प्रभाव भी बहुत अधिक पैदा होता है।

इसी प्रकार वरिष्ठ नागरिकों के लिए या बुजुर्गों के लिए कार्यक्रम भी प्रसारित किये जाते हैं उन में हमें शालीनता, गंभीरता, और सुंदर शब्द शिल्प का ध्यान रखना चाहिए।

जब हम बुजुर्गों का कार्यक्रम करते हैं तो इसमे उनके प्रति मान, सम्मान, आस्था और इज्जत फलक भी चाहिए। हमें ये कार्यक्रम उनकी महत्ता का बखान करते हुए कराने चाहिए। जैसे हम कह सकते हैं-

मैं जब चलूं तो, ये दौलत भी साथ रख देना,
मेरे बुजुर्ग, मेरे सर पे हाथ रख देना।

हमें ये महसूस करना है कि इनका ज्ञान, इल्म अनुभव हमारे लिए धरोहर है और इनकी खिदमत करके ही ये सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है-

खुद से चलकर नहीं ये तर्जे सुखन आया है,
पांव दाबे हैं बुजुर्गों के तो फ़न आया है।

और भी अनेक प्रकार के कार्यक्रम आकाशवाणी से होते हैं हमें उन कार्यक्रमों के स्कोप का पूरा ज्ञान होना चाहिए। महिलाओं के लिए, युवाओं के लिए, अन्य जनसाधारण के लिए आने को कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है उन सबको हमें अच्छे शब्दों के सूत्र में पिरोकर प्रस्तुत करना आना चाहिए।

एक विशेष प्रकार का श्रोता और दर्शक वर्ग आजकल बहुत विकसित हो रहा है, कोई खेल प्रेमियों का, आकाशवाणी और दूरदर्शन से अनेक खेलों का आँखों देखा हाल अक्सर प्रसारित होता है। खेलकूद की कमैंट्री के लिए मेरी नज़र में एक नाम पूरे देश में सर्वोपरि आता है जिसने सही मायने में खेलकूद के प्रति लोगों में कमैंट्री सुनने की जिज्ञासा और शौक पैदा किया, वो नाम है पद्म श्री जसदेव सिंह का। उनकी हॉकी की कमैंट्री एक जादूगरी हुआ करती थी। गेंद से भी तेज रफ्तार के साथ उनकी आवाज ऐसी लपकती थी कि सुनने वालों के कान खड़े हो जाते थे और वो महसूस करते थे कि जैसे जसदेव सिंह की आवाज़ के साथ वो भी खेल के मैदान में ही दौड़ रहे हैं। इतना सजीव और जीवंत विवरण वो खेल का करते थे।

मेरे लिए ये गर्व की बात है कि मैंने उनके समय अनेकों बार राष्ट्रीय समारोहों का आँखों देखा हाल प्रसारित किया है और मुझे ये कहने में कोई हिचक नहीं है कि जसदेवसिंह और कमैंट्री दोनों एक दूसरे के पर्याय बन चुके हैं।

इसलिए ये आवश्यक हो गया है कि हम खेलकूद की कमैंट्री के बारे में भी अवश्य विचार करें और गौर करें कि एक खेल कमैंटेटर को किस तरह खूबी के साथ इस काम को अंजाम देना चाहिए। उसमें क्या खूबियाँ होनी चाहिए और

उसे क्या करना चाहिए। खेल का आँखों देखा हाल, उस विषय के विशेषज्ञ देते हैं और संसार में लाखों करोड़ों लोग इसे सुनते हैं। शब्दों के माध्यम से खेल का जीवंत विवरण या आँखों देखा हाल प्रस्तुत करना अपने आप में एक बहुत मुश्किल कार्य होता है लेकिन अच्छे कमैंटेटर इसे इस जादूगरी के साथ पेश करते हैं कि हम मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। इस कमैंट्री में गति की प्रधानता होती है- जिस रफ्तार से खेल चलता है कमैंट्री भी उसी गति के साथ चलती रहती है। अब कुछ बिंदुओं पर गोर करें। सबसे पहले तो विवरण देने वाले को उस जगह की ऐतिहासिक, भौगोलिक स्थिति आदि की पूरी जानकारी होनी चाहिए जहाँ पर मैच या खेल खेला जा रहा है।

इसके बाद कमैंटेटर को टीमों के कप्तान और खिलाड़ियों के बारे में पूरा ज्ञान होना चाहिए। खिलाड़ियों के खेलने की पोजीशन का पता होना चाहिए। ऐसा होगा तो वो सबका परिचय दर्शकों श्रोताओं से आराम से करा सकेगा।

कमैंटेटर को कप्तानों के और खिलाड़ियों के नाम भी मालूम होने चाहिए ताकि खेल के दौरान नाम लेकर उनके बारे में कुछ बोल सकें। ये भी ज्ञान होना चाहिए खिलाड़ी कैसे खेलता है। उसकी तकनीक क्या है-बल्ला कौनसे हाथ से पकड़कर बैटिंग करता है-कहाँ गेंद जाती है, कैसे रन बनते हैं आदि का भी पूरा ज्ञान होना चाहिए। हॉकी फुटबाल के मैच में कमैंटेटर जब अपनी तरफ से खेल या खिलाड़ियों का मूल्यांकन करता है, अपना समीक्षात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है तो वो और अधिक प्रभावशाली माना जाता है।

एक कमैंटेटर के सहारे ही हम पूरा मैच अपने रेडियो सेट पर अपने कानों से देखते हैं।

आपको सभी खेलने वाले खिलाड़ियों से परिचित होना चाहिए ताकि कमैंट्री करने में आसानी हो। कप्तान, खिलाड़ी, रैफ़री, अंपायर आदि सभी के नामों से भी हमें परिचित होना चाहिए।

जिस खेल की कमैंट्री की जा रही है उसका इतिहास भी मालूम होना चाहिए ताकि बीच-बीच में समय मिलने पर ये जानकारी भी श्रोताओं को देते रहे।

खिलाड़ियों का तुलनात्मक विवेचन भी कमैंट्री में रुचि और उत्साह उत्पन्न करता है और नई पीढ़ी के लिए ज्ञानवर्धक भी होता है।

कमैंटेटर को निष्पक्ष होना चाहिए। किसी पक्ष के लिए आपको भावनात्मक होने की आवश्यकता नहीं है। जो देख रहे हैं और जो हो रहा है बस उसका विवरण पूरी ईमानदारी और प्रभावशाली शैली के साथ करना चाहिए। पक्षपात पूर्ण

कमैंट्री किसी भी अच्छे कमैंटेटर को शोभा नहीं देता और फिर इसका प्रभाव श्रोताओं, दर्शकों पर भी अच्छा नहीं पड़ता।

खेलकूद की कमैंट्री के दौरान जो अंग्रेजी प्रचलित नाम हैं उन्हीं के उपयोग को करना चाहिए जैसे हॉकी, फुटबॉल, क्रिकेट, टेबिल टेनिस, बास्केट बॉल आदि। कभी भी इनका अनुवाद करने की कोशिश मत करिए अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने का डर रहेगा। क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग श्रोताओं के लिए ठीक नही रहता है। हमेशा एक बात को अपने दिमाग के अंदर रखिए, आप कमैंट्री सुनने वालों के लिए कर रहे हैं विद्वानों, आलिओ, भाषाविदों, पंडितों, मौलवियों के लिए नहीं कर रहे हैं। खेल का निर्णय सुनाने में अत्यधिक देर नहीं करनी चाहिए। लोग उसी का बड़ी बेकरारी से इंतजार करते हैं इसलिए अंत में विवरण लंबा मत करिये फ़ौरन निर्णय सुनाइये। ताकि श्रोता या दर्शक उसका भरपूर आनंद ले सकें। एक और घटना की भी चर्चा करें जिसको संचालक या सूत्रधार को निभाना पड़ता है। भावना के क्षेत्र में जितनी खुशी महत्त्वपूर्ण है उतना ही गम भी अहम होता है क्योंकि

दर्द होता नहीं सभी के लिए
है ये नेमत किसी किसी के लिए

इसलिए ऐसा कहा जाता है मनोवैज्ञानिक रूप से आदमी ट्रेजडी के लिए भी उतना ही तैयार रहता है जितना खुशी के लिए इसलिए गम की घटनाओं का भी संचालन पसंद किया जाता है।

मैंने एक जगह बताया है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निधन पर उनकी शवयात्रा का आँखों देखा हाल पूरे राष्ट्र को आँसुओं में डुबो गया था।

अब प्रश्न ये है कि हमें इसकी तैयारी भी करनी पड़ती है वो कैसे करें। किसी महान् व्यक्ति के निधन पर जब आँखों देखा हाल प्रसारित हो तो वो कैसा होना चाहिए। मैंने राजस्थान के लोकप्रिय मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया की शवयात्रा का आँखों देखा हाल घटना स्थल पर जाकर किया था, उसे रिकोर्ड करके पूरे केन्द्रों से प्रसारित भी किया गया था वो दु:ख आज भी लोगों के जेहन में कैद है।

शवयात्रा का आंखों देखा हाल सुनाने के लिए एक तो आपके पास दिवंगत व्यक्ति का पूरा जीवन वृत्त होना चाहिए उसकी सारी घटनाएँ होनी चाहिए। उनके जीवन से जुड़े संस्मरणों की सामग्री आपके पास होनी चाहिए। कुछ ऐसे लोगों की सूची आपके पास होनी चाहिए जो उनसे जुड़े हुए रहे हैं और जो उनके बारे में आपके पास आकर माइक्रो फोन पर कुछ बोल सकें। इसके अलावा आपके बोलने में लहजे में गंभीरता और शालीनता होनी चाहिए। बोलते समय शब्दों का

चयन सोच समझ कर करना चाहिए। घटना की गंभीरता और वातावरण को देखते हुए आपका अंदाज बेहद शालीन होना चाहिए। ऐसे समय के लिए उपयुक्त कविताएँ शेर या उद्धरण आपके पास होने चाहिए। मिसाल के तोर पर-

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सौ बरस का है पल की खबर नहीं।

या फिर आप जीवन की क्षण भंगुरता पर कह सकते हैं-

क्या भरोसा है ज़िंदगानी का
आदमी बुलबुला है पानी का

इस तरह की शालीन और गंभीर शब्दावली के साथ आप इस तरह के गमों के मौकों पर भी सफलता के साथ कमैंट्री कर सकते हैं और भी अनेकों अवसर है जिनका जिक्र हम पूर्व में कर चुके हैं शादी, विवाह के मौके आदि। कहने का मतलब ये है कि जैसा मौका हो उसी के अनुसार आपको अपने संचालन को बनाना है हर चीज़ मौके पर ही अच्छी लगती है। शब्दों का बर्ताव भी अवसर के अनुसार ही अच्छा लगता है। बे मौके की बात करने वाले व्यक्ति को मूर्ख समझा जाता है इसलिए जैसा क्षण हो, आपके मुख से वैसे ही शब्द उच्चरित होने चाहिए। इसीलिए गुणी लोगों ने कहा है कि शब्दों का प्रयोग देखभाल कर करें तो बेहतर होगा।

दूल्हा दुल्हन को गठजोड़ा बांधकर यदि पंडित कह दें ''राम नाम सत्य है'', तो बताइये उस महापंडित का उस खुशी के मौके पर लोग क्या हाल करेंगे। जबकि बात सही कही है उसने इसमें क्या गलत है, राम का नाम सदा सत्य है मगर नहीं वो अवसर नहीं है। ये वाक्य तो अर्थी के आगे ही बोला जाये तो ठीक लगता है। इस उदाहरण से आपको ये बात समझ में आ गई होगी कि शब्द समय के अनुसार कहें। महान कवि वृंद ने अवसर की इसी उपयुक्तता को अपने दोहे में बहुत अच्छी तरह से हमें बताया है वो कहते हैं-

नीकी पै फीकी लगे, बिन अवसर की बात
जैसे बरनत युद्ध में रस सिंगार नहीं भात।

तलवारों की झंनकारों के बीच यदि आप नायिका के नखशिख की बात करेंगे वो किसी को भी नहीं सुहायेगी। इसीलिए तो ये कहा गया है-

बोलिये तो तब,
जब बोलबे की सुधि होय,
सभा मांही बोले तो
विचार कर बोलिए।

बोलने से पहले उस पर विचार अवश्य कर लेना चाहिए। खूब सोच समझकर अपने शब्दों को मुंह से बाहर आने दीजिए। क्योंकि यदि कोई गलत शब्द मुँह से निकल गया तो फिर हो सकता है, उसका पश्चाताप करना पड़े। हमेशा याद रखिए, गांठ बांध लीजिए-

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताया
काम बिगारे आपणो, जग में होत हंसाय।

हमने आपको अभी तक ये समझाया कि संचालन के समय क्या करना चाहिए। लेकिन कुछ बातें ऐसी भी हैं जो नहीं करनी चाहिए। उन पर आपको आवश्यक गौर करना पड़ेगा। क्योंकि जो चीजें नहीं करने के लिए कहा जा रहा है वो यदि आपने जीवन में अपना ली तो समझिए आप सफलता के मूलमंत्र को समझ गए।

सबसे पहली बात तो ये कि आपको कठिन शब्दों से कठिन भाषा से परहेज़ करना चाहिए। वाक्य बड़े-बड़े न बनाये, अपनी बात को रोचक और सरल ढंग से कहें।

आम जनता के कार्यक्रमों में अपने ज्ञान या पांडित्य का प्रभाव न डालें। उन्हीं के अनुसार बातचीत करें तो उत्तम रहेगा।

बोलते समय चेहरे को बिल्कुल मत बिगाड़िये। अपने हाव-भाव और मुख मुद्रा को मुस्कुराहट से परिपूर्ण रखिए। दर्शकों और श्रोताओं से दूरी न रखें उनके अधिक से अधिक निकट और आत्मीय होकर कार्यक्रम करें। शब्दों का गलत उच्चारण बिल्कुल भी न करें, हास परिहास का उपयोग करते समय पूर्ण सावधानी बरते।

चाहे आप रेडियो में कार्यक्रम कर रहे हो या मंच पर बोल रहे हैं माइक्रोफोन को अपना शत्रु न समझे उसे अपना मित्र बनाने की कोशिश करें। किंतु यदि आपका गला बैठ रहा है या अन्य कोई तकलीफ है तो ऐसे मौके पर आप न बोलें तो अधिक उपयुक्त रहेगा।

कभी किसी की व्यक्तिगत आलोचना नहीं करना चाहिए।

अपने क्षेत्र के किसी भी व्यक्ति को कभी नीचा, अपने से कम न मानें, सबकी कद्र करें तो लोग आपकी भी कद्र अपने आप करने लगेंगे। कार्यक्रम में कभी देर से न जायें, हमेशा समय की पाबंदी का ध्यान रखें। अगर आप वक्त के साथ चलेंगे तो वक्त भी आपके साथ रहेगा, वरना ये बात याद रखिए-

वक्त बरबाद करने वालों को,
वक्त बरबाद करके छोड़ेगा।

संचालन में युगलबन्दी

संचालन का शिल्प एक ऐसी संपत्ति है जिसके सहारे आप अपने जीवन में वो सब कुछ अर्जित कर सकते हैं जिसका आपको अरमान है, जिसे पाने की आप ख्वाहिश करते हैं। वैसे तो ये बात तय है कि इंसान की ख्वाहिशें कभी पूरी नहीं होती हैं इसी बात को ग़ालिब ने कहा है-

''हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी, कि हर ख़्वाहिश पे दम निकले
बहुत निकले मेरे अरमान, लेकिन फिर भी कम निकले।''

लेकिन फिर भी जो शिल्प आज मेरे में है, वो एक बहुत बड़ा फन है। ये एक इल्म है जिसे बहुत मेहनत मशक्कत से हासिल किया जाता है। आवाज़ के फ़न के बारे में मशहूर चिंतक और लेखक हज़रत शेख सादी ने कहा है ''आवाज़ यदि अच्छी है और वो मीठे होठों, मुंह और कन्ठ से निकलती है तो वो दिल को लुभाती है।''

अब आप ही सोचिए आपकी आवाज़ अगर लुभावनी है तो आप कितने लोगों के दिलों पर राज कर सकते हैं। इसीलिए हम बार-बार ये कहते हैं कि अपनी आवाज़ को ऐसा मीठा बनाइये कि आपके शब्दों की रौशनी से ये सारा संसार जगमगाता हुआ दिखाई देने लग जाए। तो आइये संचालन के एक और दिलचस्प पहलू पर विचार करें और देखे कि ये किस तरह किया जा सकता है।

आपने इन दिनों दूरदर्शन पर, मंच पर और कभी-कभी रेड़ियो प्रोग्राम में देखा होगा कि दो लोग मिलकर किसी कार्यक्रम का संचालन कर रहे हैं। जब दो लोग मिलकर इसे करेंगे तो इसे कहेंगे जुगलबंदी। संगीत में जिस तरह गाने वाले या बजाने वाले दो-दो मिलकर युगलबंदी करते हैं। उसी तरह आजकल संचालन के क्षेत्र में भी इसका प्रचलन काफी बढ़ गया है कि दो लोग मिलकर उस कार्यक्रम में चार चांद लगाने का प्रयास करें जिसके लिए उन्हें संचालन का कार्यभार सौंपा जाता है।

संचालन की युगलबंदी में अक्सर एक पुरुष और एक महिला मिलकर इस काम को अंजाम देते हैं और कार्यक्रम को अधिक रुचिकर बनाने का प्रयास करते हैं। वैसे तो दो लोग मिलकर जब कार्यक्रम का संचालन करते हैं तो बहुत सहूलियत

हो जाती है और श्रोता भी इसे बहुत ही आनंद से सुनते हैं-यानी एक टिकिट में दो मजे आराम से इसमें लिये जा सकते हैं। श्रोता या दर्शक एक साथ दो आवाज़ों का अंदाज सुनता है, दोनों की अलग-अलग भावभंगिमाओं का आनंद लेता है और दोनों के ज्ञान का आनंद लेता है और दोनों के ज्ञान का भरपूर लाभ उठाता है क्योंकि दोनों इस बात का प्रयास करते हैं कि किस तरह कार्यक्रम को अधिक रोचक बनाया जाए। ये प्रयोग अपने आप में बहुत अच्छा भी है और अधिकतर कार्यक्रमों में दो संचालक जब मिलकर संचालन करते हैं तो कार्यक्रम में एक नई जान-सी आ जाती है। दो लोग मिलकर करेंगे तो वे उसमें एक विविधता लाने की कोशिश करेंगे। इस जुगलबन्दी में एक फ़ायदा ये होता है कि अगर कोई एक व्यक्ति कुछ कहते हुए अटक जाए या भूल जाए तो दूसरा उसे फौरन संभाल सकता है।

इसके अलावा कार्यक्रमों के विषयों को अलग-अलग अंदाज में जब दो मिलकर पेश करते हैं तो श्रोता या दर्शक ज्ञान लाभ भी काफी कर सकते हैं।

दोनों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो कुछ वो कह रहे हैं कहीं उसकी पुनरावर्ती बार-बार दोहरान तो नहीं हो रहा है। दोनों को अपने बोलने के बिन्दु पहले से तय कर लेने चाहिए और उन्हीं के आधार पर कार्यक्रम का संयोजन या संचालन करना चाहिए।

दोनों की समझ और ज्ञान का धरातल भी एक-सा होना चाहिए। अगर अंतर होगा तो फिर वो कभी आपके संचालन में साफ झलकेगी और बजाय कार्यक्रम को रोचक बनाने के आप इस तरह उसका सर्वनाश ही करेंगे। बोलते समय या तो दो माइक रखें या फिर बारी-बारी से अपनी बात, माइक पर आकर कहें, ऐसा नहीं लगना चाहिए कि आप माइक के लिए एक दूसरे पर झपट रहे हैं। दोनों की बातों में तालमेल और तारतम्य जरूर आना चाहिए अगर विषय से हटकर बात करेंगे तो फिर आप एक अच्छे कंपियर नहीं कहलायेंगे। संचालन के लिए माइक पर जाने से पूर्व अच्छी तरह सारे बिंदुओं पर विचार-विमर्श कर लेना चाहिए और हो सके तो उसका पूर्वाभ्यास कर लें अधिक अच्छा रहेगा।

आप जब मंच पर आँयें तो बहुत शालीनता से आएं और अपना संचालन आरंभ करें जब एक व्यक्ति की बात पूरी हो जाए तभी आप अपनी बात आरंभ करें तो उचित रहेगा। जुगलबंदी में एक दूसरे की खिंचाई करने का प्रयास नहीं करना चाहिए बल्कि पूरे तालमेल और संतुलन के साथ आपको इस काम को अंजाम देना चाहिए।

जुगलबंदी के संचालन में आपका व्यवहार एक-दूसरे के प्रति मित्रवत और आत्मीय होना चाहिए ताकि श्रोताओं पर भी एक अच्छा प्रभाव पड़ सके। संचालन करते समय बहुत पास-पास भी न रहें और बहुत दूर भी न जायें।

जब दो लोग मिलकर संचालन कर रहे हों तो वातावरण को बोझिल न बनायें, थोड़ा हल्का-फुल्का माहौल बनाये रखें, बीच-बीच में चुटकुले लतीफ बगैरह भी कहते रहें।

जुगल बंदी संचालन में हमेशा कुछ सावधानियाँ भी बरतनी चाहिए। माइक से दूर न रहें। उचित दूरी बनाकर अपनी बात कहें।

एक दूसरे का परिचय भी बहुत शालीनता के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।

व्यक्तिगत नौंक-झौंक के बजाय कुछ ऐसी तरह की बातचीत करें जिससे सभी दर्शक और श्रोता आपके साथ आपकी बातचीत का आनन्द ले सकें।

जब दोनों मिलकर बात करें तो उसमें किसी प्रकार की ओवर लेपिंग नहीं करनी चाहिए। जुगलबंदी संचालन में एक दूसरे के पूरक बनकर आपको संचालन करना है न कि आप अपनी ही बात काटकर अपनी कोई अलग स्थिति स्पष्ट करने का प्रयत्न करें कहने का मतलब ये कि संचालन में भी युगलबंदी की विधा एक सफल विधा है और जब कभी आपको इसका अवसर मिले उसका भरपूर फायदा उठाइये और युगलबन्दी में भी अपनी प्रतिभा की पहचान बनाकर सफलता प्राप्त करें।

जब संचालन में जुगलबन्दी की बात चल पड़ी है तो आपको ये भी बता दें कि आजकल एक ऐसी विधा भी प्रसिद्ध होती जा रही है जिसमें दो लोग मिलकर यदि काम करें तो बहुत आसानी हो जाती है। मैं आपको अंत्याक्षरी के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ। इन दिनों आप रेड़ियो, दूरदर्शन या मंच पर काफी अंताक्षरी के कार्यक्रम देख रहें होंगे, सुन रहे होंगे। ये कार्यक्रम बहुत लोकप्रिय भी होते जा रहे हैं। पुराने ज़माने में विद्यार्थियों के जब पाठशालाओं में अंताक्षरी कार्यक्रम होते थे वो छात्र-छात्राएँ बहुत चाव से उसमें हिस्सा लिया करते थे। आप जानते हैं उसकी शुरूआत कैसे होती थी? हम बताते हैं-

''बैठे-बैठे क्या करें, करना है कुछ काम
शुरू करें अंताक्षरी लेकर हरि का नाम''

और फिर आंरभ होती थी, दौहों, कविताओं की साहित्यिक अंताक्षरी, जिसका उद्देश्य था विद्यार्थियों को साहित्य के प्रति लगाव पैदा हो। उन्हें कविताएँ दोहे, खूब याद हो जाएँ और इससे उनकी स्मरण शक्ति का विकास भी होता था।

आजकल ये विधा, रेडियो, दूरदर्शन पर भी अपनी सफलताओं के नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है। राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इन कार्यक्रमों के संचालकों ने अपना नाम रौशन किया है। इन दिनों खास तौर से संगीत अंताक्षरी का प्रचलन बहुत अधिक है। प्रत्येक चैनल पर आपको फिल्मी गीतों की अंताक्षरी की धूम सुनाई देती है। अनु कपूर, पल्लवी जोशी, दुर्गा जसराज, राजेश्वरी, शाज, अमान अयान, सोनू निगम आदि अनेक कलाकारों ने इस कार्यक्रम के संचालन में अपना यश और मान अर्जित किया है और जाहिर है आर्थिक रूप से तो ये कार्यक्रम उनकें लिए फायदेमंद सिद्ध हुए ही हैं।

अब प्रश्न ये है कि दो लोग मिलकर इन संगीत अंताक्षरी कार्यक्रमों का संचालन कैसे कर सकते हैं। सीधी-सी बात है कि इसके लिए उन्हें संगीत का बुनियादी ज्ञान तो होना बहुत आवश्यक है ही, साथ ही साथ शब्दों पर भी उनका अधिकतर होना चाहिए ताकि गाने के साथ-साथ वे प्रभावशाली ढंग से उसका संचालन भी कर सकें। उनकी आवाज़ गाने में और बोलने में दोनों में बहुत अच्छी होनी चाहिए। गीत उन्हें बहुत याद होने चाहिए ताकि जहाँ भी कोई प्रतियोगी अटके वो गाकर उसे आगे बढ़ा सकें। इसके लिए आपको एक सुलझा हुआ तारतम्य भी अपने बीच और श्रोताओं दर्शकों के साथ रखना होगा ताकि कार्यक्रम को सुन्दर और सुचारू रूप से चलाया जा सके।

संगीत अंताक्षरी के भी विविध चरण होते हैं जैसे सीधे गानों को लेकर अंताक्षरी होती है। कभी-कभी एक ही गीतकार के गानों पर भी हो सकती है। किसी शीर्षक को लेकर भी गानों की अंताक्षरी की जा सकती है जैसे आँख, जुल्फ, प्यार, वतन, गोरी, गाँव, पिया आदि शीर्षकों पर अंताक्षरी की जाती है। इसी प्रकार गीतों के बारे में कुछ सवाल भी किये जा सकते हैं। कभी-कभी 'युग' को भी अलग-अलग विभाजित किया जा सकता है जैसे साठ के दशक के गीत या फिर 70, 80 के दशक के गीत आदि को लेकर संगीत अंताक्षरी आयोजित की जा सकती है। लता, मोहम्मद रफी, किशोर, मुकेश, आशा भौंसले, इन कलाकरों के गाये गीतों पर भी अंताक्षरी तैयार की जा सकती है। इसमें एक राउन्ड, लोकसंगीत, सुगम संगीत शास्त्रीय संगीत का भी रखा जा सकता है।

संगीत अंताक्षरी के अतिरिक्त साहित्यिर्क अंताक्षरी भी होती है जिसमें गीत, कविताएँ, दोहे, चौपाइयाँ सबरियाँ आदि पढ़े जा सकते हैं। कहावतों और मुहावरों पर भी अंताक्षरी की जा सकती है। प्रसिद्ध कवियों जैसे सूरदास, तुलसीदास, रसखान, रहीम, बिहारी, मीराबाई, आदि पर भी अंताक्षरी कार्यक्रम किये जा सकते हैं और उन्हें दो संचालक मिलकर बखूबी संचालित कर सकते हैं।

यहाँ हम संक्षेप में प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का जिक्र अवश्य करना चाहेंगे। आजकल प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम भी आप काफी सुनते हैं और देखते हैं। इनका उद्देश्य ये है कि हम ताजा-तरीन घटनाओं से भी परिचित रहें और सभी विषयों पर प्रश्नोत्तरी के माध्यम से ज्ञान अर्जन भी कर सकते हैं। प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम से हमारा सामान्य ज्ञान बढ़ता है। इन कार्यक्रमों का संचालन भी एक बहुत बड़ी कला है। चाहे एक व्यक्ति करें, या दो व्यक्ति मिलकर करें किंतु इसमें कौशल की बहुत आवश्यकता है। प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम कई विषयों पर आयोजित हो सकते हैं। जैसे सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी, साहित्य प्रश्नोत्तरी, पर्यावरण से संबंधित प्रश्नोत्तरी, विज्ञान प्रश्नोत्तरी, खेल प्रश्नोत्तरी, कला से संबंधित प्रश्नोत्तरी आदि-आदि। ज़ाहिर है इनके संचालन के लिए हमें विशद ज्ञान की आवश्यकता है। हमें संबंधित विषय की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। फ़िर जब आप प्रश्न बनायें तो, उसमें भी कई बातों का ध्यान रखने की जरूरत है, आपको श्रोताओं की आयु और दिमाग के स्तर का ध्यान रखकर प्रश्न बनाना चाहिए। इसके साथ ही कुछ पूरक प्रश्न भी तैयार रखने चाहिए। प्रश्नों के सही उत्तर भी हमें मालूम होने चाहिए और उन्हें लिखकर अपने पास रख लेने चाहिए ताकि निर्णय करने में आसानी हो सके। प्रश्न की भाषा आसान और समझ में आने वाली रखें।

प्रश्नोत्तरी में बीच-बीच में अपनी और कोई भी ज्ञान की बात प्रश्नों से संबंधित करते चले, बहुत गेप नहीं आने दें। अगर प्रश्न और उत्तर के बीच में लंबा अंतराल आ रहा है तो उसे अपने शब्द संसार से भरते हुए चले। प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में एक बात का ध्यान रखें कि आपको एक स्कोर नोट करने वाला भी अपने साथ रखना है जो बीच में समय-समय पर दलों के अंक बताये, ताकि प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में रोचकता और उत्साह बना रहे। प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में इस बात पर भी हमें ध्यान देना है कि दलों के अतिरिक्त यदि श्रोता या दर्शक वर्ग साथ हैं तो उनकी भागीदारी भी बीच में अवश्य करायें ताकि वो अपने आपको इस कार्यक्रम से अलग न समझे।

हम आपको बता दें कि संचालन कौशल में आप एक व्यक्ति संचालन करें या दो मिलकर करें हमें केवल एक बात पर गोर करना है क़ि कार्यक्रम की सफलता हमारा ध्येय होना चाहिए आप अपने कौशल से, कला से, ज्ञान से, श्रोताओं और दर्शकों को बांधे रखें, उन्हें अपनी इल्म की डोर से बांधकर कार्यक्रम का संचालन करें तो ये ही आपकी उनके साथ भी कामियाब युगलबंदी सिद्ध होगी।

❖ ❖ ❖

देह की भाषा : संचालन की शैली

एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात की तरफ आपका ध्यान खींचना बेहद जरूरी है। ये तो सही है कि इस युग में अच्छे प्रवक्ताओं की बड़ी जरूरत है। ये वक्त आ गया है कि हम अच्छे वक्ता बने। अच्छे वक्ताओं को सुनें और अच्छे से अच्छे अंदाज को, सुंदर से सुंदर शैली को अपने संचालन की विधाओं में की भरपूर कोशिश करें। ये तो तय है कि कोई भी व्यक्ति जन्म से अच्छा बोलने वाला बनकर पैदा नहीं होता है। केवल अपने प्रयास, अपने अभ्यास और लगन से आप एक अच्छे एंकर बन सकते हैं। इसके लिए जरूरी है कि आप अपने अंदर एक साहस एक उत्साह, एक जोश पैदा करें। ये प्रयत्न आपको एक बेजोड़ और अद्‌भुत कलाकार, संयोजक, संचालक, सूत्रधार बना सकता है।

आपको इसके लिए एक अच्छे ज्ञाता या विषय विशेषज्ञ से परामर्श लेना चाहिए और साथ ही साथ नियमित प्रशिक्षण भी प्राप्त करना चाहिए। ऐसा करने से आपके अंदर एक अजीब सा आत्मविश्वास पैदा होगा जो आपको सफलता के द्वार तक लेकर जाएगा जहाँ यश, कीर्ति और संपत्ति आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। हमें ये नहीं भूलना चाहिए कि बोलने की ये अद्‌भुत प्रतिभा आज के युग में एक ऐसी कला का रूप ले चुकी है जिसकी सबको बड़ी आवश्यकता है।

कहने का मतलब ये है कि ये वक्त अब वक्ताओं का आ गया है। जिसे देखो बोल रहा है, बोलने की कोशिश करता है, बोलना चाहता है, बोलने के अवसर तलाश कर रहा है हमें तो रहीम खान का ये दोहा आज याद आ रहा है-

"पावस देखि, रहीम मन, कोयल साधी मौन
अब दादुर वक्ता गए, हमको पूछे कौन।"

यानी बोलने के इस बोलबाले में अच्छे व्यक्ति चुप हैं और जिन्हें बोलना नहीं आता वो बोल रहे हैं और हम बस ये कह रहे हैं-

बेसुरे संगीत में गाने लगे
मंच पर बहुरूपिये छाने लगे
क्या ज़माना आ गया है दोस्तो
ना समझ भी हमको समझाने लगे।

बहरहाल ये तय है कि बोलना सबको आता है। सब बोलना जानते हैं। सब बोल भी रहे हैं मगर फिर भी जिनकी ज़बान पर सरस्वती बैठी है वो तो अलग ही दिखाई देते हैं वो जब बोलते हैं तो लगता है जैसे सुरीली स्वर लहरी कानों में गूँज रही है।

ये तो हम मानते हैं कि शुरू-शुरू में जब आप मंच पर जाएंगे या माइक्रोफोन के सामने होंगे तो आपमें एक अजीब सी घबराहट होगी। आपके चेहरे पर पसीना दिखाई देगा, आपके पांव मंच पर खड़े-खड़े कांप रहे होगें और आपके जुबान से एक शब्द भी बाहर नहीं निकल रहा होगा। मगर इससे घबराने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा तो सबके साथ होता है। बड़े से बड़े कवि, कलाकार, फनकार, शायर, सूत्रधार, सभी की हालत ऐसे अवसरों पर अक्सर ऐसी ही होती है। शुरू-शुरू में जब मैं आकशवाणी में आया था, और बेहद दुबला पतला था। उस समय मैंने माइक पर बैठकर एक पहलवान का इंटरव्यू लिया था। मुझे आज भी याद है जब मैंने उस पहलवान से प्रश्न पूछा, तो वो घबरा गया, सांसें धौंकनी की तरह फूल गई और घबराहट में न जाने क्या अनापशनाप जवाब देने लगा। मेरी हंसते-हंसते बुरी हालत हो गई। फिर उन्हें पानी पिलवाया गया, खूब समझाया गया, मैंने कहा, पहलवान साहब आप अखाड़े के पहलवान हैं। मगर माइक पर तो मैं एक पहलवान देख रहा हूँ, जबकि वो एक मुक्का भी मेरे मार दें तो शायद मैं बेहोश हो जाता। मगर मैं उनकी घबराहट की जो निश्चित रूप से सभी में होती है आप में भी ये हो सकती है। इसलिए आपको इस बात की फिकर बिल्कुल नहीं करनी चाहिए कि पहली-पहली बार संचालन के लिए जाते समय आपमें एक घबराहट है। ये मेहनत और लगन ही आपको बहुत आगे लेकर जाती है और आप फिर मंच पर जाने की क्षमता अपने अंदर पैदा कर सकते हैं।

आपके शब्द ही तो आपके आभूषण हैं आपके रक्षा कवच हैं इन्हीं से आप सफलता की सीढ़ी पर चढ़ सकते हैं और अगर गलत कर दें तो इन्हीं से आपकी हालत भी खराब हो सकती है। इसीलिए तो कहा जाता है "कुछ भी बोलने से पहले एक आदमी आधा होता है, लेकिन जब वो बोलना शुरू करता है तो या तो वो आधे से अधिक हो जाता है या फिर आधे से भी कम रह जाता है।" आपकी वाणी ही आपको साधारण से असाधारण और सामान्य से अद्वितीय बना देती है। इसलिए वाणी का ध्यान रखें, वाणी पर संयम रखें। आपकी वाणी ही आपके व्यक्तित्व का दर्पण है वह आपके व्यक्तित्व को उभारती है और बिगाड़ती भी है।

अब आपको ये भी मालूम होना चाहिए कि आपकी वाणी के अलावा, आपके संचालन कौशल में एक बात और भी महत्त्वपूर्ण होती है। ये बात आपके शब्दों से, संयोजन से, संचालन से, शिल्प से सबसे अधिक मायने रखती है जब आप मंच पर किसी कार्यक्रम का संचालन कर रहे हों। आप मेरा इशारा समझ गए होंगे। मैं आपको देह भाषा या बॉडी लेंग्वेज की तरफ खींच रहा हूँ। क्योंकि जो शब्द आप बोलते हैं आपकी वाणी का प्रभाव जो आप दर्शकों पर डालते हैं उसमें आपकी देह भाषा का बड़ा योगदान होता है। आप जब बोलते हैं तो आपके शरीर के कई हिस्से इसमें क्रियाशील होते हैं। आपके हाव-भावों के साथ आपकी आंखें बात करती हैं, आपके हाथ भी अपनी मुद्राओं से प्रभाव पैदा करते हैं, आपके चेहरे की मधुर मुस्कान भी इसमें जबर्दस्त भूमिका अदा करती है। आपने देखा होगा जब अमिताभ बच्चन किसी प्रोग्राम में एंट्री लेते हैं तो उनकी चाल कितनी सधी हुई, चुस्ती से भरी हुई आंखों में ग़ज़ब का विश्वास और चेहरे पर एक जादुई मुस्कान, बस मेरे ख्याल से इतनी खूबियाँ बहुत होती हैं। बिना कुछ बोले हुए दर्शकों का दिल जीतने के लिए।

यानी बॉडी लेंग्वेज का संचालन की विधा में जो महत्त्वपूर्ण मुकाम है उससे इन्कार नहीं किया जा सकता है तो आइये कुछ नोट्स आपको हम भी दे दें ताकि आप अपनी देह भाषा से संचालन की शैली को और अधिक प्रभावी बना सकें।

सबसे पहले तो एक मधुर मुस्कान आपको अपने चेहरे पर रखनी है ताकि दर्शक भी आपको देखकर प्रसन्नता का अनुभव करें आपके मानसिक तनाव, घर के कलह, बच्चों की फिक्र से हमारे दर्शकों श्रोताओं का कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं है वे मनोरंजन चाहते हैं इसलिए मुस्कुराइये।

संचालक, एंकर या सूत्रधार को सदा अपने दर्शकों से आँखें मिलाकर बात करनी चाहिए। आँखें चुराने की आवश्यकता नहीं है। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो फिर आप उनसे आत्मीयता भी नहीं बना पायेंगे। आँखें मिलाएंगे तो वे आप पर गौर करेंगे और आपकी बात को उत्सुकता से सुनेंगे। ये तय है कि अगर आप श्रोताओं और दर्शकों को नहीं देखते हैं वे आपको क्यों देखेंगे? वे आपकी बात का नोटिस ही नहीं लेंगे।

बहुत से लोग बोलते समय एनकरिंग करते समय उंगलियों से, हथेलियों को रगड़ते रहते हैं कृपया ऐसा न करें। कुछ लोग बोलते समय अपने हाथों की रेखाएँ भी देखते रहते हैं यानी ध्यान श्रोताओं पर नहीं देते ऐसा नहीं करना चाहिए। बोलते-बोलते कुछ लोग अपने बटनों से, पेन से, सिक्कों से खेलने लगते हैं ये बड़ी ही

गलत बात है। बोलते समय टेबल या रोस्टम को बार-बार थपथपाना भी एक बुरी आदत है इससे बचना चाहिए। बार-बार माइक भी ठक-ठक बजाते रहना एक अच्छे संचालक की खुबी नहीं है। शरीर के किसी भी अंगकाय को बार-बार नहीं खुजलाना चाहिए इसका प्रभाव श्रोताओं पर उल्टा पड़ता है।

कुछ लोग बोलते समय अपनी आँखों को बंद कर लेते हैं बार-बार आँखों को झपकाते रहते हैं, चेहरे पर कई प्रकार की मुद्राएँ लाते रहते हैं। तनाव से अपने ललाट पर भृकुटियाँ ताने रहते हैं। ये सब बहुत ही बुरी आदत है इनसे बचने का प्रयास करना चाहिए।

इसलिए बोलते हुए अपने हाथों को सही मुद्रा में रखें। जब आप खड़े होकर संचालन कर रहे हों तो माइक को इस तरह रखें कि श्रोताओं को आपका चेहरा साफ-साफ दिखाई दे। कभी भी ऊंचे रोस्टम के पास खड़े होकर छोटे कद के व्यक्ति को नहीं बोलना चाहिए।

आजकल संचालन करते समय कुछ लोग उछलते हैं, कूदते हैं, कलाबाजियाँ खाते हैं, आसन करते हैं, ये गलत है। संचालन करते समय शब्दों का कमाल दिखाइये शरीर के करतब नहीं।

अब जरा पैरों पर भी ध्यान दीजिए। जब आप मंच पर खड़े होकर संचालन कर रहे हो तो हमें कुछ बातों पर गौर करना होगा। कुछ लोग एक पैर से दूसरे पर झूलते हैं ऐसा नहीं करे। पैरों को कभी भी क्रोस करके खड़ा नहीं होना चाहिए क्योंकि ये मुद्रा तनाव की निशानी है, इसलिए, इससे बचना चाहिए। कुछ लोग एंकरिंग करते-करते पैरों की उंगलियों या ऐड़ियों पर खड़े हो जाते हैं। कृपया आप ऐसा ना करें तो बेहतर होगा कुछ लोग संचालन करते समय एक पैर से कुछ करेदते रहते हैं, जो गलत है। बोलते समय बार-बार अपनी कमर को हिलाना भी संचालन विधा में एक दोषपूर्ण मुद्रा मानी जाती है इससे बचने का प्रयास करिए। बोलते समय इधर-उधर हिलना-डुलना या घूमना बिल्कुल नहीं चाहिए। एक जगह स्थिर रहकर शब्दों का कमाल बिखेरेंगे तो आप सफल सूत्रधारों की श्रेणी में समझे जायेंगे।

कहने का मतलब ये कि शब्दशिल्प के साथ आपको देह की भाषा भी आनी चाहिए अपने हाव-भाव और मुद्राओं से श्रोताओं का मन मोह लेने की क्षमता भी आपके अंदर होनी चाहिए।

इसके अलावा फिर याद दिला दें आपकी देह की भाषा और भी मुखरित

होगी यदि आप उस पर अपनी वेशभूषा, केश विन्यास पर भी विशेष ध्यान देंगे। अपने व्यक्तित्व के अनुसार कपड़े पहनकर उसी हिसाब से जूतों का चयन करके और सजसंवर कर जब आप मंच पर जायेंगे तो आपके शब्दशिल्प के साथ, आपकी सादगी, आपकी शालीनता और आपका गंभीर व्यक्तित्व अनेकों सफलताओं के द्वार आपके लिए खोल देगा। जहाँ आप प्रशस्ति, प्रतिष्ठा, सम्मान, यश, कीर्ति, संपत्ति और श्रद्धा के सिंहासन पर बैठकर इस शब्द संसार की सुंदरता का आनंद लेंगे और दूसरों को आनंदित करेंगे।

शब्दों का समंदर बोलता है

शब्दों का अद्भुत संसार ही इस दुनियां में सबसे बड़ा चमत्कार है। मेरा विश्वास है कि, जितनी खुशबू कोई भी फूल नहीं फैला सकता, उससे कई गुना सुगंध शब्द अपने प्रभाव से वातावरण में छोड़ते हैं। आप जब कभी किसी कार्यक्रम का संचालन करते हैं और जब आप किसी महान प्रतिभा को मंच पर आमंत्रित करते हैं तो, गले में हार डालने से भी पहले, स्वागत भाषण से भी पहले आपके शब्द ही उस प्रतिभा को यश और कीर्ति के सिंहासन पर आरूढ़ करते हैं। कहने का अर्थ ये कि शब्द ही किसी भी प्रतिभा को महिमा-मंडित करते हैं अगर आपके पास शब्दों का खूबसूरत भंडार नहीं हैं तो फिर आप उस महान फ़नकार, कलाकार या हस्ती के साथ न्याय नहीं कर सकते जिसे आपको बुलाकर मंच पर आसीन कराना है। आपके वाक् चातुर्य और शब्द कौशल के माध्यम से ही वो व्यक्ति सबसे विशेष दिखाई देगा, लोग अपनी आँखें फाड़कर उसकी तरफ निहारेंगे, उसके ऊपर से नजर नहीं हटाना चाहेंगे और मंच पर पहुँचते-पहुँचते वो कलाकार लोगों के मन के मंच पर विराज चुका होता है और फिर सभी के लिए वो आकर्षण का केंद्र बन जाता है, फिर उसके बोलने का इंतजार करेंगे सब, और जब वो कुछ कहेगा तो लोग शांत होकर मंत्र मुग्ध होकर सुनेंगे। यानी आपने अपने शब्दों के जरिए श्रोताओं दर्शकों के दिल में एक उत्सुकता जमाई, एक कौतुहल पैदा किया उनके मस्तिष्क में और ये ही सफल संचालक की प्रतिभा का प्रमाण है।

आपने अगर अपने शब्दों द्वारा कुछ विशेष नहीं किया तो फिर आप में और जो आपको सुन रहे हैं उनमें अंतर ही क्या रह जायेगा। तो फिर कोशिश करिए कि शब्दों के पुष्पों से आप एक सुरमित गंधमय वातावरण तैयार करें और अपने शब्दों को सफलता के शिखर पर पहुँचाने की एक शुरूआत करें। इसलिए हम आपको इस अध्याय में ये बताने की कोशिश करते हैं कि प्रत्येक क्षेत्र की विशेष प्रतिभाओं को मंच पर जब आप बुलाएं तो आरंभ इतना प्रभावशाली करें कि, श्रोता बस देखते रह जाएं। मान लीजिए, आपको लतामंगेशकर को मंच पर बुलाना है तो केवल एक सपाट अनांउसमेंट के साथ न बुलायें- आप कहें- "संगीत की जानी मानी कलाकार, लता मंगेशकर अब मंच पर पधार रही हैं" इसके बजाय आपको कहना चाहिए-

"खुद अपने आपमें सिमटी हुई सदी है ये,
इन्हें करीब से देखो, तो जिन्दगी है ये।"

"हम भाग्यशाली हैं कि हमने इस युग में स्वर की कोकिला लता मंगेशकर के साथ जन्म लिया है-जिस तरह गंगा एक है, चन्द्रमा एक है, सूरज एक है संगीत के इस आकाश में लता मंगेशकर भी एक है। इन्हें साक्षात् सरस्वती का अवतार भी कहें तो कोई गलत नहीं होगा। संगीत के सात सुरों का जादू इनके सुरीले कंठ में रहता है। इनकी स्वर लहरियों में भारत की आत्मा सुनाई देती है, आइये इसी महान फनकार को आवाज़ दें कि वो मंच पर आए संगीत की सरिता में हम सबको डुबो दें, आप सभी की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच, आ रही हैं इस सदी की महान फनकार, आने वाले युग की संगीत देवी, लता मंगेशकर"।

वरन् इसी तरह आपको सभी प्रतिभाओं को मंच पर बुलाना चाहिए, ताकि उन्हें भी अहसास हो कि वे वाकई इस संसार में अपनी एक अलग शखसियत रखते हैं और जनता को भी उनकी प्रतिभा का आभास हो और उन्हें वे दत्त चित्त होकर सुनें। ये ही सफल सूत्रधार की पहचान है। मैंने अनेकों संगीत कार्यक्रमों का संचालन किया है और सभी कलाकारों को इसी तरह बुलाकर जनसाधारण के बीच बुलाकर मंच पर आसीन किया है। ग़ज़ल और शास्त्रीय संगीत के बेहतरीन कलाकार उस्ताद मोइनुद्दीन खान ने मेरे लिए कहा था। "इकराम भाई, स्टेज पर जाने से पहले ही उस फनकार की तकदीर बना देते हैं जिसे वो आवाज़ लगाते हैं।"

अब आप समझ गए होंगे कि आपके बोलने पर ही कलाकार की सफलता और असफलता निर्भर करती है इसलिए फिर आपको बता रहा हूँ कि बोलने से पहले सोच लें। उस कार्यक्रम और कलाकरों का मुकद्दर आपके हाथों में है। ये तो आप जानते ही हैं कि कमान से निकला हुआ तीर और ज़बान से निकले अल्फ़ाज़ फिर कभी वापस नहीं आ सकते हैं।

हमारा बोलना ही हमारी सबसे बड़ी दौलत है ये सबसे बड़ा वरदान है, वो इनमें जो कुदरत ने सिर्फ हमें दिया है इसलिए हमें इंसान होने पर अभिमान और बोलने की ताकत पर नाज़ होना चाहिए। आप में एक खूबी और पैदा हो सकती है और वो है एक एंकर, सूत्रधार या कंपियर बनने की। लोग आपको इसलिए सुनना पसंद करते हैं कि वो आपको अपने आपसे अलग एक विशेष वक्ता के रूप में देखते हैं और आपसे कुछ ज्ञान भी प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। तो फिर ये आपका भी कर्त्तव्य बन जाता है कि आप उनकी आशाओं पर खरे उतरें ओर अपने शब्द संसार से उन्हें विचरण करायें।

एक बात आपको यहाँ पर बताने की और आवश्यकता महसूस करता हूँ। जब आप बोलें तो उसमें कुछ सार्थकता अवश्य होनी चाहिए। बिना बात अगर आप बोलते चले जाएंगे तो लोग आपकी बात को सुनना ही पसंद नहीं करेंगे। इसलिए कोशिश करें कि जब आप किसी कार्यक्रम का संचालन कर रहे हों तो उसी विषय या शीर्ष के आस-पास रहने का प्रयास करिए। अगर उससे भटक जाएंगे तो फिर श्रोताओं की आँखों में आप खटक जाएंगे और फिर तो बात-बात पर आपको उखाड़ फैंकने की कोशिश करेंगे। इसलिए जो भी बोले, जितना बोलें, जब भीं बोले सार्थक बोले। निरर्थक बकवास आपके संचालन को दो मिनट में ही बिगाड़कर रख देगी। आप समझ रहे हैं न मैं आपको क्या समझा रहा हूँ।

'समझ समझ के, समझ के समझो
समझ, समझना भी इक समझ है,
समझ समझ के भी जो न समझे
मेरी समझ में नासमझ हैं'

इसलिए समझदारी इसी में है कि आप जो भी कहें उसे आपके श्रोता दर्शक समझ लें। आप जान गए होंगे कि एनकरिंग करना कोई मामूली काम नहीं है मगर यदि आपने हमारे बताए हुए नुस्खे काम में ले लिए तो फिर आकाशवाणी, दूरदर्शन मंच सब कुछ आपके कब्जे में होंगे और आप इन माध्यमों में रखेंगे एक स्टार की हैसियत। चलिए अब आपको एक बार फिर संक्षेप में बता दें कि ANCHOR शब्द जो है वो क्या है और किस प्रकार इसका एक एक अक्षर आपको एक कामियाब संचालक बना सकता है वैसे तो ANCHOR का मतलब है 'बेड़ा, लंगर' यानी पूरे जहाज़ को जो बेड़ा अपने काबू में रखता है उसकी क्षमता पर कोई संदेह नहीं हो सकता। पूरा जहाज़ जो अपने शिकंजे में जकड़े रहता है। ठीक उसी प्रकार ANCHOR कार्यक्रम रूपी जहाज़ को अपनी कला, कौशल और शब्दों के प्रभावशाली बेड़े से जकड़कर रखता है। वो उसे जरा सी देर को भी इधर-उधर नहीं होने देता है। ANCHOR का प्रत्येक अक्षर उसकी खूबियों का बखान करता है।

सबसे पहला अक्षर है A इससे बनता है Able, Artist यानी एक एंकर को योग्य होना चाहिए और उसे एक बेहतरीन कलाकार होना चाहिए। योग्यता से तात्पर्य है एक पढ़ा लिखा ज्ञानी व्यक्ति होना चाहिए और उसमें ज्ञान को ग्रहण करने की भी अपार क्षमता होनी चाहिए। कलाकार से मतलब ये कि उसे संगीत का, नाटक का, मंच का, कलाकार भी होना चाहिए तो फिर वो एक सफल एंकर हो सकता है।

दूसरा अक्षर है N इससे बनता है Novel और Natural, अर्थात एंकर में एक नयापन होना चाहिए उसे हमेशा कुछ न कुछ नया कहने, नया करने का प्रयास करना चाहिए। इसके अतिरिक्त एंकर की ये विशेषता भी है कि उसे Natural होना चाहिए। उससे शब्दों में या बोलने में अपनी आवाज़ में किसी प्रकार की मिलावट या बनावट नहीं करनी चाहिए सबकुछ अपने ही अंदाज में कहना चाहिए। हाँ, ये बात और है कि आप अपने ही बोलने या शब्दों के अंदाज में हमेशा निखार लाने का प्रयास करते रहें।

अगला अक्षर है C इससे बनता है Curious अर्थात जिज्ञासु, आपको हमेशा कुछ न कुछ नया जानने की जिज्ञासा रखनी चाहिए ये नहीं समझना चाहिए कि जो कुछ आप कह रहे हैं बस वो ही संपूर्ण है इस संसार में हर व्यक्ति के पास कोई न कोई ज्ञान अवश्य होता है, आपको उसे सीखने की कोशिश करते रहना चाहिए। किसी भी व्यक्ति से कुछ भी नई बात पूछने में किसी भी प्रकार की हिचक या झिझक आपके अंदर नहीं होनी चाहिए अगर ऐसा होगा तो फिर आपका ज्ञान सीमित रह जायेगा आप नया कुछ नहीं सीख सकेंगे।

आइये इससे आगे के अक्षर पर विचार करें आगे आता है H इसका तात्पर्य है HARMONIOUS अर्थात संगीतमय। आपके दिल दिमाग में हमेशा संगीत का सुरीला माहौल रहना चाहिए ताकि आप अपने आपको हमेशा ही तरो ताज़ा रख सकें। मैंने पूर्व में भी जिक्र किया है कि एक कंपियर या एंकर के लिए संगीत का ज्ञान कितना आवश्यक है। चूंकि संगीत का सीधा संबंध गले से होता है। एंकर भी अपने गले और आवाज़ के इस्तेमाल से ही अपनी प्रतिभा स्थापित करता है।

इसके पश्चात् हम आते हैं O पर। इससे बनता है Original अर्थात मौलिक। आप समझ रहे हैं इसका आशय है। इसका मतलब है कंपियर को अपनी मौलिकता बनाए रखना चाहिए। मेरा मतलब है किसी भी व्यक्ति की आपको नकल नहीं करना चाहिए अगर आप नकल करने लगेंगे तो फिर आपमें और एक मिमिक्री कलाकार में क्या फर्क रह जाएगा? तो बस किसी भी सूरत में अपनी मौलिकता को नष्ट मत होने दीजिए। बल्कि उसी में हमेशा प्रयास करके चार चांद लगाते रहिए। अगर आप किसी बड़े फनकार की कोपी करेगें तो उस मौलिक कलाकार के मुकाबले में लोग आपको क्यों बुलाएंगे। इसलिए मेरी राय है कि आप हमेशा मौलिक शब्दों को अपनी मौलिक आवाज़ में पेश करें तो आप लोंगो को अधिक प्रभावित कर सकेंगे और अपनी पहचान भी इस क्षेत्र में एक मौलिक एंकर के रूप में बनायेंगे जो आगे जाकर आपकी प्रतिभा को पूरे राष्ट्र के वातावरण में एक

नया अंदाज प्रदान करेगी। और Anchor शब्द का अंतिम अक्षर है R जिससे बनता है Rythemic अर्थात एक कंपियर को तालमय होना चाहिए। जिस तरह संगीत में सुर ताल साथ चलते हैं आपको भी शब्दों का तालमेल आना चाहिए। कहते हैं संगीत में ताल इस तरह साथ चलती है जैसे दिन का हसीन दामन थाम कर रात चलती है। ठीक उसी प्रकार एंकर को भी ताल का पूरा ज्ञान होना चाहिए संगीत की ताल का न सही, शब्दों की ताल का, आभास उसे अवश्य होना चाहिए।

अगर Anchor शब्द के प्रत्येक अक्षर की खूबी को हम अपने जीवन में डाल लें तो फिर आप साक्षात रूप में एक शब्द शिल्पी बन सकते हैं और ये सारा संसार आपको और आपके शब्दों का दीवाना हो सकता है। तो फिर बनकर दिखाइये साक्षात् Anchor और शब्दों की गरिमा के सम्मान और सत्कार के शिखर तक पहुँचाइये। फिर आपको देखकर सब कहेंगे-

ये कोई एक अक्षर बोलता है
या शब्दों का समंदर बोलता है।

अच्छे वक्ता बनिए : जीवन में सफलता प्राप्त करिये

- ❑ शब्द-ब्रह्म है - इसे पहचानिये
- ❑ संसार में केवल शब्दों की सत्ता वर्षों से चल रही है।
- ❑ जिसने शब्दों क़ी साधना कर ली, समझिए पूरी दूनियां पर विजय हासिल कर ली।
- ❑ बोलना सबको आता है पर कितने लोग हैं जो 'अच्छे वक्ता' हैं।
- ❑ वही सफल है जिसके पास शब्दों का समृद्ध संसार है।
- ❑ संचालन की विधा, दुनियां को आश्चर्य चकित करने की कला है।
- ❑ शब्दों का जादू इंसान के सिर पर चढ़कर बोलता है।
- ❑ वाक्शक्ति - सफलता की कुंजी है।
- ❑ शब्द आपके व्यक्तित्व का परिचय देते हैं।
- ❑ प्रत्येक व्यवसाय में शब्दों का साम्राज्य है।
- ❑ बोलना भी एक कला है, सबको नहीं आती।
- ❑ आपके बोलने का अंदाज़, आपकी कामियाबी का राज़ है।
- ❑ जो बोलना जानते हैं, उन्हें संसार में सब जानते हैं, मानते हैं, पहचानते हैं।
- ❑ शब्द आपके पास हैं तो बन सकते हैं आप भी एक कुशल शब्द शिल्पी।
- ❑ शब्द अमर है - शाश्वत है, सत्य है।
- ❑ शब्दों का कौशल आपको सफलता के शिखर पर पहुँचाता है।
- ❑ जिसे शब्दों का संयोजन और संचालन आता है वह संसार का सफलतम व्यक्ति हो सकता है।

❖❖❖

अंदाज़े बयां इकराम का : नज़रिया इनका

इकराम साहेब 'रियल' बोलने वालों में हैं हम तो फिल्मी लिखे हुए फिल्मी डायलॉग बोलते हैं।

सुनील दत्त
सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता

इनका संचालन देखकर मैं बेहद प्रभावित हूँ वास्तव में अल्फ़ाज की अदायगी ऐसी होती है।

शबाना आजमी
सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री

फिल्मी लोगों को बहुत सुना है, मगर फिल्म के कार्यक्रम को इतनी अल्मी खूबी के साथ पेश करना इकराम राजस्थानी के बस की ही बात है।

महेंद्र कपूर
सुप्रसिद्ध पार्श्व गायक

ऐसा मन करता है, कुछ देर बस इकराम भाई को सुनता रहूँ, कितना सुकून है इनके शब्दों में।

अनूप जलोटा
सुप्रसिद्ध गायक

रेडियो में बोलना क्या है, ये इकराम राजस्थानी को सुनकर महसूस हुआ, वरना हम तो जो बोलते हैं वो बस लिखकर बोलते हैं।

अमीन सयानी
सुप्रसिद्ध रेडियो प्रस्तोता

इकराम के साथ कमैंट्री की है, मुझे लगता है शब्दों का सागर उनके यहाँ लहराता रहता है।

वीर सक्सेना
सुप्रसिद्ध कमैंटेटर, संपादक-इवनिंग पोस्ट

एक ब्रॉडकास्टर और प्रोग्राम प्रजेंटर के रूप में इकराम राजस्थानी सम्प व्यक्तित्व हैं। आकाशवाणी के लिए ये एक गौरव की बात है कि ऐसे सिद्धहस्त शब्द शिल्पी इस संस्थान से जुड़े हुए हैं।

गोविन्द वर्मा
केन्द्र निदेशक-आकाशवाणी, जयपुर

बारह साल तक लगातार महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन के वार्षिक कार्यक्रम का संचालन करना स्वयं में इतिहास है इकराम राजस्थानी के शब्दों में अलौकिक शक्ति है।

अरविन्द सिंह मेवाड़
महाराणा-मेवाड़, उदयपुर

इकराम जी की शब्द संरचना प्रभावशाली है वे एक वाणी पुत्र हैं- और शब्द कौशल, उन्हें ईश्वरीय देन है।

डॉ. मनोहर प्रभाकर
सुप्रसिद्ध लेखक साहित्यकार

शब्दों की सामर्थ्य और शक्ति को हर प्रभावशाली ढंग से इकराम जी अपने कार्यक्रमों में इस्तेमाल करते हैं।

ममता कालिया
सुप्रसिद्ध कथाकार

इकराम जी जितना बोलते हैं, अच्छा बोलते हैं लगता है वे शब्दों का एक चलता-फिरता केन्द्र हैं।

डॉ. अमरसिंह राठौर
निदेशक-जनसंपर्क विभाग

इकराम जी मेरे दोस्त हैं, उनके बारे में 'क्या कहना'। बस इतना कह सकता हूं कि उनका 'क्या कहना'।

यशवंत व्यास
संपादक-दैनिक भास्कर-जयपुर

इकराम राजस्थानी-शब्द शिल्प की एक जीवंत किंवदन्ती हैं। उन्हें सुनकर नई पीढ़ी संचालन विधा को समझेगी।

ड्रॉ. मोहम्मद रफ़ी
जनसंपर्क अधिकारी-रोड़वेज-जयपुर

❖ ❖ ❖